दैनिक पुष्पांजली टुडे

MPHIN/2021/83938

नई सोच नई पहल

ग्वालियरः वर्षः 3 : अंकः 134 | ग्वालियर,24 जनवरी बुधवार 2024 | पृष्ठः 8 मूल्यः 2 रुपए

एक नजर

बदमाशों की ताबड़तोड़ फायरिंग, 5 लोगों को लगी गोली,

अखिलेश यादव बोले- लगता है एक गोली जौनपुर में बदमाशों ने कानून व्यवस्था को चुनौती देते हुए बड़ी वारदात को अंजाम दिया है. बदमाशों ने सोमवार को घर में घुसकर ताबड़तोड़ फायरिंग की जिनमें पांच लोगों को गोली लगी है. जिन्हें इलाज के लिए गंभीर हालत में जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है. जहां सभी का इलाज किया जा रहा है. वहीं अब इस उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने प्रदेश की कानून व्यवस्था को लेकर योगी सरकार पर सवाल खड़े किए हैं. सपा नेता अखिलेश यादव ने ट्वीट करते हुए लिखा कि जौनपुर में सरेआम 5 लोगों को गोली मारने की वारदात दिखा रही है कि आज जबकि उप्र सबसे चाकचौबंद सुरक्षा व्यवस्था के घेरे में है तब अपराधियों के हौसले इतने बुलंद हैं तो सोचिए बाकी दिनों में उत्तर प्रदेश का क्या हाल होता होगा. लगता है एक गोली भाजपा सरकार के 'अपराध के ख़िलाफ़ ज़ीरो टॉलरेंस' के दावे को भी मारी गयी है.

बदमाशों ने घर में घुसकर किया हमला –जौनपुर के सरपतहां थाना अंतर्गत सेखई गांव में बड़ी संख्या में पहुंचे दबंगों ने एक घर पर हमला कर दिया. लाठी डंडा से पिटाई के बाद कई राउंड फायरिंग की. इसमें एक परिवार के लोग घायल हो गए. सभी को उपचार के लिए राजकीय पुरुष अस्पताल लाया गया. यहां दो की हालत नाजुक देख चिकित्सकों ने जिला अस्पताल रेफर कर दिया.

जिला अस्पताल में कराया भर्ती –सरपतहां थाना क्षेत्र स्थित सेखाई गांव में निवासी राम मिलन यादव के मकान के पास रविवार रात पड़ोस के कुछ लोगों से किसी बात को लेकर विवाद हो गया. इसमें राम मिलन का पुत्र नंद किशोर बीच-बचाव करने पहुंचा था. मामला नहीं सुलझने पर नंदकिशोर ने घटना की सूचना पुलिस को दी. इसी बात से नाराज एक पक्ष के लगभग 15 की संख्या में दबंग युवकों ने सोमवार की सुबह राम मिलन यादव के घर पर लाठी डंडा और असलहा के साथ पहुंचकर हमला कर दिया. लाठी डंडा से पीटने के बाद ताबड़तोड़ कई राउंड फायरिंग की. इसमें राम मिलन यादव सहित परिवार के 6 लोग घायल हो गए. सभी घायलों को उपचार के लिए राजकीय पुरुष अस्पताल शाहगंज लाया गया. यहां राम मिलन और नंदकिशोर की हालत गंभीर देख चिकित्सकों ने प्राथमिक उपचार के बाद जिला अस्पताल रेफर कर दिया.

घटना स्थल पर भारी पुलिस बल तैनात –घटना के बाद पुलिस फोर्स मौके पर पहुंच गई. सरपतहां थाना व शाहगंज कोतवाली पुलिस मामले की जांच में जुटी रही. क्षेत्राधिकारी हेमंत कुमार मौके पर पहुंचकर मामले की जानकारी ली. घटना के बाद गांव में पुलिस तैनात की गई है. वहीं घटना में सीओ शाहगंज हेमंत कुमार ने बताया कि मारपीट में एक पक्ष ने दूसरे पक्ष पर हमले किए गए जिसमें 6 घायल हुए हैं. इसमें दो के पैर में छर्रे लगे हैं जिन्हें जिला अस्पताल इलाज के लिए भेजा गया है.

अयोध्या एयरपोर्ट पर लैंड हुए 100 चार्टर्ड प्लेन, अमिताभ बच्चन से सचिन तेंदुलकर तक इन्हें मिली जगह

अयोध्या में भव्य राम मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा समारोह में शामिल होने के लिए सोमवार को देश भर से विशिष्ट अतिथियों के आगमन से नवनिर्मित हवाई अड्डे पर लगभग 100 चार्टर्ड उड़ानें संचालित की गईं. इस समारोह के लिए आमंत्रित लोगों की सूची में 7,000 से अधिक मेहमान शामिल थे.प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अगुवाई में अयोध्या के भव्य मंदिर में राम लला की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा की गई. इस अवसर पर विभिन्न क्षेत्रों से जुड़ी सैकड़ों विशिष्ट हस्तियां पहुंचीं. चार्टर्ड विमानों के परिचालक संघ बीएओए के अध्यक्ष कैप्टन आर के बाली ने बताया कि सोमवार को अयोध्या जाने के लिए करीब 100 चार्टर्ड उड़ानें बुक की गई थीं. इनमें से करीब 50 उड़ानें बिजनेस श्रेणी वाले विमानों की थीं.50 बिजनेस **क्लास के थे प्लेन**–एक निजी विमान परिचालक कंपनी के अधिकारी ने भी कहा कि प्राण प्रतिष्ठा समारोह के दिन अयोध्या स्थित महर्षि वाल्मीकि अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर करीब 100 उड़ानें संचालित हुईं. इससे पहले हवाई अड्डे के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा था कि भव्य राम मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा समारोह में शामिल होने के लिए सैकड़ों विशिष्ट अतिथियों के आने से उड़ानों के उतरने एवं रवानगी की संख्या लगभग 100 तक पहुंचने की उम्मीद है

पीएम मोदी ने रामलला की प्राण प्रतिष्ठा को लेकर उपवास किया भी है या नहीं, ऐसे में.. कांग्रेस नेता वीरप्पा मोइली ने उठाए सवाल

रामलला की प्राण प्रतिष्ठा को लेकर किए गए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के उपवास पर कांग्रेस नेता और पूर्व केंद्रीय मंत्री वीरप्पा मोइली ने मंगलवार (23 जनवरी) को सवाल उठाए. उन्होंने कहा कि कि मुझे पीएम मोदी के उपवास रखे जाने पर शक है. वीरप्पा मोइली ने कहा, मुझे संदेह है कि क्या उन्होंने (पीएम मोदी) ने उपवास किया भी है या नहीं. ऐसे में यदि उन्होंने उपवास किए बिना गर्भगृह में प्रवेश किया है तो वह स्थान अपवित्र हो जाता है. इस कारण स्थान से शक्ति उत्पन्न नहीं हो पाती.दरअसल, पीएम मोदी ने 11 दिनों तक कठिन अनुष्ठान किया था.

अनुष्ठान में पीएम मोदी ने क्या किया–पीएम मोदी ने रामलला की प्राण प्रतिष्ठा से पहले 11 दिनों तक

कठिन अनुष्ठान किए थे. न्यूज एजेंसी पीटीआई ने सूत्रों के हवाले से बताया था कि वो इस दौरान नारियल का पानी और फल खाकर ही रहे. इसके अलावा पीएम मोदी फर्श पर सोए और गाय की पूजा की. पीएम मोदी गर्भगृह में रहे थे मौजूद-सोमवार (22 जनवरी) को राम मंदिर के गर्भगृह में पीएम मोदी ने उत्तर प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के प्रमुख मोहन भागवत की उपस्थिति में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा'से संबंधित अनुष्ठान किए. इसके बाद पीएम मोदी ने इस अवसर को एक नए युग के आगमन का प्रतीक करार देते हुए लोगों से मंदिर निर्माण से आगे बढ़कर अगले 1,000 वर्षों के मजबूत, भव्य और दिव्य भारत की नींव बनाने का आह्वान किया.अयोध्या में सोमवार को रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर पूरे देश में धार्मिक उत्सव और उल्लास का माहौल देखने को मिला. इस दौरान देश के विभिन्न मंदिरों में श्रद्धालु भगवान राम को समर्पित गीत और विशेष भजन गाते सुने गये.बता दें कि कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी और अधीर रंजन चौधरी ने रामलला की प्राण प्रतिष्ठा समारोह के निमंत्रण को ठुकरा दिया था. इसको लेकर पार्टी ने बयान जारी कर कहा था कि ये सब बीजेपी चुनावी फायदे के लिए कर रही है.

घर में खाना बनाते समय गैस सिलेंडर में धमाका, मलबे में दबे परिवार के 4 लोग

कानपुर में घरेलू गैस के जोरदार धमाके से कानपुर का बजरिया थाना क्षेत्र के कंघी मोहल्ला में हड़कंप मच गया. तीन मंजिला इमारत की छत पर खाना बनाते समय जोरदार धमाके से घर की छत मलबे तब्दील हुई. वहीं घर के चार सदस्य मलबे में दब गए, जिसके बाद चीख-पुकार मच गई.कानपुर के बजरिया थाना क्षेत्र में कंघी मोहाल मोहल्ले में अचानक खाना बनाते हुए इरशाद के घर में जोरदार धमाका हो गया. इस दौरान तीसरी मंजिल पर बने भवन की छत उड़ गई और मलबे में घर के 4 लोग दब गए, जिसमें एक महिला समेत एक नाबालिग बच्ची भी शामिल है. क्षेत्रीय लोगों की मानें तो धमका इतना जोरदार था कि पूरे इलाके में हड़कप मच गया और लोग दहशत में आ गए.इस धमाके की गूंज से इलाके में सनसनी फैल गई और आनन-फानन में मोहल्ले के लोग आवाज सुनकर इरशाद अहमद की बिल्डिंग के पास पहुंचे. वहीं लोगों ने पुलिस को सूचना देकर मलबे में दबे घायलों को निकलने लगी. वहीं मौके पर पहुंची फायर ब्रिगेड के कर्मियों संग पुलिस और क्षेत्रीय जनता ने मकान में चढ़कर मलबे में दबे सभी घायलों को बाहर निकाला और पुलिस ने एंबुलेंस की सहायता से उन्हें कानपुर हैलेट हॉस्पिटल पहुंचाया जहां उनका उपचार चल रहा है.

फिर मुर्दे क्यों नहीं चल सकते..., प्राण प्रतिष्ठा को लेकर स्वामी प्रसाद मौर्य का विवादित बयान

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव स्वामी प्रसाद मौर्य अपने विवादित बयानों को लेकर अक्सर सुर्खियों में रहते हैं. आज उन्होंने एक बार फिर अयोध्या में हुए भगवान राम की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा को लेकर एक विवादित बयान दिया है. उन्होंने कहा कि पत्थर में प्राण प्रतिष्ठा करने से वह सजीव हो सकता है तो फिर मुर्दे क्यों नहीं चल सकते. यह बयान उन्होंने मंच से बोलते हुए कर्पूरी ठाकुर के जन्मशताब्दी कार्यक्रम की पूर्व संध्या पर आयोजित कार्यक्रम में कहा.सपा नेता स्वामी प्रसाद मौर्य ने यह भी कहा कि देश में बेरोजगारी पर चर्चा ना हो इसलिए ऐसे ड्रामे का उपयोग किया जा रहा है. राष्ट्रपति ने भी इस कार्यक्रम से दूरी बनाई क्योंकि उनको भी दिल्ली में हुए अपने अपमान की याद थी. उन्होंने कहा कि भगवान राम तो हजारों साल से पूजे जा रहे हैं और जिसकी पूजा हजारों साल से करोड़ों लोग कर रहे हैं तो उसके अंदर प्राण प्रतिष्ठा करने की जरूरत क्या है. आज सत्ता में बैठे हुए लोग अपने पाप को छुपाने के लिए इस तरह के ड्रामा का सहारा ले रहे हैं.सपा नेता ने कहा कि यह लोग प्राण प्रतिष्ठा कर अपने को भगवान से बड़ा साबित करना चाह रहे हैं. इन लोगों को समझाना पड़ेगा, आज बेरोजगारी पर चर्चा ना हो इसलिए इस तरह के ड्रामा का सहारा लिया जा रहा है. वाकई में अगर यह धार्मिक अनुष्ठान होता तो इसमें चारों शंकराचार्य होते और देश के राष्ट्रपति आमंत्रित होने के बाद भी यहां नहीं आई. इसलिए क्योंकि वह पूर्व में हुए अपने अपमान का घूंट भूल नहीं पाई है. स्वामी प्रसाद मौर्य ने कहा कि यह कार्यक्रम सिर्फ भारतीय जनता पार्टी का बनकर रह गया. क्योंकि पूरे कार्यक्रम में विश्व हिंदू परिषद, भारतीय जनता पार्टी और आरएसएस के लोग ही कर रहे थे. गाजीपुर के लंका मैदान में जननायक कर्पूरी ठाकुर के जन्म शताब्दी की पूर्व संध्या पर एक कार्यक्रम का आयोजन समाजवादी पार्टी के द्वारा किया गया था. जिसके मुख्य अतिथि स्वामी प्रसाद मौर्य रहे और उन्होंने मंच से बोलते हुए एक दिन पूर्व अयोध्या में हुए भगवान राम की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा पर सवाल उठाते हुए कहा कि अगर प्राण प्रतिष्ठा कर देने से पत्थर संजीव हो सकता है तो फिर मुर्दे क्यों नहीं चल सकते. उन्होंने कहा कि यह सब पाखंड ?ोंग और आडंबर है. वैसे भी जो खुद भगवान है जो सबका कल्याण करता है उसका इंसान की क्या हैसियत की उसमें प्राण प्रतिष्ठा कर सके.

राहुल गांधी के करीबी हिमंत बिस्वा सरमा कैसे बन गए कांग्रेस के सबसे बड़े दुश्मन?

राहुल गांधी के नेतृत्व वाली कांग्रेस की भारत जोड़ो न्याय यात्रा इस वक्त असम में है. कांग्रेस पार्टी यात्रा को गुवाहाटी के अंदर से गुजारना चाहती है, लेकिन असम सरकार से अनुमति नहीं मिल रही है. इस कारण कांग्रेस कार्यकर्ताओं और असम पुलिस के बीच झड़प भी हुई.अब असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने डीजीपी को राहुल गांधी के खिलाफ केस दर्ज करने का निर्देश दिया है. इसपर राहुल गांधी ने कहा कि असम के सीएम जो कर रहे हैं उससे यात्रा को ही फायदा मिल रहा है. हमारा प्रचार हो रहा है. एक समय राहुल गांधी की टीम में शामिल हिमंत बिस्वा सरमा आज कांग्रेस के सबसे बड़े दुश्मन बन गए हैं. राहुल गांधी और कांग्रेस ने असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा को देश का सबसे भ्रष्ट मुख्यमंत्री बताया है. सोशल मीडिया पर हिमंत बिस्वा लगातार कांग्रेस के निशाने पर हैं.

कांग्रेस और हिमंत बिस्वा के बीच विवाद कोई नया नहीं–असम में भारत जोड़ो न्याय यात्रा के दौरान जनता को संबोधित करते हुए राहुल गांधी ने कहा, हिंदुस्तान का सबसे भ्रष्ट मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा हैं. जवाब में हिमंत बिस्वा ने कहा, देश का सबसे भ्रष्ट परिवार गांधी परिवार है. बोफोर्स से लेकर भोपाल गैस कांड

में एंडरसन को भगाने तकज सबसे भ्रष्ट परिवार गांधी परिवार ही हैहिमंत बिस्वा यहीं नहीं रुके उन्होंने गांधी परिवार पर ये तक कह दिया, उनका सरनेम गांधी है ही नहीं. ये डुप्लीकेट नाम लेकर घूम रहे हैं. डुप्लीकेट लाइसेंस होता तो मैं पकड़ लेता, लेकिन डुप्लीकेट नाम रखने का क्या परिणाम होता है मैं नहीं जानता. इसलिए ये लोग घूम रहे हैं.कांग्रेस और हिमंत बिस्वा के बीच विवाद कोई नया नहीं है. साल 2016 से बीजेपी में शामिल होने के बाद से दोनों एक दूसरे पर खुलकर जुबानी हमला बोलते रहे हैं. हाल ही में भारत जोड़ो न्याय यात्रा के असम पहुंचते ही विवाद एक बार फिर सुर्खियों में आ गया. हिमंत बिस्वा ने भारत जोड़ो न्याय यात्रा को मियां यात्रा बता दिया.

हिमंता बिस्वा ने चुनाव बाद गिरफ्तार करने की दी धमकी –असम में राहुल गांधी की भारत जोड़ो न्याय यात्रा के खिलाफ केस भी दर्ज हुआ है. आरोप है कि यात्रा पहले से तय रूट की बजाय दूसरे रूट से निकाली गई. इसलिए भारत जोड़ो न्याय यात्रा के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई है.

यात्रा के मुख्य आयोजक केबी बायजू के खिलाफ भी केस दर्ज हुआ है. एफआईआर में ये भी लिखा गया है कि यात्रा ने जिला प्रशासन के नियमों का पालन नहीं किया और सड़क सुरक्षा नियमों का भी उल्लंघन किया है.दरअसल, राहुल गांधी असम की राजधानी गुवाहाटी के अंदर से अपनी यात्रा निकालना चाहते थे, लेकिन उन्हें अनुमति नहीं दी गई.असम मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने एक दिन पहले कहा था, %शहर के अंदर से यात्रा की परमिशन नहीं मिलेगी, क्योंकि मेडिकल कॉलेज है, नर्सिंग होम है. शहर के बाहर से किसी भी दूसरे रास्ते पर अनुमति मिल जाएगी.उन्होंने कहा था,अगर बिना इजाजत शहर के अंदर से ही यात्रा निकाली गई तो पुलिस सुरक्षा नहीं मिलेगी और केस भी दर्ज कर लिया जाएगा. दो-तीन महीने बाद होने वाले लोकसभा चुनाव के बाद अरेस्ट कर लिया जाएगा.

अयोध्या में रामलला के दर्शन के लिए उमड़े लोग, आस्था के सैलाब के आगे प्रशासन फेल, हांथ-पांव फूले

23 जनवरी से आम जनता के लिए प्रभु श्री राम का दर्शन शुरू हो गया है. प्रभु श्री राम अब अपने नए और भव्य मंदिर में विराजमान हो चुके हैं. प्रभु के दर्शन के लिए भक्तों की भीड़ विश्व के अलग-अलग कोनों से अयोध्या पहुंच रही है. लाखों की संख्या में पहुंची इस भक्तों की भीड़ से प्रशासनिक व्यवस्थाएं धाराशायी हो गईं. सुबह 7:00 बजे से मंदिर के पट आम जनता के लिए खुले हैं लेकिन भक्तों का तांता देर रात से ही लगना शुरू हो गया था और सुबह होते-होते लाखों की संख्या में राम भक्त प्रभु श्री राम के दर्शन के लिए भक्ति पथ पर खड़े हैं.30 दिसंबर को अयोध्या में हुए महर्षि वाल्मीकि अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट के लोकार्पण कार्यक्रम के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राम भक्तों से अयोध्या 22 जनवरी के बाद आने की अपील की थी . प्रधानमंत्री मोदी ने कहा था कि 22 जनवरी तक प्राण प्रतिष्ठा के कार्यक्रम के चलते राम भक्त व्यवस्थाओं के मद्दे नजर अयोध्या ना पहुंचे हालांकि उन्होंने राम भक्तों को 22 जनवरी के बाद अयोध्या आने की अपील की थी. वहीं प्राण प्रतिष्ठा के दूसरे दिन ही आज लाखों की संख्या में राम भक्त रामलला के दर्शन करने के लिए पहुंच गए हैं.

कम पड़ गए लॉकर्स–अयोध्या में जो भी भक्त प्रभु श्री रामलला के दर्शन करने के लिए जाता है वह अंदर किसी भी प्रकार का कोई सामान नहीं ले जा सकता. मोबाइल, इलेक्ट्रॉनिक घड़ी, और अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरण जैसी चीजों को जमा करने के लिए मंदिर के बाहर हजारों की संख्या में लॉकर्स उपलब्ध है जिसमें भक्त अपने सामान रखकर अंदर दर्शन करने के लिए जाते हैं और फिर लौट कर अपना सामान लेते हैं पर आज सुबह इतनी बड़ी संख्या में राम भक्तों की भीड़ के पहुंचने के कारण अयोध्या में मौजूद लॉकर्स कम पड़ गए हैं.**कल रात से ही लगी है भीड़**–22 तारीख को रामलला के प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम में प्रधानमंत्री मोदी के दोपहर 3 बजे अयोध्या छोड़ने के बाद कार्यक्रम में आए हुए वीवीआईपी मेहमानों ने शाम 7:00 बजे तक अयोध्या में प्रभु श्री राम के दर्शन किए और इसके बाद मीडिया को एंट्री दी गई .

प्राण प्रतिष्ठा में पहुंचे 8 हजार मेहमान, दिखे नेता, उद्योगपति, फिल्म स्टार, खिलाड़ी, जज और संत,

अयोध्या में सोमवार को संपन्न प्राण प्रतिष्ठा समारोह में बॉलीवुड सुपरस्टार अमिताभ बच्चन, उद्योगपति मुकेश अंबानी, लक्ष्मी निवास मित्तल और क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर सहित कई नामी हस्तियां शामिल हुईं. आमंत्रित अतिथियों की सूची में करीब आठ हजार नाम शामिल थे, जबकि चुनिंदा लोगों की सूची में 506 नाम शामिल थे जिनमें मुख्य रूप से प्रमुख नेता, अग्रणी उद्योगपति, बड़े फिल्मी सितारें, खिलाड़ी, राजनयिक, न्यायाधीश और बड़े संत महंत शामिल रहे.अरबपति मुकेश अंबानी और उनका परिवार, इस्पात जगत के उद्योगपति लक्ष्मी निवास मित्तल, दूरसंचार क्षेत्र से सुनील भारती मित्तल, रिलायंस समूह से अनिल अंबानी और आदित्य बिड़ला समूह के चेयरमैन कुमार मंगलम बिड़ला और उनकी बेटी अनन्या बिड़ला भारतीय उद्योग जगत से कुछ ऐसे चेहरे थे जो इस समारोह में शामिल हुए. अमिताभ बच्चन एक निजी चार्टर्ड विमान से इस समारोह में शामिल होने अयोध्या पहुंचे और उनके साथ बेटे अभिषेक बच्चन भी थे.

प्राण प्रतिष्ठा के बाद पीएम मोदी ने कैसे खत्म किया उपवास, गोविंद देव गिरी महाराज ने दी जानकारी

अयोध्या में 22 जनवरी को राम मंदिर का उद्घाटन हो गया. रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के साक्षी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बने. शंखनाद और मंत्रोच्चार के बीच रामलला गर्भगृह में विराजमान हुए. रामलला की प्राण प्रतिष्ठा शुभ मुहूर्त में संपन्न की गई. प्राण प्रतिष्ठा के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का 11 दिनी विशेष अनुष्ठान भी पूरा हो गया. राम मंदिर परिसर में मंच पर मौजूद स्वामी गोविंद देव गिरी महाराज के हाथ से चरणामृत पीकर पीएम मोदी ने उपवास तोड़ा.

प्राण प्रतिष्ठा के बाद पीएम मोदी ने खत्म किया उपवास–रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के लिए पीएम मोदी ने 12 जनवरी से विशेष अनुष्ठान शुरू किया था. स्वामी गोविंद देव गिरी महाराज ने बताया कि प्रधानमंत्री मोदी के लिए जल में शहद और नींबू मिलाकर पिलाने की बात सोची थी, लेकिन उन्होंने अलग से निवेदन किया कि आप मुझे श्रीराम का चरणामृत पिलाएं. प्रधानमंत्री मोदी के आग्रह पर व्रत तुड़वाने

के लिए चरणामृत की व्यवस्था कम समय में करनी पड़ी. पीएम मोदी ने चरणामृत पीकर 11 दिनों का व्रत तोड़ा. पीएम मोदी के आग्रह पर स्वामी गोविंद देव गिरी महाराज भावुक हो गए.

स्वामी गोविंद देव गिरी महाराज ने पिलाया चरणामृत –उन्होंने कहा कि मैं प्रधानमंत्री मोदी की माता को जानता हूं. उस समय मेरे मन में भी मातृत्व का भाव जाग गया. ऐसा लगा जैसे मैं एक अच्छे और देश के होनहाल लाल को उपवास तुड़वाने के लिए चरणामृत पिला रहा हूं. चरणामृत पीकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्वामी गोविंद देव गिरी महाराज के चरणों में झुककर आशीवार्द लिया. पीएम मोदी का प्रेम भाव देखकर स्वामी गोविंद देव गिरी महाराज भाव विभोर हो उठे. रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के साथ राम मंदिर का विधिवित उद्घाटन हो गया. भक्तों को रामलला का दर्शन करने के लिए राम मंदिर का द्वार खोल दिया गया है. बड़ी संख्या में राम भक्त आराध्य की पूजा अर्चना करने अयोध्या पहुंच रहे हैं.

कांग्रेस वाले मुझे अपने कार्यक्रम में नहीं बुलाते, अखिलेश यादव का दावा

उत्तर प्रदेश में अभी तक समाजवादी पार्टी और कांग्रेस के बीच सीट शेयरिंग को लेकर आख़िरी फ़ैसला नहीं हो पाया है. दोनों दलों के बीच तीन राउंड की बैठक हो चुकी है. इस बीच सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कांग्रेस को लेकर बड़ा बयान दिया है. राहुल गांधी की भारत जोड़ो न्याय यात्रा में शामिल होने के सवाल पर उन्होंने कहा कि कांग्रेस वाले हमें अपने कार्यक्रम में नहीं बुलाते हैं. अखिलेश यादव ने इंडिया टीवी से ख़ास बातचीत में यूपी की राजनीति और गठबंधन को लेकर खुलकर बात की. इस दौरान जब उनसे सवाल किया गया कि क्या जब राहुल गांधी की यात्रा यूपी में आएगी तो वो उसमें शामिल होंगे. इस पर सपा अध्यक्ष ने कहा कि, बीजेपी वाले भी मुझे अपने कार्यक्रम में नहीं बुलाते और कांग्रेस वाले अपने कार्यक्रम में नहीं बुलाते हैं, यही समाजवादियों का रास्ता है.

कांग्रेस से सीट शेयरिंग के सवाल पर ये कहा––यूपी में अमेठी और रायबरेली सीट को लेकर अखिलेश यादव ने कहा कि, उस पार्टी को लेकर नेताजी के समय से हमारा राजनीतिक व्यवहार कायम रहा है. वो व्यवहार अमेठी रायबरेली में आगे तक भी कायम रहेगा. हमें उम्मीद है कि बहुत जल्द ही बड़े दल छोटे दल आपस में मिलकर तय कर लेंगे कि किसको कहां चुनाव लड़ना है. प्रत्याशी इसलिए पूछ रहे हैं क्योंकि प्रत्याशी का अपना भी वोट होता है. पहले ही पता चल जाता है कि ये टिकेगा या नहीं, क्योंकि बीजेपी से मुकाबला करने के लिए ये जरूरी है कि हमारा प्रत्याशी मजबूत हो. अमेठी में राहुल गांधी की हार पर अखिलेश यादव ने कहा कि, इस तरह तो केशव प्रसाद मौर्य भी चुनाव हार गए थे

शिक्षक के द्वारा पत्रकार के साथ की गई अभद्रता के खिलाफ पत्रकार एकता मंच ने सौंपा ज्ञापन

संभागीय ब्यूरो गौरीशंकर कुशवाहा की खबर

पन्ना- इटवाखास संकुल के अंतर्गत आने वाले प्राथमिक शाला चैन सिंह धर्मपुर में विगत 13 जनवरी 2024 के दिन पत्रकार रूपेश जैन कवरेज करने गए थे,कवरेज करने के दौरान प्राथमिक शाला में पदस्थ शिक्षक पदस्थ शिक्षक रामनिवास शर्मा द्वारा अभद्रता की गई जिसका वीडियो भी कुछ दिन पूर्व शोशल मीडिया में वायरल हुआ था जिससे आहत होकर पत्रकार साथियों ने अभद्रता करने वाले शिक्षक के खिलाफ कलेक्टर

और पुलिस अधीक्षक के नाम ज्ञापन सौंपाते हुए कार्यवाही की मांग की है।ज्ञापन में राकेश शर्मा ,शिवकिशोर पाण्डेय,मुकेश विश्वकर्मा, टाइगर खान,बलराम व्यास,अनिल तिवारी,नदीम खान,सौरभ साहू,अर्चना प्यासी,राकेश पाण्डेय,संजय रैकवार,दुर्गेश शिवहरे,राजेश रावत,लक्ष्मीकांत शर्मा,इदरीश मोहम्मद,अरुण शुक्ला,कादिर खान,अजय दुबेदी कैलाश रैकवार रूपेश जैन सहित पत्रकार साथी हुए शामिल।

ग्वालियर पुलिस का टीआई मेरा भाई वाला रूप देखने को मिला

थाना प्रभारी व एसडीओपी के प्रयास से दोनों एक हुए और पुलिस ने भाई बनकर करी गोद भराई

दैनिक पुष्पांजली टुडे

ग्वालियर। पुलिस अधीक्षक ग्वालियर राजेश सिंह चंदेल,भापुसे के मार्गदर्शन व अति. पुलिस अधीक्षक उत्तर अमृत मीना के निर्देशन में ग्वालियर पुलिस का टीआई मेरा भाई वाला चेहरा देखने को मिला। जब एक गर्भवती महिला अपनी एक साल की बेटी को लेकर थाना उटीला रिपोर्ट लिखवाने आई थी तो थाने में मारपीट की एफआईआर लिखी गई। एफआईआर के बीस दिन बाद पुनः महिला शिकायत लेकर एसडीओपी बेहट श्री संतोष पटेल के पास आई कि उसका पति उसे साथ नहीं ले जा रहा है वो मायके में रह रही

है। उसे कब तक उसके माँ बाप रखेंगे। थाना प्रभारी उटीला शिवम् राजावत ने बहन को भरोसा दिलाया कि दो दिन में आपका ये भाई आपको ससुराल पहुँचाएगा और पति लेने आएगा।पति-पत्नी के छोटे मोटे विवाद वर्षों तक

चलते हैं जिससे आर्थिक व मानसिक रूप से नुड़सान होता है व परिवार का सामाजिक विघटन भी होता है। पुलिस द्वारा दोनों पक्षों को थाने के सामने मंदिर पर बैठाकर समझाया गया व शक संदेह को दूर करने का प्रयास किया गया। जिसमें मायके पक्ष से यह बात आई कि दामाद हमारी बेटी को साथ में रखे और जहां भी कपड़े बेचता वहीं बेटी को रखे। जिस पर दामाद नवल बंजारा भी तैयार हो गया और पुलिस ने गर्भवती बहन को साड़ी, साल, फल मिठाई व देकर गोद भराई की। दोनों ने वरमाला डालकर पुनः एक होकर दंपत्तय जीवन जीने का संकल्प लिया। पुलिस ने दोनों को मोटरसाइकिल से विदा किया जिससे बेटी की माँ और दोनों पक्ष बहुत खुश नड़र आये।पारिवारिक समझौता में उप निरीक्षक शुभम शर्मा व प्र.आर. सुनील गोयल ने महती भूमिका निभाई।

पीएम यशस्वी सेंट्रल छात्रवृत्ति के लिए 31 जनवरी तक आवेदन आमंत्रित

खरगोन जिले से मुन्ना खान ब्यूरो चीफ पुष्पांजलि टुडे

पीएम यशस्वी सेंट्रल सेक्टर स्कीम ऑफ टॉप क्लास एजुकेशन स्कूल योजना अंतर्गत छात्रवृत्ति के लिए आवेदन करने की अंतिम तिथि 31 जनवरी 2024 तक नियत की गई है।सहायक संचालक पिछड़ा वर्ग एवं अल्प कल्याण सुश्री इतिशा जैन ने बताया कि जिले के उच्चतम परिणाम वाले कुल 228 शासकीय एवं अशासकीय हाई स्कूल तथा हायर सेकण्डरी विद्यालयों में अध्ययनरत पिछड़ा वर्ग, आर्थिक रुप से कमजोर एवं घुमक्कड़, अर्द्धघुमक्कड़ जातियों में मेघावी छात्र जो कि कक्षा 9वी से 12वी तक में अध्यनरत है वे लाभन्वित हो सकते हैं। योजना अंतर्गत ऑनलाईन आवेदन नेशनल स्कॉलरशिप पोर्टल 222 पर अंतिम दिनांक 31 जानवरी 2024 तक पात्रता एवं नियमानुसार किए जा सकते है।

सीरवी समाज जीडिमेटला वडेर में प्रतिष्ठा महोत्सव धूम-धाम से मनाया

दैनिक पुष्पाजंली टुडे

बेंगलूरू । मर्यादापुरुषोत्तम भगवान श्री राम की अयोध्या में मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा पर होने वाले 22 जनवरी को दीपोत्सव कार्यक्रम को लेकर सीरवी समाज जीडिमेटला वढेर में दीपोत्सव व भजन संध्या कार्यक्रम रखा गया। सीरवी समाज भवन में भजन संध्या का आनंद लिया। वडेर को रंग बिरंगी रोशनी व फूलो से सजाया गया। इसके अलावा भवन में एलइडी स्किन पर लाईव कार्यवाही देखने की व्यवस्था की गई। संस्था के अध्यक्ष मांगीलाल ने कहा कि पांच सौ साल का सपना पूरा होने जा रहा है। इससे बड़ा त्यौहार क्या हो सकता है। मन्दिर में 11011 पारंपरिक दीये जलाए गये। महिलाओं राम धुन एवं भजनों की प्रस्तुति दी। रघुपति राघव राजा राम पतित पावन सीताराम, आयेगे आयेगें मेरे राम आयेगें जेसे भजनों की प्रस्तुति दी। इस मौके पर महिलाओं ने आरती की व नृत्य किया। इस अवसर पर संस्था के सचिव नारायणलाल बर्फा, केराराम, भंवरलाल, प्रेम, बाबूलाल चोयल, मोहनलाल परिहार, भुण्डाराम, मांगीलाल, उदाराम, मोहनलाल, लाबुराम, मांगीलाल देवड़ा एवं सांस्कृतिक कमेटी, महिला मंडल की बड़ी संध्या में महिलाएं मौजूद थी।

विशाल भजन संध्या का हुआ आयोजन

दैनिक पुष्पाजंली टुडे

बेंगलूरू 36 कोंम भक्त मंडल बेंगलुरु द्वारा तातगुणी स्थित माली सैनी समाज बनशनकारी ट्रस्ट परिसर में श्री राम लला प्राण प्रतिष्ठा के उपलक्ष में विशाल भजन संध्या एक शाम गौ माता के नाम कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें बड़ी संख्या में राम भक्त उपस्थित थे। भजन गायक गोभक्त ओम मुंडेल एवं रमसा ने राम महिमा एवं गौ महिमा के भजनों की प्रस्तुति दी जिसका देर रात तक राम भक्तों ने आनंद उठाया एवं जय श्री राम , गौ माता के जयकारों से माहौल भक्ति मय हो गया. इस अवसर पर मुख्य अतिथि महेंद्र मुणोत, विशिष्ट अतिथि राजस्थान पत्रिका बेंगलुरु के संपादकीय प्रभारी कुमार जिवेन्द्र झा, राकेश देसरला सुरेश सैणचा, अमृतधारा गौशाला के प्रमुख शर्मा उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन मनीष मुंडवा ने किया. आयोजकों ने अतिथियों का एवं सहयोगियों का सम्मान किया।

बिबवेवाड़ी वडेर में मनमोहक झांकिया सजाई ,निकाली कलश यात्रा गूंजे जय श्रीराम के जयकारें

दैनिक पुष्पाजंली टुडे

पुणे। सीरवी समाज बिबवेवाडी वडेर में 21 तारीख को श्री रामजी की प्राण प्रतिष्ठा की खुशी में कलश यात्रा व शोभा यात्रा निकाली गई। कलश यात्रा में माताओं बहनों व भाईयों ने बढ़चढ़कर भाग लिया। उसमे रामजी लक्ष्मणजी, सीताजी, हनुमानजी, शिवाजी ,महाराज महाराणा प्रताप व आई माताजी ,झांसी की राणी लक्ष्मी बाई की झांकीया नीकाली गई। ओर दुसरे दिन 22 जनवरी को मंदिर मे होम हवन पूजन किया गया । पुरे दिन लड्डू का प्रसाद वितरण किया गया। शाम को 2100 दीप जलाकर दीपावली मनाई की गई। बाद में सभी ने भोजन प्रसाद ग्रहण कीया सभी का वडेर के अध्यक्ष हिरालालजी कलाजी राठौड़ व महिला मडंल अध्यक्ष संगीता सोहनजी सिन्दरा व युवा अध्यक्ष मोहन मुलचदं परमार ने सभी का आभार प्रकट किया। ये जानकारी जीवाराम सेपटा द्वारा दी गई

तलवार लहराने वाले व्यक्ति को चौकी खड़गवां पुलिस ने आर्म्स एक्ट के तहत कार्यवाही कर किया गिरफ्तार।

सूरजपुर। चौकी खड़गवां पुलिस ने गांव में खुलेआम तलवार लहराकर लोगो को धमकाने वाले एक व्यक्ति को गिरफ्तार कर के उसके खिलाफ आर्म्स एक्ट के तहत कार्यवाही किया है। पुलिस अधीक्षक सूरजपुर आई कल्याण एलिसेला ने जिले के थाना-चौकी प्रभारियों को माहौल खराब करने वालों के विरूद्ध सख्त कार्यवाही करने के निर्देश दिए है। दिनांक 22.01.24 को चौकी खड़गवां पुलिस को सूचना मिली कि ग्राम बोझा में मेन रोड़ पर संतोष मिश्रा तलवार लेकर लहराते हुए आम लोगों को डरा धमका कर भयभीत कर रहा है। सूचना पाकर चौकी खड़गवां की पुलिस फौरन मौके पर पहुंची जहां संतोष मिश्रा पिता परषोत्तम मिश्रा उम्र 42 वर्ष ग्राम बोझा हाथ में तलवार लेकर लोगों को डराते धमकाते मिला जिसे घेराबंदी कर पकड़ा गया

संस्कार मंजरी की श्रीराम काव्य आराधना गोष्ठी हुई सम्पन्न

महेंद्र शर्मा उप संपादक
पुष्पांजलि टुडे

ग्वालियर। नागरिक मूल्यों के उन्नयन के लिए समर्पित संस्था ÷ संस्कार मंजरी ÷ ने अयोध्या में श्री राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा के उपलक्ष में श्री राम काव्य आराधना काव्य गोष्ठी का आयोजन किया । दर्पण कॉलोनी में आयोजित एक प्रतिष्ठित विद्यालय के सभाभवन में कार्यक्रम की मुख्य अतिथि पूर्व महापौर(श्रीमती)समीक्षा गुप्ता ने इस अवसर पर कहा -÷श्री रामचरित्र का अनुकरण करके ही हम प्रभु राम को अपने हृदय में प्रतिष्ठित कर सकते हैं। यही रामजी का वास्तविक स्वागत होगा ।÷ विशिष्ट अतिथि की आसंदी से - वरिष्ठ साहित्यकार भगवान श्रीराम के पुत्र कुश के वंशज सुरेन्द्रपाल सिंह कुशवाह ने कहा -÷राम पुरुषार्थ का प्रतीक है पराजय को जय में बदलने की कुँजी है । रामजी का सच्चा उत्तराधिकारी केवल दीपक है जो सूर्य चंद्रमा के जाने के बाद भी अंधेरे को सामर्थ्य भर पराजित करता है । ÷ कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए भाजपा नेत्री एवं संस्था-अध्यक्ष किरण भदोरिया ने कहा - । प्रभु श्री राम जी ने किस तरह त्याग प्रेम एवं करूणामय जीवन जिया यही अनुकरणीय है। संस्था संस्थापक (श्रीमती)नीलम जगदीश गुप्ता ने संस्था के कार्यो पर प्रकाश डालते हुए कहा कि ÷प्रभु राम सर्वश्रेष्ठ विश्व नागरिक हैं। हम समाज सेवा कर रहे है यह मानना भूल है । समाज ही प्रतिक्षण हमारी सेवा कर रहा है । हम अपने दायित्व ठीक से निर्वाह करें । यही प्रभु राम की इच्छा है।÷ कार्यक्रम का आरम्भ अभिलाषा द्वारा श्रीराम स्तुति से हुआ । दीप प्रज्ज्वलन के उपरांत सरस्वती वंदना रेखा भदौरिया ने सुमधुर स्वर में प्रस्तुत की ।मंच उद्बोधन के बाद कवियों ने ÷श्रीराम काव्य आराधना÷ के रूप में अपनी रचनाएं पढ़ीं । रामराज्य स्थापना अब यही राष्ट्र आराधना ।इकदूजे से विनय करें हम , करें यही बस प्रार्थना ।।महामना जगदीश

जिनको राम नहीं है प्यारे
कैसे कहूं हमारे हैं !
दुष्यंत दीक्षित
हे नीलकंठ भोले शंकर हे महादेव त्रिपुरारी करबद्ध प्रार्थना तुमसे विनती सुनो हमारी
है राघवेंद्र आराध्या तुम्हारे जिस दिन जिनको जपते होमंदिर भगवान बने उनका अब ये है तुम्हारी जिम्मेदारी
आलोक शर्मा
हुआ हमारे समय में, मंदिर का निर्माण ।
न्यायालय न्यायित हुआ,जब बोले पाषाण ।।
जब बोले पाषाण, गवाही दी खुद आकर ।
न्यायालय ने न्याय दिया तब उचित बताकर ।।
कह %अनंग% करजोरि,राम प्रभु बने सहारे ।
तब जाकर के न्याय,पक्ष में हुआ हमारे ।
अनंग पाल सिंह भदौरिया%अनंग%
सभी मिलकर अवध पहुंचे प्रभु श्री राम आए हैं जो मालिक हैं सभी जग के वह अपने धाम आए हैं
दिनेश विकल
संघर्षो का अंत नहींजीवन भी एक

संगम हैमहलों का सुख छोड़ कर वन-वन भटके सीताराम है
सीता पवन चौहान
जीत गया विश्वास धर्म का अब ढोल नगाड़े बाजेंगे
दिन भी आया तिथि भी आई प्रश्नों पर लगा विराम है
राजीव सक्सेना राज
कोई कहेगा गारा ईंटा शिलाएं लगी हैं मंदिर में
मै कहता हूँ काट काट निज शीश लगाया भक्तों ने
शिवम सिंह सिसौदिया
धर्म नीति की राह न भटके वही सहज व्यवहारी है।
सरल सहज समरस जीवन ही होता परहितकारी है।
एवं÷राम ही के नाम से होते शुभ काम हैं।
राम ही का धाम तो जग का सुधाम है।
राम ही हैं प्रेरणा जीवन आधार हैं।
राम के गुण गान से जीवन सुनाम है÷।
रामचरण चिराड़ ÷ रुचिर÷
जो सब प्रेरणाओं के धाम है ।
जिनके अनन्य भक्त हनुमान है।
आज चहुं ओर बस एक ही नाम है ।
जय श्रीराम जय श्रीराम जय श्रीराम है
राजहंस त्यागी ।
तुम्हें जपना है यह अविराम
राम का कर लो तुम नित ध्यान
समय कट जाएगा लो नाम
बढ़ेगा नित नूतन तब ज्ञान
डॉ.करुणा सक्सेना
बिगड़ी बनाते संवारे सबके काम जी
तेरे नहीं मेरे नहीं सबके हैं रामजी
पापियों को दंड दिया रौद्र रूप सागर को
फिर भी तेरी छवि लागे ललित ललाम जी
कादम्बरी आर्य
राम ही राम रटते अधर हर घड़ी
राम के नाम का है असर हर घड़ी
राम ही आस हैं राम विश्वास हैं
सामने राम के अब नजर हर घड़ी
आरती ÷अक्षत÷

एचएस भदौरिया एवं किंकरपाल सिंह ने भी प्रभुराम पर अपने वक्तव्य दिए । अंत में मधुर स्वर में राम भजन (श्रीमती) अभिलाषा एवं (श्रीमती) माधुरी गुप्ता ने प्रस्तुत किए एवं रामनाम संकीर्तन हुआ । कार्यक्रम का संयोजन युवा कवि राजहंस त्यागी ने तथा संचालन वरिष्ठ साहित्यकार रामचरण÷ रुचिर ÷ ने किया। आभार अध्यक्ष किरण भदौरिया ने किया । अल्पाहार चाय के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ । इस अक्षर पर अनेक साहित्यकार गण एवं विशिष्ट जन उपस्थित रहे। कार्यक्रम बहुत ही सराहनीय एवं अविस्मरणीय रहा।

हरि संकीर्तन और रामायण पाठ से राममय हुआ अमलीपदर,सार्वजनिक भण्डारा का किया गया भव्य आयोजन

ब्यूरो चीफ छत्तीसगढ
पुष्पांजलि टूडे अश्वनी अवस्थी

गरियाबंद जिले के तहसील मुख्यालय आदर्श ग्राम अमलीपदर में अयोध्या में श्री राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा के सुअवसर पर भव्य धार्मिक अनुष्ठान का आयोजन किया गया !जिसमें 22 जनवरी के पूर्व संध्या अमलीपदर नगर के मुख्य चौंक चौराहे पर भव्य शोभायात्रा निकाली गई !इस मौके पर नन्हे बच्चों का राम लक्ष्मण सीता और हनुमान के वेशभूषा में झांकी भी निकाली गई !जिससे अमलीपदर नगर का वातावरण भक्तिमय हो गया !इतना ही नही बल्कि निरंतर तीन दिन तक नगरवासियों ने अपने घर आंगन में रंगोली सजाकर दीपावली की तरह दीप जलाए !और पुनः 22 जनवरी को समस्त ग्रामवासी ने माँ दुर्गा मंदिर परिसर में एकत्रित होकर विराजित श्री लखन सियाराम जी एवं समस्त देवी देवताओं का विधि विधान से पूजन समय प्रातः 8 बजे से 10 तक किया !उक्त पूजन को पंडित कृष्ण कुमार त्रिपाठी ने सम्पन्न कराया !प्रातः10 बजे से दोपहर 12 बजे तक आदर्श रामायण मंडली अमलीपदर द्वारा मानस पाठ कर प्रभु श्री राम जी के सुंदर बाल लीला का वर्णन किया गया !इस तरह निरंतर दोपहर 12 बजे से संध्या 7 बजे तक आयोजक समिति द्वारा आमंत्रित हरि संकीर्तन मंडलियों द्वारा बारी बारी से महामंत्र का जाप किया गया !तथा संध्या 7 बजे समस्त ग्रामवासियों ने एकत्रित होकर हजारों दीप प्रज्ज्वलित कर भगवान श्री राम जी की महाआरती किया !आरती के उपरांत प्रसाद वितरण कर खूब आतिशबाजी किया गया !इस तरह पुरे नगर का वातावरण राममय हो गया !इतना ही नही बल्कि श्रद्धालु भक्तों के लिए भव्य भण्डारा का आयोजन भी किया गया था !ज्ञात हो कि उक्त भण्डारा में श्रद्धालु भक्तों का दोपहर 12 बजे से रात्रि के 10 बजे तक तांता लगा रहा !ज्ञात हो कि भंडारा मे भोजन परोसने के लिए स्वप्रेरित होकर अमलीपदर के समस्त नर-नारियों एवं बालक-बालिकाओं ने बढ़ चढ़कर सहयोग प्रदान किया !उनके इस पुण्य के कार्य में सहयोग प्रदान करने के लिए श्री रामलला मंदिर प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव संचालन समिति ने आभार व्यक्त करते हुए विश्व शांति के लिए कामना किया है !भक्तिभाव के कड़ी में एक भक्तिभरा सेल्फी जोन भी बनाया गया था !जिसका शीर्षक÷हमर गांव अयोध्या÷रखा गया था !जिसमें समस्त श्रद्धालु भक्त आकर देर रात तक भक्तिभरा सेल्फी लेते रहे !इस तरह प्रत्येक नर नारी श्री राम भक्ती में समर्पित होकर तल्लीन हो गये !और पुरे नगर में भगवा ध्वज लहरा रहा था !

आज मौ नगर मे केंद्रीय मंत्री श्रीमंत ज्योतिरादित्य सिंधिया जी का आगमन हुआ नगर परिषद अध्यक्ष और भाजपा कार्यकर्त्ताओ ने उनका बड़ी फूल माला से भव्य स्वागत किया साथ ही मै स्वामी विवेकानंद जी की तस्वीर भेंट की

पुष्पांजलि टुडे रिपोर्टर मौ डॉ.बेताल सिंह गौड़

आज मौ नगर में भारत सरकार में केंद्रीय मंत्री श्रीमंत ज्योतिरादित्य सिंधिया जी का आगमन हुआ उनका स्वागत मौ नगर परिषद अध्यक्ष सज्जन सिंह यादव जी ने किया इस बीच भाजपा के कई कार्यकर्ता बंधु उपस्थित रहे

मसानजोर डैम के विस्थापित रानीश्वर प्रखंड के विभिन्न मोज़ा के ग्रामीणों के साथ आदिवासी मूलवासी विकास मुर्चा के केंद्रीय अध्यक्ष के साथ की बैठक।

दुमका। दुमका जिले के रानीश्वर प्रखंड अंतर्गत दक्षिणजोल फुटबॉल खेल मैदान परिसर पर मंगलवार को मयूराक्षी डैम से विस्थापित विभिन्न मौजा के ग्रामीण प्रतिनिधिगणों का एक आज बैठक आदिवासी मूलवासी विकास मोर्चा के केन्द्रीय अध्यक्ष हाबिल मुर्मू के अध्यक्षता में संपन्न हुआ। जिसमें प्रखंड रानीश्वर सह अंचल के अंतर्गत विभिन्न मौजा में मसानजोर डैम के विस्थापित व पुनर्वासित मौजा के ग्रामीणों को मिल रहे सरकारी सेवाएँ-सुविधाएँ और जनसमस्या को लेकर विस्तार से चर्चा हुआ। जिसपर उन्होंने बताया कि जिला प्रशासन ने तत्कालीन जिन राजस्व मौजा को विस्थापित व पुनर्वासित किया है उनके राजस्व ग्राम के पंच (लेखा होड़ ञ्पट्टाप्रधान,पाराणिक,जोगमाँझी, नाईकी, गोडेत) को वर्तमान में सरकारी लाभ से वंचित किया गया है। पेसा कानून-1996 के तहत उन्हें पारंपरिक स्वशासन और पंचायती राज के विकास कार्य करने के ग्राम सभा की भूमिका निभाने से वंचित हो रहे हैं। जिससे विस्थापित मौजा का अस्तित्व विलुप्तप्राय हो गई है। आगे उन्होंने दुख जताते हुए बताया कि झारखंड राज्य अलग होने के पश्चात कोई भी केन्द्रीय और राज्य सरकार ने पुनर्वासित तमाम मौजा के ग्रामीणों की यथास्थिति की सुधि नहीं ली। आज तमाम विस्थापित-पुनर्वासित मौजा के ग्रामीण आज आजीविका, रोजगार, पलायन, बुनियादी सुविधा सड़क, पानी, स्वास्थ्य, सिंचाई सुविधा, जाति-निवासी-आय प्रमाण-पत्र निर्माण कराने जैसी समस्या झेलने के लिए विवश हैं। इस मौके पर नारे लगाकर स्थानीय प्रखंड व जिला प्रशासन का ध्यान आकर्षण हेतु निम्नलिखित आवाज बुलंद किये गए। विस्थापित-पुनर्वासित राजस्व मौजा और पंच (लेखा होड़) को एसपीटीएक्ट के तहत दर्जा दिया जाए,

जिला कांग्रेस कमेटी रीवा द्वारा कलेक्ट्रेट परिसर के समक्ष शुरू हुआ धरना प्रदर्शन

रीवा(पुष्पांजली टुडे)।

प्रदेश कांग्रेस कमेटी के निर्देशन में जिला कांग्रेस कमेटी रीवा द्वारा कांग्रेस पार्टी के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं सांसद आदरणीय राहुल गांधी की भारत जो?ी न्याय यात्रा के काफिले पर भाजपा समर्पित उपद्रवियों द्वारा न्याय यात्रा पर हमला किया गया जिससे वह और उनका काफिला बुरी तरह से घायल हो गया। साथ ही दिनांक 22 जनवरी 2024 को असम के मुख्यमंत्री हेमंत बिस्वा के इशारे पर संत शंकर देव के मंदिर में दर्शन करने से उन्हें रोका गया। जबकि इसकी अनुमति उन्हें पूर्व से थी। भारत जो?ी न्याय यात्रा को सुनियोजित तरीके से हिंसक हमलो एवं धार्मिक भावनाओ को ठेस पहुंचाने कलेक्ट्रेट परिसर रीवा के समक्ष जिला एवं शहर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्षद्वय इंजी. राजेन्द्र शर्मा एवं लखनलाल खण्डेलवाल के निर्देशन एवं महापौर अजय मिश्रा (बाबा) के मुख्य आतिथ्य व कार्यकारी जिलाध्यक्ष कुंवर सिंह की अध्यक्षता में विशाल धरना प्रदर्शन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर महापौर अजय मिश्रा (बाबा) ने भाजपा द्वारा सुनियोजित तरीके से किये गये आदरणीय राहुल गांधी एवं उनके काफिले पर हमले को कायराना हमला निरूपित किया और कहा कि आगे आने वाले दिनों में कांग्रेस पार्टी गांव गांव, घर घर जाकर लोगों को भाजपा का चाल चरित्र उजागर करेगी। अध्यक्षता कर रहे कार्यकारी अध्यक्ष कुंवर सिंह ने घटना की विस्तृत जानकारी देते हुए भाजपा और आर एस एस पर जमकर हमला बोला और सभी कांग्रेस जनों को संविधान की रक्षा करने एवं भाजपा की तानाशाही को रोकने के लिए संघर्ष

का आहवान किया। कार्यक्रम के आरंभ में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के चित्र पर माल्यार्पण किया गया तथा इस अवसर महान क्रांतिकारी नेता सुभाष चंद्र बोस की जयंती पर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। सफल संचालन ब्लॉक अध्यक्ष रामकीर्ति शर्मा ने जबकि आभार प्रदर्शन शहर के कर्मठ संगठन मंत्री सज्जन पटेल ने किया। इस अवसर पर प्रदेश पदाधिकारी रामगरीब बनवासी, गोविंद दास तिवारी, सरदार प्रहलाद सिंह, शिवप्रसाद प्रधान, बृजभूषण शुक्ला, कविता पाण्डेय, वसीम राजा, मानवेन्द्र सिंह नीरज, अनिल मिश्रा, रमाशंकर सिंह, सत्यनारायण तिवारी, बृजवासी प्रसाद मिश्रा, रमाकांत मिश्रा, शत्रुघ्न सिंह सलैया, हर्षलाल शुक्ला, कुंज बिहारी तिवारी, मुस्ताहक खान, जी.पी. त्रिपाठी, रमेश पटेल, तारा त्रिपाठी, शिवेन्द्र प्रताप सिंह, अखिलेश द्विवेदी, जीतेन्द्र सिंह, पद्मदीप शुक्ला, नरेन्द्र सिंह तिवारी, कमलेश कुमार पटेल, सुंदरलाल चौधरी, पार्षद धनेन्द्र सिंह बघेल, नजमा बेगम, मनीष नामदेव, सूफिया बेगम, अकरम अंसारी, आरती बक्सरिया, सहफूज खान, श्याम किशोर मिश्रा, रामप्रकाश तिवारी डैडू, अमित चौबे, लियाकत अली, अनिल तिवारी, आनंद कुशवाहा, अशोक सिंह बुढ़वा, डॉ. विमल दुबे, डॉ. स्वतंत्र सिंह, प्रभा सोहगौरा, अर्चना द्विवेदी, ममता सिंह, प्रभा मिश्रा, देवती साकेत, सुशीला कुशवाहा, सुरेश वर्मा, सुशील कुशवाहा अमित द्विवेदी, नासिर अंसारी, राजेन्द्र तिवारी, राजेश मिश्रा बब्बू, भगवान सिंह तिवारी, मानिक लाल सोनी, रफीक मनिहार, प्रदीप अवस्थी, आर. एस. मिश्रा, प्रेमलाल विश्वकर्मा, पंकज उपाध्याय, सत्यम मिश्रा, शिवम मिश्रा, ऋषि त्रिपाठी, शशि कुमार पाण्डेय, राजेन्द्र सिंह रिमारी, अंजनी द्विवेदी, संजय तिवारी, केशव वर्मा, भूपेश द्विवेदी, राहुल सिंह, राजेश द्विवेदी, राहुल मिश्रा, अनुराग सिंह, जयप्रकाश श्रीवास्तव, अरविंद पटेल, नुरूल हसन, भोला प्रसाद पटेल, छोटेलाल रजक, सुनील द्विवेदी, सूरज मिश्रा, शुभम कुशवाहा, मनोज पटेल, दिगम्बर प्रसाद पाण्डेय, रोहिणी साकेत, शैलेन्द्र विश्वकर्मा, गेनरी पटेल, दिनेश सेन, मुन्नालाल जयसवाल, रामस्वरूप झंझोट, लकी सिंह, संतोष सिंह, शिवम साहू, सुनील द्विवेदी, सुनील तिवारी, तनवीर अहमद खान, दिग्विजय सिंह, धर्मराज चतुर्वेदी, उदित नारायण तिवारी, रमेश प्रसाद तिवारी, बृजेश बिसेन, पुष्पेन्द्र तिवारी, धनंजय पटेल, शिवम साहू, नूर अफजल अंसारी, लक्ष्मण कुशवाहा, रामानुज कुशवाहा सहित सैक्ड़ों की तादाद में कांग्रेस जन उपस्थित रहे।

राम दरबार की प्रतिमूर्ति व जयकारों के साथ निकली भव्य कलश यात्रा

राम मंदिर नया तलाब से हनुमान मंदिर तक निकाली गई भव्य कलश यात्रा

सतना(पुष्पांजली टुडे)

।बेला रामपुर बघेलान श्रीराम मंदिर में स्वरूप की प्राण प्रतिष्ठा के पूर्व आयोजित उत्सव कार्यक्रम के तहत भव्य कलश यात्रा का आयोजन किया गया। यात्रा में भगवान राम, माता सीता व भ्राता लक्ष्मण का स्वरूप धरें, माताओ एव बहनो ने कलश यात्रा को भव्य रूपता प्रदान की। कलश यात्रा का आयोजन राम मंदिर नया तलाव से स्कूल परिसर हनुमान मंदिर तक किया गया। कलश यात्रा के पूर्व हनुमान मंदिर में राम भजन, आयोजन किया गया। तदुपरांत ब?ी संख्या में कलश लेकर महिलाओं ने भव्य कलश यात्रा में भाग लिया। यात्रा में श्री राम के जयकारों की धूम रही। वही यात्रा के दौरान कई जगह भक्तों ने फूलों की बरसात की फिर भगवान श्री रामचंद्र जी की भव्य आरती एवं

महाप्रसाद का वितरण किया गया इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से शामिल रहे राम प्रसाद साहू (युवा पत्रकार) संदीप वर्मा मनीष पाठक सरपंच प्रतिनिधि मानेंद्र अशोक साहू सोनू दह्यत बद्दी विस्वकर्मा सिह निशांत सिंह शुभम रवींद्र वर्मा संगम लाल दिनेश साकेत मुनेंद्र सेन संतोष सेन शुभम गुप्ता नितांत सिंह शुभम महिला मंडली के सभी सदस्य हजारों की तादात में शामिल रहे

राजस्व महाअभियान में अब तक 1459 गांवों में हुआ बी-1 वाचन

रीवा(पुष्पांजली टुडे)।.

जिले की सभी तहसीलों में 15 जनवरी से राजस्व महाअभियान चलाया जा रहा है। अभियान के तहत राजस्व प्रकरणों को दर्ज करने के लिए ग्रामवार शिविर लगाए जा रहे हैं। शिविर में तैनात पटवारी गांव के प्रमुख सार्वजनिक स्थल तथा ग्राम पंचायत में बी-1 का वाचन कर रहे हैं। अभियान में अब तक 1459 गांवों में बी-1 का वाचन किया जा चुका है। इस संबंध में डिप्टी कलेक्टर श्रेयस गोखले ने बताया कि जिले के कुल 1747 राजस्व ग्रामों में बी-1 का वाचन करने के लिए 29 फरवरी तक कार्यक्रम निर्धारित किया गया है। जिले में अब तक 83.51 प्रतिशत गांवों में बी-1 का वाचन हो चुका है। अब तक तहसील जवा के 214, त्योंथर के 305, गु? के 125, मनगवां के 240 तथा सेमरिया तहसील के 171 गांवों में बी-1 का वाचन किया जा चुका है। इसी तरह तहसील सिरमौर के 158, रायपुर कर्चुलियान के 92 तहसील हुजूर के 103 तथा हुजूर नगर तहसील के 51 गांवों में बी-1 का वाचन किया जा चुका है। बी-1 के वाचन के बाद मृतक भू स्वामियों की जानकारी प्राप्त होने पर फौती नामांतरण के प्रकरण मौके पर दर्ज कर निराकृत किए जा रहे हैं।

शासकीय भवनों में 26 जनवरी तक की जाएगी रोशनी

रीवा(पुष्पांजली टुडे)।

जिले के सभी ऐतिहासिक स्थलों तथा शासकीय भवनों में गणतंत्र दिवस के अवसर पर 21 जनवरी से 26 जनवरी तक रोशनी की जा रही है। कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल ने सभी कार्यालय प्रमुखों को निर्देश देते हुए कहा है कि शासन के निर्देशों के अनुरूप शासकीय भवनों में 26 जनवरी तक सजावट और रोशनी निरंतर कराएं। इस व्यवस्था में आवश्यक व्यय विभागीय बजट से करें।

राजस्व महाअभियान के तहत प्रत्येक शुक्रवार एवं शनिवार को आयोजित होंगे विशेष कैंप

रीवा(पुष्पांजली टुडे)

राजस्व प्रकरणों के त्वरित निराकरण और राजस्व अभिलेखों में त्रुटियों को ठीक करने के उद्देश्य से राजस्व महाअभियान का आयोजन किया जा रहा है। अपर कलेक्टर सपना त्रिपाठी ने बताया कि जिले में लंबित राजस्व प्रकरणों की अधिकतम संख्या को दृष्टिगत रखते हुए प्रत्येक शुक्रवार व शनिवार को विशेष कैंप आयोजित किये जा रहे हैं। उन्होंने सभी तहसीलदार एवं नायब तहसीलदार को निर्देश दिये हैं कि अधिक लंबित प्रकरणों के ग्रामों में दो-दो विशेष चलित न्यायालय कैंप आयोजित कर प्रत्येक कैंप में 100 प्रकरणों के निराकरण का लक्ष्य निर्धारित करें।

राजस्व महाअभियान में अब तक 3538 प्रकरणों का हुआ निराकरण

रीवा(पुष्पांजली टुडे)

जिले भर में 15 जनवरी से 29 फरवरी तक राजस्व महाअभियान चलाया जा रहा है। अभियान में अब तक जिले भर में तहसील न्यायलयों में सुनवाई करके 3168 राजस्व प्रकरणों का निराकरण किया गया। इस संबंध में कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल ने बताया कि इस अवधि में नामांतरण के 1440, सीमांकन के 330, बंटवारा के 286 प्रकरणों एवं अन्य राजस्व प्रकरणों का निराकरण किया गया। अनुविभागीय अधिकारी राजस्व न्यायालय में लंबित प्रकरणों की सुनवाई करके 370 राजस्व प्रकरणों का निराकरण किया गया। सभी एसडीएम और तहसीलदार प्रकरणों की प्रतिदिन सुनवाई करके उनका निराकरण कर रहे हैं। राजस्व महाअभियान के तहत जिले भर में राजस्व शिविरों का ग्रामवार आयोजन किया जा रहा है। इन शिविरों में पटवारी बी-1 का वाचन करके फौती नामांतरण के प्रकरण दर्ज कर रहे हैं। अब तक फौती नामांतरण के 1216 प्रकरण दर्ज किए जा चुके हैं। अभियान के दौरान अविवादित बंटवारे के 213 प्रकरण भी दर्ज किए गए हैं। इनके निराकरण की लगातार कार्यवाही की जा रही है।

गणतंत्र दिवस में सम्मानित होंगे स्वतंत्रता संग्राम सेनानी तथा वीर नारियाँ

रीवा(पुष्पांजली टुडे)।

गणतंत्र दिवस का जिला स्तरीय समारोह एसएएफ परेड मैदान में 26 जनवरी को प्रात: 9 बजे से आयोजित किया जा रहा है। समारोह के मुख्य अतिथि उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ध्वजारोहण करके परेड की सलामी लेंगे। समारोह में स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों, शहीदों की वीर नारियों तथा लोकतंत्र के प्रहरियों का सम्मान किया जाएगा। इस संबंध में अपर कलेक्टर श्रीमती सपना त्रिपाठी ने कहा है कि स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों, शहीदों की वीर नारियों, सैन्य अधिकारियों तथा लोकतंत्र के प्रहरियों को सभी एसडीएम गणतंत्र दिवस समारोह में शामिल होने के लिए सम्मानपूर्वक आमंत्रित करें एवं अधिक आयु अथवा स्वास्थ्य कारणों से जो समारोह में शामिल न हो सकें उन्हें घर पर जाकर शॉल-श्रीफल देकर सम्मानित करें।

कलेक्टर आज करेंगी राजस्व महाअभियान की समीक्षा

रीवा(पुष्पांजली टुडे)

।कलेक्ट्रेट सभागार में 24 जनवरी को प्रात: 11 बजे से आयोजित बैठक में कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल राजस्व महाअभियान की समीक्षा करेंगी। बैठक में बी-1 के वाचन, राजस्व प्रकरणों के दर्ज करने तथा निराकरण एवं किसान सम्मान निधि में ई केवाईसी अपडेशन की समीक्षा की जाएगी। सभी एसडीएम, जनपद के मुख्य कार्यपालन अधिकारी तथा मुख्य नगर पालिका अधिकारियों को बैठक में उपस्थित रहने के निर्देश दिए गए हैं।

मऊगंज में कलेक्टर गणतंत्र दिवस पर करेंगे ध्वजारोहण

रीवा(पुष्पांजली टुडे)।

. मऊगंज जिले में गणतंत्र दिवस का मुख्य समारोह कलेक्ट्रेट परिसर में आयोजित किया जा रहा है। समारोह के मुख्य अतिथि कलेक्टर अजय श्रीवास्तव प्रात: 9 बजे ध्वजारोहण करके परेड की सलामी लेंगे। समारोह में जिला पुलिस बल, होमगार्ड, एनसीसी तथा अन्य दलों द्वारा आकर्षक परेड प्रस्तुत की जाएगी। समारोह के मुख्य अतिथि प्रदेश के मुख्यमंत्री के गणतंत्र दिवस संदेश का वाचन करेंगे। समारोह में विद्यार्थियों द्वारा रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाएंगे। समारोह में श्रेष्ठ कार्य करने वाले अधिकारियों कर्मचारियों को सम्मानित किया जाएगा। गणतंत्र दिवस की संध्या पर भारत पर्व का आयोजन किया जाएगा। इस कार्यक्रम में शासकीय केदारनाथ महाविद्यालय में रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम शाम 6 बजे से आयोजित किए होंगे। जनसंपर्क विभाग द्वारा प्रदेश की उपलब्धियों तथा नए कानूनों के संबंध में प्रदर्शनी भी लगाई जाएगी। जिले के सभी नगरीय निकायों, जनपद पंचायतों, ग्राम पंचायतों तथा सभी शिक्षण संस्थानों में भी गणतंत्र दिवस समारोह पूर्वक मनाया जाएगा।

अपर कलेक्टर ने अधिकारीयो को जन सुनवाई में अनिवार्य रूप से उपस्थित रहने के दिए निर्देश

रीवा(पुष्पांजली टुडे)।

कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित साप्ताहिक जन सुनवाई में अपर कलेक्टर श्रीमती सपना त्रिपाठी ने आमजनता से मिले 49 आवेदन पत्रों में सुनवाई की। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को सात दिनों की समय सीमा में आवेदन पत्रों के निराकरण के निर्देश दिए। अपर कलेक्टर ने कहा कि जन सुनवाई शासन की उच्च प्राथमिकता का कार्यक्रम है। सभी अधिकारी प्रत्येक मंगलवार को निर्धारित समय प्रात: 11 बजे कलेक्ट्रेट सभागार में अनिवार्य रूप से उपस्थित रहें। आमजनता से प्राप्त आवेदन पत्रों पर तत्परता से कार्यवाही कर समुचित निराकरण करें। किसी भी आवेदक को आवेदन पत्र के निराकरण के लिए पुन: जन सुनवाई में आने की आवश्यकता न रहे। संवेदनशीलता के साथ आवेदनों का निराकरण करें। जन सुनवाई में संयुक्त कलेक्टर आरके सिन्हा तथा डिप्टी कलेक्टर श्रेयस गोखले ने भी आमजनता के आवेदनों में सुनवाई की। जन सुनवाई में आवेदिका सुधा यादव रसोईया

ग्राम रमपुरवा को छ: माह के लंबित मानदेय का मौके पर ही भुगतान कराया गया।जन सुनवाई में ओमप्रकाश गिरि निवासी कोष्टा ने बिजली बिल में सुधार के लिए आवेदन दिया। अपर कलेक्टर ने अधीक्षण यंत्री विद्युत मण्डल को बिलों का परीक्षण कर समुचित सुधार के निर्देश दिए। दयानंदन मिश्रा निवासी ग्राम चौरा ने खसरे में सुधार के लिए आवेदन दिया। अपर कलेक्टर ने तहसीलदार हुजूर को सात दिवस में आवेदन में कार्यवाही के निर्देश दिए। मदन सिंह निवासी महसांव ने जमीन के नक्शा तरमीम तथा आबादी भूमि घोषित कराने के संबंध में आवेदन दिया। अपर कलेक्टर ने एसडीएम गु? को प्रकरण में कार्यवाही के निर्देश दिए। सुरेश कुशवाहा निवासी मझगवां ने जल संसाधन विभाग की क्षतिग्रस्त नहर में सुधार के लिए आवेदन दिया। अपर कलेक्टर ने कार्यपालन यंत्री जल संसाधन को नहर में तत्काल सुधार के निर्देश दिए। जन सुनवाई में नामांतरण, पेंशन प्रकरण, मजदूरी भुगतान, भू अर्जन का मुआवजा सहित विभिन्न प्रकरणों में सुनवाई की गई।

गणतंत्र दिवस पर जिला, विकासखण्ड तथा ग्राम पंचायत में होंगे समारोह

रीवा(पुष्पांजली टुडे)।

जिले भर में गणतंत्र दिवस समारोह हर्षोल्लास के साथ मनाया जाएगा। जिला मुख्यालय में एसएएफ मैदान में प्रात: 9 बजे मुख्य अतिथि उप मुख्यमंत्री तथा स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा मंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल द्वारा ध्वजारोहण किया जायेगा। गणतंत्र दिवस समारोह में आकर्षक परेड के साथ राष्ट्रीय ध्वज को सलामी दी जाएगी। समारोह में मुख्यमंत्री जी के संदेश का वाचन किया जाएगा। समारोह में स्कूली बच्चों द्वारा रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाएंगे। मुख्य समारोह में विभिन्न विभागों द्वारा आकर्षक झांकियाँ निकाली जाएंगी। समारोह में उत्कृष्ट कार्य करने वालों को पुरस्कृत किया जाएगा। गणतंत्र दिवस पर 21 जनवरी से ही सभी शासकीय भवनों में रोशनी कर दी गई है। गणतंत्र दिवस की संध्या पर भारत पर्व का आयोजन किया जाएगा। इसमें रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाएंगे। समारोह नगर निगम के टाउनहाल में शाम 6 बजे से आरंभ होगा जिसमें जबलपुर और सिंगरौली के लोक कलाकारों के दल आकर्षक प्रस्तुति देंगे। इस संबंध में कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल ने बताया कि विकासखण्ड स्तर पर जनपद पंचायत अध्यक्ष द्वारा ध्वजारोहण किया जाएगा। ऐसी नगर परिषदें जो विकासखण्ड मुख्यालय में स्थित नहीं हैं वहाँ नगर परिषद के अध्यक्ष द्वारा ध्वजारोहण किया जाएगा। ग्राम पंचायत में सरपंच द्वारा ध्वजारोहण किया जाएगा। इन समारोहों में ध्वजारोहण के बाद सामूहिक रूप से राष्ट्रगान का गायन होगा। कलेक्टर ने कहा है कि सभी संबंधित अधिकारी ध्वज संहिता का पालन करते हुए गणतंत्र दिवस में ध्वजारोहण की कार्यवाही सुनिश्चित करें। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी कार्यक्रम स्थल में प्राथमिक उपचार की सुविधा सुनिश्चित करें। गणतंत्र दिवस समारोह में सांसदगण, विधायकगण, महापौर, पार्षदगणों, गणमान्य नागरिकों, सैन्य व असैनिक अधिकारी, स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों, लोकतंत्र सेनानियों को सम्मानपूर्वक आमंत्रित कर उनके बैठने की समुचित व्यवस्था की जाएगी। जो स्वतंत्रता संग्राम सेनानी वयोवृद्ध हैं अथवा अस्वस्थ हैं उन्हें उनके घर जाकर सम्मानित किया जाएगा।

रीवा एनएसयूआई ने मॉडल साइंस कॉलेज में किया प्रदर्शन,अगर दो दिनों में परीक्षा परिणाम सुधार नहीं गया तो हम करेगे आंदोलन पंकज उपाध्याय

रीवा(पुष्पांजली टुडे)।

में एनएसयूआई जिला अध्यक्ष पंकज उपाध्याय के नेतृत्व में में आदर्श महाविद्यालय (मॉडल साइंस कॉलेज) में विगत दिनों फास्टियर के छात्र छात्राओं का परीक्षा परिणाम घोषित किया गया जिसमे ज्यादा छात्रों ने असंतोष व्यक्त किया है,जारी प्रेस विज्ञप्ति में पंकज उपाध्याय ने बताया की विगत 20 से 25 दिन पहले छात्र छात्राओं का परीक्षा परिणाम घोषित किया गया जिसमे ज्यादा से ज्यादा छात्रों को विथेल्ड प्रोमोटेड या फेल कर दिया गया है केवल एक ही विषय पर जिसमे छात्रों ने काफी असंतोष जताया है जिसको लेकर कई बार ये छात्र जा कर ज्ञापन दे चुके इसके बाद भी इस पर ध्यान नही दिया जा रहा और पास करवाने के लिए शिक्षोको द्वारा पैसे की मांग की जा रही है आज एनएसयूआई ने महाविद्याल में ताला बंदी की जिसमें छात्रों ने बताया की कुछ छात्रों से शिक्षको द्वारा पैसे की मांग की गई जिसमे छात्र परीक्षा परिणाम सुधारनवाने के लिए पैसे दिए भी 3000 से 4000 हजार रू की माग की गई जो की पूर्णत:गलत है और एक बात जब नई शिक्षा नीति में नियम है की अगर छात्र पासिंग मार्क से कम नंबर पता है तो उसमे शून्य दिखाता है लेकिन परीक्षा परिणाम में अंक भी दिखा रहा है जो संभव ही नहीं है और प्राचार्या मैडम द्वारा कहा जाता है की अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय द्वारा गड़बड़ी की गई है हम

कुछ भी नही कर सकते जब छात्र विश्वविद्यालय पहुंचे तो वहा कहा गया की महाविद्यालय से रिजल्ट भेजा ही नहीं गया है बताना चाहता हु की महाविद्यालय वाले विश्वविद्यालय की और विश्वविद्यालय वाले महाविद्यालय की गलती बता रहे है छात्र आखिर करे क्या इसको को लेकर आज एनएसयूआई ने धरना देकर महाविद्यालय में ताला बंदी की और और छात्र हित में माग रखी मैडम ने दो दिनों का अस्वशन दिया है अगर दो दिनों में परीक्षा परिणाम सुधारा नही गया तो हम बड़ा आंदोलन भी करेगे, एनएसयूआई छात्र हित में न कभी डरा है न डरेगा जो जो शिक्षक छात्रों से जबरदस्ती पैसा वसूल कर उनको पास करवाने का काम कर रहे हैं उनके खिलाफ हम जल्द ही कलेक्ट्रेट जाकर कलेक्टर मैडम से भी मुलाकात करेंगे क्योंकि यह जो छात्र सरकारी महाविद्यालय में पढ़ रहे हैं सब सामान्य परिवार से आते है सभी फीस दे रखी है तो अगल से पैसे क्यों दे,धरना प्रदर्शन में जिला अध्यक्ष पंकज उपाध्याय,उपाध्यक्ष सत्यम मिश्रा,अभिराज बौद्ध,इकाई अध्यक्ष शिवम मिश्रा,लक्ष्मी मिश्रा,सोशल मीडिया के विधानसभा अध्यक्ष अनुराग सिंह,सौरभ द्विवेदी शिवमडी,यशराज शर्मा, आदि सैकड़ों की संख्या में छात्र मौजूद रहे,।

देश की आजादी के महान योद्धा नेताजी सुभाष चंद्र बोस की 128 वीं जयंती पर ग्राम बुढ़वा में श्रद्धांजलि कार्यक्रम संपन्न

रीवा(पुष्पांजली टुडे)।

देश की आजादी के आंदोलन के महान योद्धा , आजाद हिंद फौज के सर्वोच्च सेनापति नेताजी सुभाष चंद्र बोस की 128 वीं जयंती के अवसर पर जिला मुख्यालय से 25 किलोमीटर दूर रायपुर कर्चुलियान विकासखंड अंतर्गत ग्राम बुढ़वा के प्रतिष्ठित किसान ज्ञानेंद्र पटेल के खलिहान में पूर्व सरपंच सुरेंद्र पटेल की अध्यक्षता में विचार संगोष्ठी सम्पन्न हुई। उपस्थित जनों के द्वारा नेताजी सुभाष चंद्र बोस के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की गई। कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ अधिवक्ता इंद्रमणि सिंह ने किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि राज्यसभा सदस्य राजमणि पटेल ने कहा कि नेताजी सुभाष चंद्र बोस का समूचा जीवन क्रांतिकारी रहा । उन्होंने तुम मुझे खून दो , मैं तुम्हें आजादी दूंगा का इंकलाबी नारा दिया था। देश की आजादी के लिए लड़ते लड़ते वह शहीद हो गए। श्री पटेल ने कहा कि देश में वर्तमान समय में अघोषित आपातकाल की स्थिति है। विपक्षी संसद सदस्यों की आवाज को भाजपा सरकार के द्वारा दबाया जा रहा है। अकारण सदस्यता छीनने का गंदा खेल हो रहा है। हम कई सांसदों पर विशेषाधिकार हनन का मामला बना दिया गया है। राज्यसभा सदस्य श्री पटेल ने कहा कि देश में चंद अमीरों के इशारे पर सरकार चल रही है। इनकी संपत्ति में भारी इजाफा हो रहा है वहीं देश के गरीब वर्ग को 5 किलो अनाज की सीमा में बांधकर गुलाम बनाया जा रहा है। नेताजी सुभाष चंद्र बोस के सपने को साकार करने देश की जनता को गुलामी के इस मकड़जाल से बाहर निकालने के लिए उन्हें आर्थिक एवं सामाजिक रूप से सशक्त बनाना होगा।संगोष्ठी में अन्य वक्ताओं में लोकतंत्र सेनानी बृहस्पति सिंह , समता संपर्क अभियान के संयोजक लोकतंत्र सेनानी अजय खरे , लोकतंत्र सेनानी माहेश्वरी त्रिपाठी , रामायण पटेल , गांधी विचार के मंच के संयोजक रामेश्वर गुप्ता , जिला पंचायत रीवा के सदस्य कामरेड लालमणि त्रिपाठी आदि ने नेताजी सुभाष चंद्र बोस के बारे में ऐतिहासिक जानकारी उपलब्ध कराई। वक्ताओं ने कहा कि जय हिंद का नारा सुभाष चंद्र बोस ने दिया था। यह नारा आजादी के आंदोलन के दौर से लेकर आज तक हर भारतवासी के दिलों और जुबान पर है। यह जानकारी दी गई कि 21 अक्टूबर 1943 में सुभाषचन्द्र बोस ने आजाद हिन्द फौज के सर्वोच्च सेनापति की हैसियत से सिंगापुर में स्वतंत्र भारत की अंतरिम (अस्थायी) सरकार की स्थापना की। इस सरकार को कई देशों के द्वारा मान्यता मिली। अंग्रेजी हकूमत के खिलाफ सुभाष चंद्र बोस की यह खुली चुनौती थी। 4 जून 1944 को सुभाष चन्द्र बोस ने सिंगापुर रेडियो से एक संदेश प्रसारित करते हुए महात्मा गांधी को %देश का पिता% (राष्ट्रपिता) कहकर संबोधित किया। आज महात्मा गांधी को पूरे देश ने राष्ट्रपिता के रूप में स्वीकार किया है। सुभाष चंद्र बोस धर्म के आधार पर नफरत फैलाने वाले संगठनों के बेहद खिलाफ थे। जिस समय वह कांग्रेस के अध्यक्ष थे उन्होंने साम्प्रदायिक संगठनों एवं नफरत फैलाने वाले लोगों को कांग्रेस में आने से रोक दिया था। सुभाष चंद्र बोस ने आजाद हिंद फौज में गांधी ब्रिगेड , नेहरू ब्रिगेड और लक्ष्मीबाई ब्रिगेड का गठन किया था। कैप्टन लक्ष्मी सहगल को महिला ब्रिगेड की कमान सौपी गई थी। उनकी सेना में सभी वर्ग के लोगों को प्रमुखता मिली थी। आजाद हिंद फौज के प्रखर योद्धा शाहनवाज खान , गुरु बख्श सिंह ढिल्लन और प्रेम सहगल की तिकड़ी के खिलाफ अंग्रेजों के द्वारा चलाए गए मुकदमें की पैरवी कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं वकीलों के द्वारा की गई और उनकी सम्मानजनक रिहाई हुई। वक्ताओं ने कहा कि देश को विदेशी दासता से मुक्ति जरूर मिली है लेकिन गुलामी से छुटकारा नहीं मिला है। देश में महंगाई ,बेरोजगारी, कुपोषण , सामाजिक आर्थिक गैर बराबरी, महिलाओं के प्रताड़ना के मामले बड़ी चुनौती है। देखने में आ रहा है कि धार्मिक विश्वास अंधभक्ति में बदल रहे हैं , जो देश हित में नहीं है। चुनाव में जाति और धर्म के आधार पर वोट मांगा जाना सरासर गलत है।बाहर से आए हुए अतिथियों के भोजन की व्यवस्था पूर्व सरपंच श्रीमती सोम प्रभा पटेल एवं युवा किसान नेता देवेंद्र पटेल के यहां हुई। जहां यह जानकारी हुई कि पूरा गांव जल समस्या से जूझ रहा है। इस संबंध में जिला प्रशासन से विशेष ध्यान दिए जाने का अनुरोध किया गया है।संपन्न कार्यक्रम में प्रमुख रूप से रीवा से पधारे कामरेड अरविंद त्रिपाठी ,अनिल सिन्हा के अलावा ग्राम बुढ़वा के रजनीश पटेल, राकेश पटेल ,अक्षय कुमार साकेत, रामनरेश मिश्रा ,रामचंद्र शर्मा, पुष्पराज पटेल, शुभकरण पटेल ,राज बहादुर पटेल , रमेश कुमार पटेल ,रामावतार पटेल, नरेश कुमार पटेल, तेजभान पटेल, अखिलेश पटेल ,चंद्रिका पटेल ,रामनरेश मिश्रा, पुष्पेंद्र पटेल ,शिव शंकर पटेल , मनसुख लाल पटेल , धीरेंद्र पटेल, सत्येंद्र ,श्याम लाल पटेल , शुभकरण पटेल ,राजकुमार पटेल, संतोष पटेल, शुभम पटेल ,पुष्पराज पटेल , रामानुज पटेल आदि की भागीदारी रही।

राम लला जन्म भूमि के सवाल...!*

जो सदियों से अनुत्तरित थे
राम लाल जन्म भूमि के सवाल
उन सवालों में भी थे कई सवाल..!
सवाल प्रतिष्ठा का
सवाल प्रतीक्षा का
सवाल बलिदानों का
जो पीढ़ी दर पीढ़ी हम देते आए थे
सवाल त्याग का था
सवाल तपस्या का भी था
सवाल धैर्य का था
सवाल अधिकार का भी था
सवाल विरासत का
सवाल वैभव का
सवाल गौरवशाली इतिहास का
सवाल आध्यात्मिक अस्मिता का
और सबसे बड़ा सवाल
अपने ही देश में
अपने अस्तित्व को जीवित रखने का
आज तक हम लज्जित थे
कि भारतवर्ष से उसकी आत्मा
उसके राम का निष्कासन
उसके अपनी जन्मभूमि से
राज महलों के उत्तराधिकारी को
अपने ही अस्तित्व को सिद्ध करना,
त्रेता में मर्यादा की रक्षा के लिए वैभव को ठुकराने वाले के लिए
कलियुग में संतों ने साक्ष्य दिये
तब जाकर मानव ने सबके आराध्य श्री राम के हक में निर्णय लिए,
5 अगस्त 2020 का दिन
मंदिर भूमि पूजन का दिन था
और अब 22 जनवरी 2023
दिव्य और भव्य मंदिर में
श्री राम के बिराजने का दिन
जैसे कलियुग में त्रेतायुग आया हो
कौन बना इन अवसरों का निमित्त
देश कैसे स्मरण रखेगा इस संयोग को
ये कथा भी संभवतः पूर्व निर्धारित हो
इसका यश भी हमारे यशस्वी
प्रधानमंत्री को मिलना तय हो..!
अब सभी प्रश्नचिन्हों के पटाक्षेप का दिन है
दिन है आज हमारे राजीव लोचन के नयनाभिराम मूर्ति के दर्शन का,
दिन है आज सरयू के संताप हरण का
दिन है स्वप्नों के वरण का
आज दिन है उस छबि के निहारने का
जो आंखो को शीतलता
और दिलों में शांति प्रदान कर रही है
आज मां कौशल्या की उस अवस्था का भान हो रहा है
जब राम को चौदह वर्ष के बाद वनवास से लौटने पर हुई होगी
उस मां की प्रतीक्षा चौदह वर्ष की थी,
प्रतीक्षा उर्मिला की
अपने सर्वस्व से मिलन की
प्रतीक्षा भरत की
षडयंत्र के कलंक से मुक्ति की
प्रतीक्षा सिंहासन की
अपने उत्तराधिकारी की
उनकी प्रतीक्षा चौदह वर्ष की थी
प्रतीक्षा शबरी की
प्रतीक्षा अहिल्या की
जो निष्कलंक होते भी त्याज्य रही
और सबसे अधिक प्रतीक्षा तो स्वयं राम और सीता ने की है
कभी हरण ने विरह दिया तो कभी कर्तव्य ने।
वह त्रेता युग था
इसलिए प्रतीक्षा भी सीमित रही
ये कलि का युग है
यंहा भारत की प्रतीक्षा 5 सौ वर्षों की हो गई
माँ को सिर्फ अपने मन को धैर्य बंधाना था
यहां राम को उनके निष्कासन से
पुनः उनके मंदिर में सजाना था
कुछ तो राम जी ने भी तय किया था
तभी तो ये यात्रा इतनी लंबी रही
कलियुग में जब अधर्म चरम पर होने को था
तब राम जी ने चहूं दिशाओं को राम में रमा दिया
युग परिवर्तन की यह प्रक्रिया
असंभव को अवश्यसंभावी को उद्धत कर रही है

राम तो बहाना है, संविधान और गणतंत्र पर निशाना है!!

सत्ता और धर्म को अलग रखने को लेकर बहसें आजादी की लड़ाई के तीखे दमन के बीच भी चलीं। अपनी हर प्रार्थना सभा में रघुपति राघव राजा राम गाने और गवाने वाले, एक जहरीली विचारधारा से मंत्रबिद्ध उन्मादी हत्यारे की पिस्तौल से निकली गोलियां खाने के बाद जिनके मुंह से आखिरी शब्द हे राम निकले वे पक्के हिन्दू महात्मा गांधी भी कहते थे कि राज्य का कोई धर्म नहीं हो सकता, भले उसे मानने वाली आबादी 100 फीसदी क्यों न हो।अयोध्या में अभी तक अधबने मॉदिर को लेकर देश भर में चलाई जा रही मुहिम की श्रृंखला में मध्यप्रदेश सरकार के धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व विभाग के अपर मुख्य सचिव के हस्ताक्षरों से 12 जनवरी को समस्त कलेक्टरों के लिए एक आदेश जारी किया है। इस आदेश में उन्होंने राम मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा समारोह के तारतम्य में 16 से 22 जनवरी तक सभी सरकारी भवनों, स्कूलों, मंदिरों, गांवों, कस्बों, शहरों में किये जाने वाले आयोजनों को सूचीबद्ध करते हुए कलेक्टरों को उनके प्रबंधन के निर्देश दिए हैं। इस तरह पूरे सप्ताह भर तक मध्यप्रदेश की सरकार, जिस काम के लिए उसे चुना गया है अपना वह सारा कामकाज छोड़कर, दीये जलायेगी, मन्दिर सजायेगी, भंडारे करवायेगी और सरकारी बिल्डिंगों पर झालरें लटकवायेगी। इस आशय के बाकायदा आदेश भी जारी कर दिए गए हैं। आदेश में प्रदेश के सभी कलेक्टरों से 9 काम करने के लिए कहा गया है। इन कामों में पहला काम 16 जनवरी से 22 जनवरी तक प्रत्येक मॉदिर में राम कीर्तन कराने, मॉदिरों में दीप जलाने और हर घर में दीपोत्सव के लिए आमजन को जाग्रत करने का है ।

इस पहले काम के अलावा बाकी के आठ कामों में हर नगर तथा हर गांव में राम मंडलियों के कार्यक्रम करवाना, हर शहर गांव के मुख्य मॉदिरों पर टीवी स्क्रीन लगाकर कार्यक्रम का लाइव प्रसारण कराना और इसमें लोगों की भागीदारी कराना, 22 जनवरी को सभी प्रमुख मॉदिरों में भंडारों का आयोजन कराना, मॉदिरों में साफ़-सफाई, दीप प्रज्ज्वलन के साथ ही %श्रीराम-जानकी आधारित% सांस्कृतिक आयोजन करवाना, शहरों में नगरीय विकास तथा आवास विभाग, गांवों में पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग द्वारा साफ़ सफाई के साथ सभी सरकारी इमारतों तथा स्कूल एवं कालेजों में साज-सज्जा करवाना, प्रदेश के सभी सरकारी कार्यालयों में 16 से 21 जनवरी विशेष सफाई अभियान और 21 से 26 तक झालरें लटकाने-लाइटिंग की व्यवस्था करवाना, 11 से 21 जनवरी तक प्रदेश के 20 जिलों में हो रही रामलीलाओं- श्रीरामचरित लीला समारोह- के लिए समस्त आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित करना शामिल हैं। कलेक्टरों को सौंपा गया नौवां काम है स्पेशल ट्रेनों तथा सड़क मार्गों से अयोध्या जा रहे तीर्थ यात्रियों के सम्मान/स्वागत की व्यवस्थाएं स्थानीय निकायों तथा स्थानीय जनों के सहयोग से सुनिश्चित करना।

भारतीय संविधान के तहत निर्वाचित, उसके अनुरूप चलने की शपथ लेकर सत्तासीन हुई सरकार का यह आदेश भारत दैट इज इंडिया में राजकाज चलाने की अब तक की परम्परा से एकदम अलग तो है ही खुद संविधान सम्मत प्रावधानों के प्रतिकूल और विरुद्ध भी है। भारत का संविधान धर्म और उसके साथ शासन के रिश्तों के बारे में एकदम साफ़-साफ़ प्रावधान करता है। संविधान के अनुच्छेद 25 से लेकर 28 तक में इस बारे में स्पष्ट रूप से निर्धारित किया गया है कि भारत का कोई भी एक आधिकारिक राज्य धर्म नहीं होगा। देश में रहने वाले हर व्यक्ति को किसी भी धर्म को मानने, उसके अनुरूप आचरण करने और अपने धर्म का प्रचार करने का अधिकार होगा। उसके इस अधिकार का संरक्षण करने की गारंटी संविधान देता है और कहता है कि ऐसा हो सके यह सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी सरकार की होगी। संविधान यह भी कहता है कि सरकार किसी भी एक धर्म के प्रति राग या द्वेष से काम नहीं लेगी, न किसी धर्म का विरोध किया जाएगा न ही किसी खास धर्म का समर्थन किया जाएगा।संविधान के अनुच्छेद 25 में प्रत्येक व्यक्ति को अपने धार्मिक विश्वास और सिद्धांतों का प्रसार करने का अधिकार दिया गया है। अनुच्छेद 27 के अनुसार नागरिकों को किसी विशिष्ट धर्म या धार्मिक संस्था की स्थापना या पोषण के बदले में कर-टैक्स- देने के लिये बाध्य नहीं किया जायेगा। वहीं अनुच्छेद 28 के द्वारा सरकारी शिक्षण संस्थाओं में किसी प्रकार की धार्मिक शिक्षा नहीं दिए जाने का प्रावधान किया गया है। अपनी बात को और स्पष्ट करते हुए यह अनुच्छेद कहता है कि राज्य-निधि से पूर्णतः पोषित किसी शिक्षा संस्था में कोई धार्मिक शिक्षा नहीं दी जाएगी। यह भी कि %राज्य से मान्यता प्राप्त या राज्य-निधि से सहायता पाने वाली शिक्षा संस्था में उपस्थित होने वाले किसी व्यक्ति को ऐसी संस्था में दी जाने वाली धार्मिक शिक्षा में भाग लेने के लिए या ऐसी संस्था में या उससे संलग्न स्थान में की जाने वाली धार्मिक उपासना में उपस्थित होने के लिए तब तक बाध्य नहीं किया जाएगा. जब तक कि उस व्यक्ति ने, या यदि वह अवयस्क है तो उसके संरक्षक ने, इसके लिए अपनी सहमति नहीं दे दी है।इस तरह से पहली नजर में ही मध्यप्रदेश सरकार का यह आदेश भारत के संविधान - जिसकी 75वीं सालगिरह की वर्ष इसी 26 जनवरी से शुरू हो रही है-का सिरे से उल्लंघन करने वाला है। कानून की भाषा में ऐसा कृत्य आपराधिक और दंडनीय माना जाता है।भारत का संविधान 251 पृष्ठों में लिखी 395 अनुच्छेद और 25 भागों में विभाजित, 12 अनुसूचियों में लिखे कुछ नियम कानूनों का संकलन नहीं है, यह कुछ पढ़े-लिखे समझदार लोगों द्वारा अपनी पसंद और रूचि से लिखी बातों का संग्रह भी नहीं है। यह शून्य में से अवतरित, नाजिल हुई अपौरुषेय किताब भी नहीं है; यह कोई दो सौ साल तक चली आजादी की लड़ाई में कुर्बान हुए शहीदों की अस्थि की कलम से उनके बहाए खून से लिखी गई इबारत है। उस. इंसानों के इतिहास की विराट लड़ाई में शामिल सभी धाराओं के आजाद भारत के स्वरूप के बारे में समझदारी का सार है। ह 5 हजार वर्षों की सभ्यता के हासिल अनुभवों का निचोड़ है। यह धर्माधारित राष्ट्र की बेहूदा और पागलपन की अवधारणा का धिक्कार और नकार है। यह भारत को दूसरा पाकिस्तान बनाने की कोशिश का अस्वीकार है।सत्ता और धर्म को अलग रखने को लेकर बहसें आजादी की लड़ाई के तीखे दमन के बीच भी चलीं। अपनी हर प्रार्थना सभा में रघुपति राघव राजा राम गाने और गवाने वाले, एक जहरीली विचारधारा से मंत्रबिद्ध उन्मादी हत्यारे की पिस्तौल से निकली गोलियां खाने के बाद जिनके मुंह से आखिरी शब्द हे राम निकले वे पक्के हिन्दू महात्मा गांधी भी कहते थे कि राज्य का कोई धर्म नहीं हो सकता, भले उसे मानने वाली आबादी 100 फीसदी क्यों न हो। धर्म एक व्यक्तिगत मामला है इसका राज्य के साथ कोई संबंध नहीं होना चाहिए। वे कहते थे कि राजनीति में धर्म बिलकुल नहीं होना चाहिए, मैं यदि कभी डिक्टेटर बना तो राजनीति में धर्म को पूरी तरह प्रतिबंधित कर दूंगा। देश में रामराज्य लाने की बात कहने वाले गांधी कहते थे कि मैं जिस रामराज्य की बात कहता हूं उसका मतलब राम का या धर्म का राज नहीं है, मैं जब पख्तूनों के बीच जाता हूं तो खुदाई राज और ईसाइयों के बीच जाता हूं तो गॉड के राज की बात करता हूं, इसका मतलब धार्मिक राज नहीं है, समता और सहिष्णुता का शासन है, नैतिक समाज का आधार है। उन्होंने बार-बार कहा कि धर्म राष्ट्रीयता का आधार नहीं हो सकता। धर्म और संस्कृति अलग-अलग है।गांधी अकेले नहीं थे- उनकी धारा के सभी नेता उनके साथ थे। उनकी रीति नीति से असहमत भी इस मामले में उनके साथ थे। भगतसिंह से लेकर समाजवादियों, वामपंथियों, जाति वर्ण के शोषण निर्मूलन की समर्थक पेरियार, डॉ अम्बेडकर जैसी धाराओं सहित सभी आन्दोलन और संगठन इस मामले में एकमत थे; इसी आम राय का नतीजा था कि जो पाकिस्तान की तर्ज पर भारत को भी धर्माधारित राष्ट्र बनाना चाहते थे, मुहम्मद अली जिन्ना से भी 20 साल पहले जो हिन्दुओं के लिए अलग राष्ट्र की मांग कर चुके थे, कुम्भ के मेले में बिछड़े जिन्ना के उन सहोदरों को भारत ने निर्णायक रूप से ठुकरा दिया था।पिछले दो सप्ताहों से आ रही खबरों से अब आम हिन्दुस्तानी भी समझ चुके हैं कि अयोध्या के आयोजन से उस हिन्दू धर्म का भी कितना संबंध है जिसके नाम से देश की लंका लगाने की यह विराट परियोजना लाई गई है। चारों शंकराचार्यों की भद्रा उतार रही है वह असाधारण निकृष्टता का एक उदाहरण है। अधबने मॉदिर के लिए खरीदी गई जमीन के घोटालों के लिए ज्यादा चर्चित, मोदी सरकार द्वारा गठित न्यास के सचिव चम्पत राय का इस मॉदिर को सभी भारतीयों, सभी हिन्दुओं का न मानना और इसे भारतीय धार्मिक परम्पराओं के सिर्फ एक छोटे से सम्प्रदाय- रामानंदी सम्प्रदाय- का बताना, शैव, शाक्त, संन्यासियों सहित सैंकड़ों धार्मिक धाराओं को इससे दूर रखना दूसरा उदाहरण है।ऐसे उदाहरण अनेक हैं जो इस बात को आईने की तरह साफ़ कर देते हैं कि यह धर्म के नाम पर अपनी राजनीतिक रोटियां सेंकने का धतकरम है।मगर जैसा कि अब पूरी तरह उजागर हो चुका है, यह सिर्फ वोट जुगाड़ने वाली चुनावी राजनीति तक सीमित खतरा नहीं है; यह राम के बहाने संविधान और गणतंत्र पर निशाने साधने की साजिश है। यह खुद इस शब्द के जनक सावरकर के मुताबिक़ जिसका हिन्दू धर्म की परम्पराओं और मान्यताओं के साथ कोई संबंध नहीं है उस हिंदुत्व पर आधारित हिन्दू राष्ट्र की स्थापना की ओर आगे बढ़ना है। एक ऐसा राज लाना है जिसमे शासन करने वाले मनु के कहे पर चलाएंगे, बाकी सब घंटा बजायेंगे।

संपादकीय

ईरान-पाक टकराव : विश्व शांति को नया खतरा

एक ओर रूस-यूक्रेन तथा इज़रायल-फिलीस्तीन संघर्ष थमने का नाम नहीं ले रहे हैं, दूसरी तरफ़ भारत के पड़ोसी मुल्क पाकिस्तान और ईरान के बीच टकराव शुरू हो गया है, जो विश्व शांति के लिये बड़ा खतरा बन सकता है। वैसे ईरान ने इसी के साथ अपने दो और मुल्कों पर हमले किये हैं। ये देश हैं सीरिया व इराक। इन हमलों की गम्भीरता को देखते हुए सुलह के प्रयासों की तत्काल ज़रूरत आन पड़ी है। पहले उल्लेखित संघर्षरत मुल्कों के बीच युद्धों के अपने-अपने कारण हैं, परन्तु ताज़ा लड़ाई (ईरान-पाक) की वजह एक दूसरे पर आतंकवाद को बढ़ावा देना है। दोनों देशों के बीच तल्ख़ी इस कदर बढ़ गई कि दोनों ने एक दूसरे के उच्चायुक्तों को अपदस्थ कर दिया है। वैसे युद्ध जिस भी कारण से हो रहा हो, आवश्यक है कि दोनों देश परस्पर संवाद से समस्या का निदान ढूंढ़े।मंगलवार को ईरान ने उससे लगे पाकिस्तान के बलूचिस्तान क्षेत्र में आतंकी समूह जैश-अल-अदल के दो ठिकानों पर मिसाइलों और ड्रोन से आक्रमण कर दिया। हमले के जवाब में ईरान पर एयर स्ट्राईक कर दी गई। खुद ईरान ने स्वीकारा है कि पाकिस्तानी हमले से उसके सिस्तान-बलूचिस्तान क्षेत्र में 7 लोग मारे गये हैं, जिनमें तीन महिलाएं और चार बच्चे हैं। इसके पहले भी 2016 में ईरान ने पाक सीमा में घुसकर मोर्टार हमले किये थे। इन दोनों देशों के बीच तकरीबन 900 किलोमीटर की सीमा लगती है। 2017 में पाक संरक्षित आतंकवादियों ने ईरान के 10 सुरक्षाकर्मियों को मार डाला था, तभी से दोनों देशों के बीच कई बार सम्बन्ध बिगड़ते भी रहे। ईरान एक शिया और पाकिस्तान सुन्नी मुसलमान देश है, जो उभय पक्षों के बीच खट्टे-मीठे सम्बन्धों का एक और कारण है। पाकिस्तान की सऊदी अरब से बढ़ती नज़दीकियां भी ईरान को रास नहीं आ रही हैं, जबकि 1965 में भारत-पाक युद्ध में ईरान ने पाकिस्तान का साथ दिया था।

पाकिस्तान पर ईरान का तो आतंकवाद को बढ़ावा देने का आरोप है ही, खुद पाकिस्तान का कहना है कि ईरान में सक्रिय बलूचिस्तान लिबरेशन आर्मी (बीएलए) और बलूचिस्तान लिबरेशन फोर्स (बीएलएफ) को उस देश के द्वारा बढ़ावा दिया जा रहा है जो पाकिस्तान में सरकार विरोधी कार्रवाइयां कर रहे हैं। पाकिस्तान ने कथित रूप से इन्हीं संगठनों के ठिकानों पर हमले किये हैं। पाकिस्तान की उत्तर में बलूचिस्तान स्थित है जिसकी सीमा अफगानिस्तान से लगती है और पश्चिम में ईरान से सटी हुई है। प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध बलूचिस्तान को उसके इस संसाधन का लाभ नहीं मिल पाता और वहां से निकलने वाले खनिजों का फायदा पाकिस्तान के पंजाब इलाकों को ज्यादा मिलता है। इसलिये बलूचिस्तान के लोग सरकार से नाराज़ हैं और वे अलग होने की मांग तक करते आये हैं। जबसे पाकिस्तान ने इन खनिजों को चीन के लिये भी खोल दिया है, बलूचियों की नाराज़गी और ज्यादा बढ़ गई है। बीएलए और बीएलएफ जैसे संगठन पाकिस्तानी व चीनी सेना के जवानों को निशाना बना रहे हैं। ईरान का मानना है कि पाकिस्तान, सीरिया एवं इराक तीनों ही आतंकी गतिविधियों को बढ़ावा दे रहे हैं इसलिये उसने अपने हितों की रक्षा के लिये तीनों मुल्कों पर हल्ला बोला है।

दावोस में जारी वर्ल्ड इकानॉमिक फोरम में हिस्सा ले रहे ईरान के विदेश मंत्री ने कहा कि जैश-अल-अदल पाकिस्तान की धरती से ईरान के खिलाफ सक्रिय आतंकी संगठन है। ईरान लम्बे समय से कहता आया है कि पाकिस्तान उनके देश के खिलाफ काम कर रहे आतंकी समूहों को पनाह और प्रोत्साहन देता है। कई कार्रवाइयों की उसने जिम्मेदारी भी ली है। इसने ईरान में 2013 में बड़ा हमला किया था। ईरान के अलावा अमेरिका, जापान, न्यूजीलैंड आदि कई देशों ने इसे आतंकवादी संगठनों की सूची में डाल रखा है। वैसे दोनों देशों (ईरान-पाकिस्तान) के बीच कभी नरम तो कभी गरम वाले सम्बन्ध होते हैं। कुछ अरसा पहले दोनों देशों ने संयुक्त युद्धाभ्यास भी किया था लेकिन आतंकवाद, नशीले पदार्थों की तस्करी जैसे मामलों को लेकर खटास भी हो जाती है। हाल के वर्षों में रिश्ते इस कदर बिगड़ जाने की मुख्य वजह बलूचिस्तान के सीमावर्ती शहर पंजगुर में जैश-अल-अदल को शरण मिलना है।

मथुरा ईदगाह पर सर्वोच्च न्यायालय का आदेश अदालती रूख में कोई बदलाव नहीं

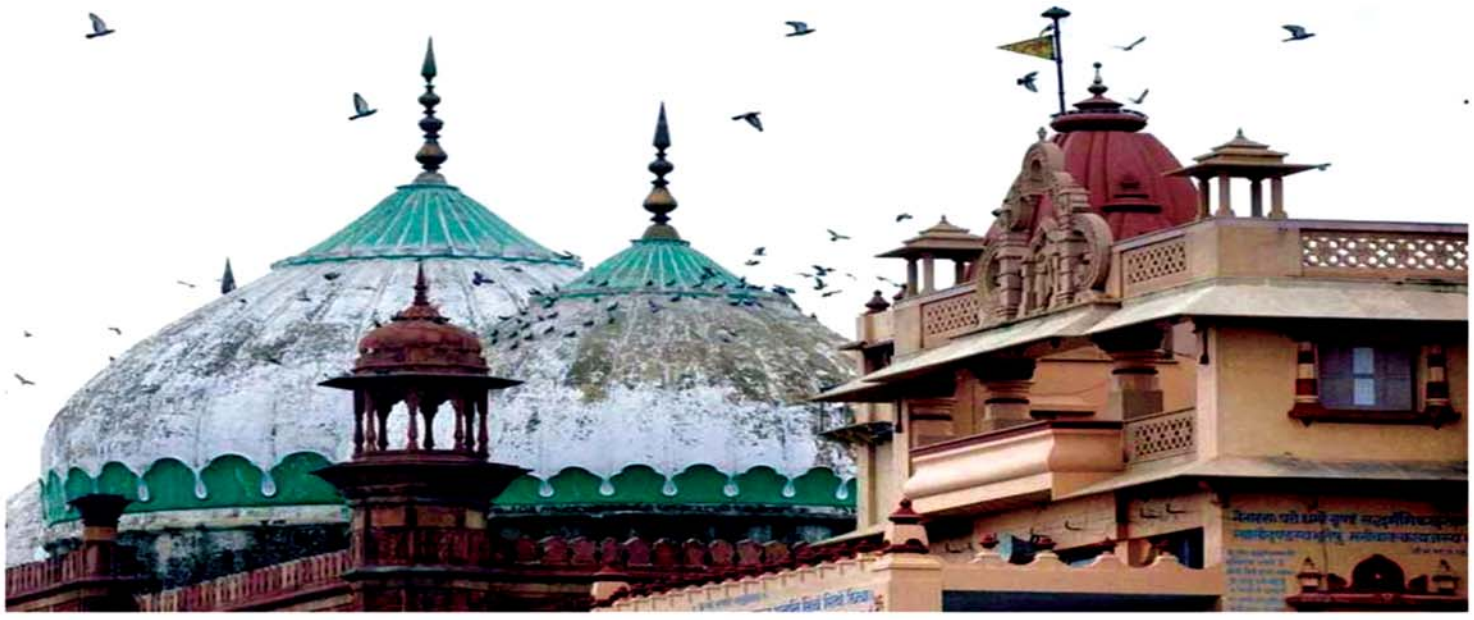

यह लगभग एक स्थापित मानदंड बन गया है और इसलिए इसका असर उन सभी मामलों पर पड़ेगा जहां पूजा स्थलों के स्वामित्व को इस आधार पर विवादित किया गया है कि वर्तमान संरचनाएं उन मॉदिरों के खंडहरों पर बनाई गई थीं जो कभी उन स्थानों पर थे। लेकिन इस मुद्दे पर राजनीतिक लड़ाई जारी रहेगी, जैसा कि अयोध्या में नये राम मॉदिर के मामले में स्पष्ट है।मथुरा में कृष्ण जन्मभूमि-शाही ईदगाह परिसर का सर्वेक्षण करने के लिए एक अधिवक्ता आयोग नियुक्त करने के इलाहाबाद उच्च न्यायालय के फैसले पर रोक लगाने वाला सर्वोच्च न्यायालय का आदेश विवादित पूजा स्थलों के संबंध में न्यायपालिका के सामान्य दृष्टिकोण में कोई खास बदलाव नहीं करता है, जो कि अन्य मुद्दों के बजाय आस्था के पक्ष में अधिक जोर देता है।भारत के शीर्ष अदालत का आदेश विवादास्पद दावों के बारे में ठोस मुद्दों के बजाय तकनीकी पहलुओं पर आधारित है, जिसमें 1991 के पूजा स्थल अधिनियम को चुनौती भी शामिल है, जिसे अब विभिन्न न्यायिक फैसलों के अनुसार अनुल्लंघनकारी बाध्यता नहीं माना जाता है, जिसमें इससे संबंधित विवाद भी शामिल है। अयोध्या में रामजन्मभूमि, दरअसल, उस मामले में ऐतिहासिक फैसले ने भविष्य के लिए एक नया खाका तैयार किया है, जिसे आने वाले दिनों में अपनाने में बढ़ोतरी की उम्मीद है।

यह प्रासंगिक है कि सर्वोच्च न्यायालय ने केवल सर्वेक्षण करने के लिए आयोग नियुक्त करने के उच्च न्यायालय के आदेश पर रोक लगाई है, मुख्य मुकदमे में कार्रवाई जारी रखने पर नहीं। अदालत ने स्पष्ट किया, %हम पूर्ण स्थगन जारी नहीं कर रहे हैं, % यह कहते हुए कि स्थगन आदेश केवल ईदगाह स्थल के सर्वेक्षण के लिए एक अधिवक्ता आयोग स्थापित करने के उच्च न्यायालय के आदेश के कार्यान्वयन से संबंधित है।बसे महत्वपूर्ण मुद्दा यह है कि क्या 1991 का अधिनियम प्रतिद्वंद्वी दलों के दावों के संबंध में किसी भी बदलाव को रोकता है? इलाहाबाद उच्च न्यायालय के समक्ष एक दर्जन से अधिक याचिकाएं लंबित हैं, जिसमें हिंदू पक्ष का दावा है कि मस्जिद का निर्माण सम्राट औरंगजेब ने कृष्ण के जन्मस्थान की भूमि पर एक मंदिर को ध्वस्त करके किया था।

सर्वोच्च न्यायालय ने विवादित ढांचे पर सर्वेक्षण करने के लिए एक आयोग की नियुक्ति के लिए हिंदू पक्ष के आवेदन में खामियां निकाली हैं। बात उस बिंदु से आगे नहीं बढ़ी है कि %क्या कोई आवेदन इस तरह किया जा सकता है? आवेदन को लेकर हमें आपत्ति है। प्रार्थना देखें। यह बहुत अस्पष्ट है। इसे पढ़ें। आप इस तरह सर्वव्यापी अनुप्रयोग नहीं बना सकते। आपको इस बारे में बहुत स्पष्ट होना होगा कि आप स्थानीय आयुक्त से क्या चाहते हैं,' दो सदस्यीय पीठ का नेतृत्व कर रहे न्यायमूर्ति संजीव खन्ना ने कहा।ले साल मई में इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने श्रीकृष्ण जन्मभूमि-शाही ईदगाह मस्जिद विवाद पर सभी मुकदमों को अपने पास स्थानांतरित कर लिया था। मस्जिद समिति ने इस आधार पर स्थानांतरण को चुनौती देते हुए शीर्ष अदालत का दरवाजा खटखटाया कि विवाद के संबंध में सभी मुकदमे लंबित हैं और उच्च न्यायालय को इस बीच दूसरे पक्ष को अंतरिम राहत नहीं देनी चाहिए थी। सुप्रीम कोर्ट केवल उस तर्क को कायम रख रहा था। अन्य सभी मुद्दों पर अभी अंतिम निर्णय होना बाकी है।अनिवार्य रूप से, देश के मुसलमानों ने इसी तरह के विवादों के संबंध में अपना कारण उस दिन खो दिया जब सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश दीपक मिश्र की अध्यक्षता वाली पीठ ने इस मुद्दे को सूलझाया कि मुस्लिम पूजा के आवश्यक रूप के बारे में 1994 के फैसले का उल्लेख किया जाये या नहीं। वह निर्णय इस निष्कर्ष पर आधारित था कि मस्जिद में प्रार्थना करना इस्लाम का अनिवार्य हिस्सा नहीं है और मुसलमानों द्वारा नमाज खुले में भी पढ़ी जा सकती है।

सितंबर 2010 में अयोध्या भूमि विवाद में इलाहाबाद उच्च न्यायालय के फैसले पर इस फैसले का बड़ा प्रभाव पड़ा, जब तीन न्यायाधीशों की पीठ ने विवादित स्थल को हिंदुओं, मुसलमानों और निर्मोही अखाड़े के बीच विभाजित कर दिया।यह लगभग एक स्थापित मानदंड बन गया है और इसलिए इसका असर उन सभी मामलों पर पड़ेगा जहां पूजा स्थलों के स्वामित्व को इस आधार पर विवादित किया गया है कि वर्तमान संरचनाएं उन मॉदिरों के खंडहरों पर बनाई गई थीं जो कभी उन स्थानों पर थे। लेकिन इस मुद्दे पर राजनीतिक लड़ाई जारी रहेगी, जैसा कि अयोध्या में नये राम मॉदिर के मामले में स्पष्ट है। हालांकि वर्तमान विवाद का मूल मुद्दा भाजपा द्वारा राजनीतिक उद्देश्यों के लिए अभिषेक कार्यक्रम का उपयोग करना है, लेकिन ध्वस्त बाबरी मस्जिद धर्मनिरपेक्षता को एक प्रतीक के रूप में प्रस्तुत करना जारी रखे हुए है। फिर भी वर्तमान व्यवस्था में धर्मनिरपेक्षता का स्वाद कम होने से पासा पुरानी संरचनाओं के पक्ष में भारी पड़ गया है।

अटल बिहारी वाजपेयी एबीवी ङ्क आई. आई. आई. टी. एम. ग्वालियर के लेडीज क्लब के द्वारा श्री राम लला की वंदना एवं द्वीप प्रज्ज्वलन

अनिल कुशवाह
पुष्पांजलि टुडे

ग्वालियर-एबीवी आई.आई. आई. टी. एम. ग्वालियर के लेडीज क्लब के द्वारा श्री राम लला प्राण प्रतिष्ठा के उपलक्ष में श्री राम जी की पूजन आरती एवं दीप प्रज्वलन किया गया । इस अद्वितीय एवं अनुपम अवसर पर लेडीज़ क्लब की प्रेसिडेंट श्रीमती वंदना सिंह सेक्रेटरी श्रीमती माधुरी पटनायक एवं क्लब के सदस्य श्रीमती रूबी सिंह, ज्योति अग्रवाल, दीपा सिंह सिसोदिया, आरती, रिचा एवं अन्य उपस्थित रहे। सभी ने सर्वप्रथम श्री राम जी की आराधना कर एवं भजन गाकर इस अद्वितीय क्षण को अविस्मरणीय बनाया। इस उपलक्ष्य में सदस्यों के द्वारा मनोरम रंगोली भी बनाई गई, जिसे पुष्प एवं द्वीपों से सुसज्जित किया गया । सभी ने श्री राम जी का हमारे जीवन पर प्रभाव* के बारे में अपने-अपने विचार व्यक्त किए एवं मनोरम भजन प्रस्तुत किए। इस उपलक्ष्य में प्रेसिडेंट वंदना सिंह ने अपने उद्बोधन में बताया कि ऐसा लग रहा है कि एक बार फिर से हम कलयुग की जगह त्रेता युग में प्रविष्ट हो रहे हैं । उन्होने अपने पूर्व के अयोध्या प्रवास के दौरान अपने साथ हुए ईश्वरीय साक्षात्कार रूपी अनुभवों को साझा कर सभी को प्रेरित किया। श्रीमति सिंह

ने बताया कि अगर हम सच्चे हृदय से प्रभु को स्मरण करेंगे तो हमें उनके होने का अनुभव अवश्य ही होगा। उन्होंने बताया कि जो रौनक हमें मथुरा काशी में दिखाई देती है वही आज हमें अयोध्या में भी श्री राम के प्रतिष्ठित होने के बाद नजर आएगी और हम भाग्यशाली हैं कि हम ऐतिहासिक क्षण के साक्षी बन रहे हैं, अगर हम श्री राम के व्यक्तित्व के एक भी आचरण को अपना अपना लें तो हम अपने को बहुत ही धन्य समझेंगे। उन्होंने उनके प्रेरणा स्वरूप चरित्र का वर्णन कर कहा कि हमें कुछ ना कुछ श्री राम के चरित्र से धारण कर इस संसार को खुशहाल बनाना चाहिए उनके द्वारा श्री राम जी को समर्पित स्वरचित कविता प्रस्तुत की गई जिसके बोल इस प्रकार हैं ङ्क ÷राम-राम जय राजा राम, राम राम जय राजा राम, भँवरों से तितली कहती , हर पत्ती पर लिख दो राम, फूलों की डाली झुक झुक कर छूना चाहे अयोध्या धाम, युग बदले ये चाह सभी की, समय की धारा में श्री राम, कलयुग को अब विदा करो, त्रेता से आ रहे हैं राम, स्वागत में तुम द्वीप जलाओ, होली और दीवाली मनाओ, नाचो गाओ झूम झूम के, देखो आ रहे हैं श्री राम÷। सभी सदस्यों ने श्री राम के अपने जीवन में उपस्थित होने के अनुभवों को साझा किया। इन अनुभवों को सुनकर सभी भावविहवल हो उठे। लेडीज क्लब के सदस्यों ने एक सच्चे भाव से श्री राम की आराधना कर उन्हें आमंत्रित किया क्योंकि भगवान तो सर्वव्यापी है एवं सच्चे भाव के आकांक्षी हैं। श्रीमती माधुरी पटनायक ने श्री राम जी के भजन की एक बहुत ही मनमोहक प्रस्तुति देकर संपूर्ण वातावरण को राममय बना दिया । उन्होंने भी श्री राम जी की पौराणिक कथा सुना कर इस भाव को प्रकट किया कि भगवान तो बस भाव के भूखे होते हैं, हम उन्हें अगर अपने घर से ही सच्चे भाव से स्मरण करेंगे तो अवश्य ही सुनेंगे, इसके लिए हमें तीर्थ करने की आवश्यकता नहीं है। श्रीमति आरती ने कंठस्थ राम चौपाईयों का गायन प्रस्तुत किया। इसके पश्चात संस्थान परिसर के मंदिर में जाकर सभी ने पूजा अर्चना कर भोग लगाकर द्वीप प्रज्वलित किए।

बुद्धि बूस्टर का 5th वैदिक अबेकस नेशनल चैंपियनशिप का आयोजन

वैदिक मैथ्स के 400 से अधिक बच्चों ने लिया प्रतिस्पर्धा में भाग

अनिल कुशवाह
पुष्पांजलि टुडे

शिवपुरी- रविवार को 5ह्लद्ध वैदिक अबेकस नेशनल चैंपियनशिप की अवार्ड और ग्रेजुएशन सेरेमनी शिवपुरी मध्य प्रदेश नक्षत्र गार्डन में आयोजित की गई। बुद्धि बूस्टर 5ह्लद्ध वैदिक अबेकस नेशनल चैंपियनशिप में वैदिक अबेकस व वैदिक मैथ्स के 400 से भी अधिक बच्चों ने इस प्रतिस्पर्धा में भाग लिया जिसमें भारत के कई राज्यों से और साथ ही में विदेश (दुबई, अमेरिका, सिंगापोर, इजिप्ट आदि) के बच्चे भी इस प्रतियोगिता में सम्मिलित हुए । यह प्रतियोगिता दो मोड ऑनलाइन एवं ऑफलाइन मैं आयोजित की गई थी यह प्रतियोगिता उम्र के अनुसार अलग-अलग ग्रुप में विभाजित की गई थी । इस प्रतियोगिता में वैदिक अबेकस की प्रतियोगिता 7 लेवल में विभाजित थी और वैदिक मैथ्स की प्रतियोगिता दो लेवल में विभाजित थी । इस प्रतियोगिता में वैदिक अबेकस के बच्चों को 7 मिनट में जटिल सवालों को हल करना था जिसमें लेवल अनुसार 200 से लेकर 300 तक सवाल जैसे प्लस,माइनस, गुणा भाग, दशमलव 7 मिनट में हल करने थे । और वेदिक मैथ में लेबल अनुसार 100 सवाल जैसे परसेंटेज ,क्यूबरूट, स्क्वायर रूट, एवरेज,फ्रैक्शन मल्टीप्लिकेशन, डिविजन, एडिशन 10 मिनट में हल

करने थे ।बुद्धि बूस्टर की 5ह्लद्ध वैदिक अबेकस नेशनल चैंपियनशिप में बुद्धि बूस्टर के चैनल पार्टनर भी सम्मिलित हुए। जिसमें धौलपुर से दीपा अग्रवाल जी, कोटा से रेखा गुप्ता जी, खरगोन से हर्षाली पंडित जी, दिल्ली से रश्मि गुप्ता जी, मथुरा से पूनम गर्ग जी, कोटा से आयुषी जैन जी, भी सम्मिलित हुए।इस प्रतियोगिता में स्पेशल गेस्ट के रूप में जिला पंचायत अध्यक्ष नेहा यादव जी, माउंट लिटरा डायरेक्टर हेमंत नागपाल जी और प्रिंसिपल प्रियल नागपाल जी, एस एस वी नर्सिंग कॉलेज डायरेक्टर सपना शर्मा जी, बाल न्यायालय मेंबर शोभा जी पुरोहित ,नगर पालिका उपाध्यक्ष सरोज जी व्यास, सांसद प्रतिनिधि रामजी व्यास,अग्रवाल समाज अध्यक्ष रामजी सिंघल, ब्यूरो चीफ टाइम्स नेटवर्क एंड ए एन आई तपन पाल अरोरा जी, न्यूज़ रिपोर्टर राजधानी तक आरती जैन जी, सरपंच दीवान सिंह यादव जी सम्मिलित हुए।बुद्धि बूस्टर की अवार्ड और ग्रेजुएशन सेरेमनी में बच्चों ने वैदिक गणित व वैदिक अबेकस मेथड का प्रयोग करके लाइव डेमो भी दिया जिसमें बच्चों ने मल्टीप्लिकेशन, डिविजन, स्क्वायर रूट, क्यूब रूट और टेबल जैसे गणनाओ को बिना किसी पेन पेपर के माध्यम से माता-पिता के सामने प्रस्तुत किया।बुद्धि बूस्टर के डायरेक्टर सचिन अग्रवाल एवं रीतेश गुप्ता ने बताया कि बुद्धि बूस्टर भारत की प्राचीन पद्धति जैसे वैदिक गणित और अबेकस को नये स्वरुप में बच्चों के लिए उपलब्ध करा रहा है जिससे बच्चों के मन में गणित के विषय के प्रति अधिक रुचि जागृत हो और गणित का डर बच्चों के मन से दूर हो जाए।वहीं बुद्धि बूस्टर की एकेडमिक हेड एवं ट्रेनर रोशनी गुप्ता ने बच्चों की इस प्रतिभा एवं सफलता पर सभी बच्चों को बहुत-बहुत बधाइयां दी एवं उन्हें मोटिवेट किया जिससे बच्चे भविष्य में और भी अधिक सफलताएं अर्जित करें।बुद्धि बूस्टर इंस्टिट्यूट विगत कई वर्षों से इस तरह के राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बच्चों को तैयार करता रहा है एवं सभी कंपटीशन एवं ओलंपियाड में इस इंस्टीट्यूट के बच्चे अपना हुनर राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर दिखाते रहे हैं।

बाल शिक्षा का अधिकार, किशोर न्याय और पॉक्सो अधिनियम पर राज्य स्तरीय कार्यशाला 24 जनवरी को

अनिल कुशवाह
पुष्पांजलि टुडे

शिवपुरी- मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव 24 जनवरी को भोपाल में बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम-2005, किशोर न्याय अधिनियम-2012 एवं पॉक्सो अधिनियम-2015 की जागरूकता के लिये आयोजित राज्य स्तरीय कार्यशाला का शुभारंभ करेंगे। समन्वय भवन में प्रात: 11 बजे प्रारंभ होने वाली कार्यशाला में स्कूल शिक्षा तथा परिवहन मंत्री श्री उदय प्रताप सिंह, महिला एवं बाल विकास मंत्री सुश्री निर्मला भूरिया और मध्यप्रदेश राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग के अध्यक्ष श्री देवेन्द्र मोरे उपस्थित रहेंगे।उल्लेखनीय है कि राज्य स्तरीय कार्यशाला का उद्देश्य जिला स्तर पर कार्यरत प्रशासनिक, सामाजिक एवं न्यायिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों को इन अधिनियमों के विषय में जागरूक कर उनके मध्य आपसी समन्वय स्थापित करना है। विशेषज्ञों द्वारा बाल शिक्षा का अधिकार, किशोर न्याय एवं पॉक्सो अधिनियम की जागरूकता के लिये प्रशिक्षण दिया जायेगा। इसमें प्रदेश के सभी जिलों से जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला-बाल विकास, जिला शिक्षा अधिकारी एवं जिला परियोजना समन्वयक, बाल कल्याण समिति के अध्यक्ष एवं सदस्य, किशोर न्याय बोर्ड के सदस्य तथा सामाजिक क्षेत्र से सेवा भारती, वनवासी कल्याण परिषद, जन-अभियान परिषद और रेडक्रॉस सोसायटी के प्रतिनिधि भी शामिल होंगे।

चाचौड़ा चंपावती नगरी में अयोध्या

योगेश शर्मा राजोरिया
पुष्पांजलि टुडे

दिनेश मुरली जी गोविंद पालीवाल एवं विनय जोशी और नगर के कई लोग उपस्थित रहे

में श्री राम प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर श्री राम लक्ष्मण सीता जी एवं हनुमान जी के स्वरूप के रूप में उत्सव पूरे मोहल्ले में दीपक जलाकर एवं श्री राम की आरती कर मनाया गया इस अवसर पर महेश चौधरी हरीश पालीवाल कैलाश वर्मा गिरिराज वर्मा संजू चौरसिया गणेश श्रीवास्तव दीपेश साहू गोलू सोनी दिलीप सोनी बज वर्मा

ग्राम बन्हेरी के पीड़ितों को लेकर किसान सभा ने सौपा ज्ञापन 29 जनवरी को सामूहिक उपवास करने का ऐलान

ग्वालियर-मध्य प्रदेश किसान सभा की ओर से आज कलेक्टर कार्यालय पर प्रदर्शन कर ज्ञापन सोपा गया।

अनिल कुशवाह
पुष्पांजलि टुडे

किसान सभा के कार्यालय से जारी विज्ञप्ति में बताया गया है कि विगत 9 अक्टूबर 2023 में ग्राम बनेरी के सरपंच की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी इस हत्या के बाद उपद्रवियों द्वारा गांव के करीब चार दर्जन मकानों को आग लगा दी गई थी कई ट्रैक्टरों को तोड़फोड़ की गई थी कृषि पंपों को नष्ट कर दिया गया था लूटपाट की गई थी इस घटना से भयभीत होकर करीब चार दर्जन परिवारों ने गांव से पलायन कर दिया था। आज इस घटना के करीब तीन माह बीत जाने के बाद भी पलायन कर गए ग्रामीणों को शासन गांव में नहीं बस सका है जिन लोगों ने आगजनी की थी लूटपाट की थी वह आज भी गांव में खुलेआम घूम रहे हैं जबकि पुलिस के रेकॉर्ड मे वह फरार हैं और जो पीड़ित हैं वह भयभीत होकर गांव से बाहर दर-दर की ठोकरे खा रहे हैं, रिश्तेदारों के गाँव मे शरण लिए है, ना उनके पास

खाने को है उनके मकान जला दिए गए हैं उनके मकान में लूटपाट कर दी गई है और अब उनके बच्चों की पढ़ाई भी चौपट हो चुकी है ऐसे में इन पीड़ित किसानों के दर्द को शासन प्रशासन तक पहुंचाने के लिए आज मध्य प्रदेश किसान सभा ने करीब एक सैकड़ा ग्रामीण जनों के साथ कलेक्टर कार्यालय पर प्रदर्शन कर ज्ञापन दिया। ज्ञापन घाटीगांव एसडीएम श्री इसरार खान ने लेकर समुचित कार्रवाई का भरोसा दिया उधर किसान सभा ने चेतावनी दी है कि अगर शीघ्र ही कोई कार्रवाई नहीं हुई तो आगामी 29 जनवरी को ग्रामीणों के साथ सामूहिक रूप से कलेक्टर कार्यालय पर उपवास किया जाएगाआज के इस प्रदर्शन में मध्य प्रदेश किसान सभा के राज्य महासचिव अखिलेश यादव, खेत मजदूर यूनियन के नेता रामबाबू जाटव राजेन्द्र सविता एवं बनेरी गांव के उमराव रावत, नंदन सिंह हाथे सिंह, राम राजा रावत, कोक सिंह रावत, राम किशन हेमंत सिंह रावत, नवल सिंह, जगदीश सिंह, अगर सिंह, सहित एक सेकडा महिला पुरुष शामिल थे।

मुरैना में ऐसा पहली बार हुआ की विवाह समारोह में नहीं किया गया एक भी हथियार से फायर

थाना करैरा जिला शिवपुरी में पदस्थ एएसआई शैलेंद्र सिंह चौहान के सुपुत्र अनिल सिंह चौहान का विवाह सुरुचि सिकरवार पुत्री राजेश सिंह सिकरवार निवासी मुरैना के साथ

संवादाता हरिओम परिहार

ग्वालियर , दिनांक 22 जनवरी 2024 को नवल किशोर सेवा सदन मुरैना में संपन्न हुई । मुरैना ,भिंड, ग्वालियर में अमूमन शादी समारोह में हर्ष फायर का प्रचलन है जिसमें बंदूक ,पिस्टल रिवाल्वर से अनगिनत फायर किए जाते हैं

लेकिन एएसआई शैलेंद्र सिंह चौहान ने शादी समारोह में सम्मिलित होने वाले वर पक्ष व वधू पक्ष व मेहमानों से प्रिंट मीडिया व इलेक्ट्रिक मीडिया के माध्यम से अपील की थी कि कोई भी हथियार लेकर ना आए और यदि आए भी तो अनावश्यक रूप से फायरिंग ना करें इसी का असर यह हुआ की शादी समारोह में एक भी फायर नहीं किया गया आपको हादसे से बचना है तो शादी समारोह व हर्ष के अवसर में सूझबूझ का परिचय दें हथियार से फायरिंग ना करें व किसी प्रकार के हादसे से बचें ।

आज रात कोहरा के कारण ट्रक डिवाइडर पर चढ़ा बड़ी घटना होने से बाल बाल बचे घटना स्थल न्यू बस स्टैंड मौ

पुष्पांजलि टुडे रिपोर्टर मौ डॉ बेताल सिंह गौड़

आज मौ नगर में अनियंत्रित होकर ट्रक डिवाइडर पर जाकर चढ़ गया रात को कोहरा अधिक होने के कारण न्यू बस स्टैंड पर ड्राइवर ने सीधी डिवाइडर में टक्कर मारी और ट्रक को काफी नुकसान हो गया और बहुत बड़ी घटना होने से बाल बाल बच गए

नवागत नगरा थाना प्रभारी रामकुमार गौतम ने चार्ज सभालकर समस्त स्टाप का परिचय प्राप्तकर आपसी बैठक की...

केशब पंडित जी अम्बाह

पोरसा... नगरा थाना के नवनियुक्त थाना प्रभारी रामकुमार गोतम ने कार्यभार संभालने के पश्चात रजौधा चौकी प्रभारी एवं समस्त स्टाप की विशेष बैठक ली। इस बैठक के दौरान उन्होंने जहां लंबित केसों का शीघ्र निपटान करने के लिये, वहीं उन्होंने आपराधिक घटनाओं पर कड़ी नजर रखने के भी अपने सहयोग के लिये कहा जिला पुलिस कप्तान शैलेन्द्र सिह चौहान ने रामकुमार गौतम की विशेष नियुक्ति की है। श्री गौतम ने अपने समस्त स्टाप को अपने क्षेत्रों में रात्रि के समय गश्त बढ़ाने के अलावा आम जनमानस के सहयोग से गांवों में पैट्रौलिग करने के लिए कहा। उन्होंने बताया कि किसी भी गांव में चोरी की घटना न घटे, इस की दृष्टि से सभी चौकी व बीट अधिकारी समय-समय पर अपने-अपने क्षेत्रों का निरीक्षण करेंगे और इसके साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों की अहम बैठक बुलाकर गांव में ठीकरी फहरा लगाने के लिए ग्रामीणों को प्रेरित करेंगे। उन्होंने बताया कि संभावित लोकसभा चुनाव को देखते हुए सभी गांवों के लाइसेंसी हथियार अभी जमा है ताकि चुनाव के दौरान किसी प्रकार की कोई गड़बड़ी न हो। नगरा थाना प्रभारी ने स्पष्ट तौर पर कहा कि जिला पुलिस कप्तान के सख्त आदेश है कि क्षेत्र में किसी प्रकार की नशे की तस्करी नहीं होनी चाहिए, इसलिए हम सबका दायित्व बनता है कि नशों की सप्लाई करने वालों पर कड़ी नजर रखें। अगर किसी भी क्षेत्र में नशे आदि की बिक्री होती है तो उस क्षेत्र में तुरंत कार्रवाई करें। उन्होंने नशों के बचाव को लेकर समय-समय पर अपने क्षेत्रों में विशेष सभाएं करें, ताकि ग्रामीण क्षेत्र के युवाओं को ऐसी असमाजिक बुराई से बचाया जा सके और जो युवा नशे में संलिप्त है, उसे मुख्यधारा से जोड़ा जा सके। इस बैठक के दौरान उन्होंने सभी बीटो के लंबित मामलों को लेकर विशेष समीक्षा की और इन मामलों के निपटान करने के लिये भी कहा। इस अवसर पर चौकी प्रभारी व स्टाप भी मौजूद था।

जनसुनवाई में सुनी गई आवेदकों की समस्याएं,जनसुनवाई में 35 आवेदकों ने दिया आवेदन

खरगोन जिले से मुन्ना खान ब्यूरो चीफ पुष्पांजलि टुडे

प्रत्येक मंगलवार को होने वाली जनसुनवाई की कड़ी में आज 23 जनवरी को कलेक्ट्रेट कार्यालय में जनसुनवाई का आयोजन किया गया। इसमें अपर कलेक्टर श्री जेएस बघेल ने अन्य अधिकारियों के साथ आवेदकों की समस्याओं को सुना और संबंधित अधिकारियों को उनका त्वरित निराकरण करने के निर्देश दिए। आज की जनसुनवाई में 35 आवेदकों ने अपने समस्याओं से संबंधित आवेदन प्रस्तुत किए हैं। जनसुनवाई में ग्राम मागरूल का निवासी उदयसिंह सालवे शिकायत लेकर आया था कि गांव के ही महेन्द्र सालवे एवं शीलाबाई सालवे ने आम रास्ते पर पत्थर व मिट्टी रखकर रास्ते को अवरूद्ध कर दिया गया है। जिससे आम लोगों को आने जाने में परेशानी होती है। अतः इस पर कार्यवाही कर रास्ते से अतिक्रमण हटाया जाए। बड़वाह तहसील के ग्राम नांदिया निवासी बलिराम कहार शिकायत लेकर आया था कि ग्राम पंचायत के सरपंच व सचिव द्वारा उसे नोटिस देकर अपना मकान हटाने कहा गया है। जबकि उस जमीन पर और भी लोगों के मकान बने हुए हैं। उसके द्वारा पंचायत में 5 हजार रुपए का अर्थदण्ड भी जमा किया गया है। इसके बाद भी उसे अतिक्रमण हटाने का नोटिस दिया गया है। ग्राम पंचायत सेगांव के ग्रामीण अपनी पंचायत के सचिव एवं खण्ड पंचायत अधिकारी को जिला पंचायत द्वारा ग्राम पंचायत की की जा रही जांच को देखते हुए हटाया जाए। जिससे वे ग्राम पंचायत की जांच को प्रभावित ना कर सके।जनसुनवाई में वार्ड क्रमांक 04 विनोबा मार्ग बड़वाह की निवासी पार्वती बाई तंवर शिकायत लेकर आयी थी कि उसे नगर पालिका द्वारा प्रधानमंत्री आवास स्वीकृत किया गया है। उसके आवास का काम 10 फीट की ऊंचाई तक हो चुका है। अब नगर पालिका वाले उसे आवास बनाने से रोक रहे हैं और निर्माण सामग्री ले जा ली गई है।

आयुष्मान भारत निरामयम में आँगनवाड़ी कार्यकर्ता, सहायिका, अन्य संविदा कर्मियों को शामिल करने के लिए मुख्य सचिव की अध्यक्षता में समिति गठित

खरगोन जिले से मुन्ना खान ब्यूरो चीफ पुष्पांजलि टुडे

राज्य शासन ने प्रदेश के शासकीय कर्मचारी/कार्यकर्ता, संविदा कर्मियों को प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना आयुष्मान भारत ÷निरामयम÷ में शामिल किये जाने के संबंध में मुख्य सचिव की अध्यक्षता में 9 सदस्यीय समिति का गठन किया है। समिति के सदस्य सचिव मुख्य कार्यपालन अधिकारी, आयुष्मान भारत निरामयम मध्यप्रदेश होंगे। समिति में अपर मुख्य सचिव लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, अपर मुख्य सचिव पंचायत एवं ग्रामीण विकास, अपर मुख्य सचिव वित्त विभाग, प्रमुख सचिव राजस्व विभाग, सचिव लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, सचिव सामान्य प्रशासन विभाग, प्रबंध संचालक राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन सदस्य होंगे।समिति प्रदेश के शासकीय कर्मचारी/कार्यकर्ता/संविदा कर्मियों को आयुष्मान भारत ÷निरामयम÷ प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के अंतर्गत, पूर्व में स्वीकृत पात्र श्रेणियों में सम्मिलित हितग्राहियों के अतिरिक्त, आँगनवाड़ी कार्यकर्ता, आँगनवाड़ी सहायिका, मिनी आँगनवाड़ी कार्यकर्ता, पंचायत सचिव, ग्राम रोजगार सहायक, आशा एवं ऊषा कार्यकर्ता, आशा सुपरवाइजर, कोटवार एवं संविदा कर्मियों को प्रतिवर्ष, प्रति परिवार, 5 लाख रूपये का स्वास्थ्य सुरक्षा लाभ स्वीकृत करने के संबंध में विस्तृत दिशा निर्देश जारी करेगी।

कांग्रेस एक विचारधारा है जो हार से विचलित नहीं होती : विधायक नितेंद्र सिंह राठौर

दैनिक पुष्पांजली टुडे

भिण्ड । विधानसभा चुनाव में हार के बाद मायूस कार्यकर्ताओ को उबारने और उन्हें लोकसभा चुनाव के लिए उत्साहित करने अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की ओर विधायक नितेंद्र सिंह राठौर को भिण्ड दतिया का लोकसभा प्रभारी बनाकर भेजा गया था।श्री राठौर ने भिण्ड जिले के कांग्रेस कार्यकर्ताओं के साथ बैठक की। बैठक को संबोधित करते हुए लोकसभा प्रभारी राठौर ने कहा कांग्रेस पार्टी एक विचारधारा है जो कभी हार से विचलित नहीं होती। कृत्रिम वातावरण कांग्रेस पार्टी के विरोध में पूरे देश में बनाया जा रहा है। आगामी लोकसभा चुनाव के परिणाम इसका जवाब देंगे। कांग्रेस ने स्वतंत्रता आंदोलन से आज तक देश की अखंडता और एकता बनाए रखना की पहल की है। इसे जारी रखेंगे कार्यकर्ता एकजुट होकर संघर्ष के लिए तैयार रहें।मध्यप्रदेश विधानसभा में उपनेता प्रतिपक्ष हेमंत कटारे ने कहा अंग्रेजी हुकूमत से भारत को आजाद करने में कांग्रेस की संघर्ष के इतिहास को भारत ही नहीं संपूर्ण विश्व जानता है। कांग्रेस के नेताओं ने देश हित में हंसते- हंसते अपने प्राणों की आहुति दी है।भिण्ड बदलाव के लिए अब तैयार है। पूर्व नेता प्रतिपक्ष डा. गोविंद सिंह ने कहा कि कांग्रेस पार्टी का कार्यकर्ता बूथ स्तर पर मतदाता सूची के कार्य में लगा हुआ है। आगामी लोकसभा चुनाव कांग्रेस पार्टी नए संकल्प के साथ जीतेगी। उन्होंने कहा कि

लोकसभा चुनाव के लिए कांग्रेस का प्रत्येक कार्यकर्ता तैयार है। पूर्व मंत्री रामनिवास रावत ने कहा देश को आजाद कराने वाली कांग्रेस जैसे संगठन को 138 साल पूरे होने पर और मजबूती प्रदान करने डोनेट फॉर देश कार्यक्रम पूरे देश में शुरु किया गया है। कार्यकर्ता उसमे भी अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें। उन्होने लोकसभा चुनाव की तैयारी के लिए कार्यकर्ताओं को सक्रिय हो जाने का आव्हान करते हुए अपनी बात रखी। जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष मान सिंह कुशवाह ने कहा कि कांग्रेस वह पार्टी है, जिसने देश की आजादी के आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इसलिए कार्यकर्ता अपनी पूरी ताकत से लोकसभा चुनाव की तैयारियों में जुट जाएं । कार्यक्रम में पूर्व गृहमंत्री महेंद्र बौद्ध,पूर्व विधायक कमलेश सुमन,मेवाराम जाटव,पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष रामननारायण हिंडोलिया सहित पार्टी के मोर्चा संगठन अध्यक्ष, प्रकोष्ठ के अध्यक्ष गण ,मंडलम,सेक्टर अध्यक्ष सहित कांग्रेस के पधाधिकारी और कार्यकर्ता मौजूद रहें। इससे पहले जिला कांग्रेस पदाधिकारियों ने आए अतिथियों का माला पहनाकर कर स्वागत किया। लोकसभा प्रभारी राठौर ने कार्यकर्ताओ से रायशुमारी की और संभावित उम्मीदवारों से उनका बायोडाटा भी लिया। भिण्ड दतिया लोकसभा चुनाव हेतु लगभग आज लगभग एक दर्जन कार्यकर्ताओ ने अपनी उम्मीदवारी जताई।जिनमे पूर्व मंत्री,पूर्व विधायक,पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष एवं कई वरिष्ठ पदाधिकारी व कार्यकर्ता भी शामिल रहें। कार्यक्रम में जय श्रीराम बघेल,रामप्रकाश यादव,ब्रजकिशोर शर्मा,पूर्व विधानसभा प्रत्याशी राहुल भदौरिया, शहर अध्यक्ष राधेश्याम शर्मा,प्रवक्ता डा.अनिल भारद्वाज,जिला संगठन मंत्री इरशाद अहमद,महिला कांग्रेस अध्यक्ष श्रीमती रेखा भदौरिया,भी विशेष रूप से मौजूद रहें।

श्री नर्मदेश्वर महादेव मंदिर स्थिति वीर सैनिक आवास कालोनी में श्री राम लला की प्राण प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में हर्षोल्लास से मनाई महादीपावली

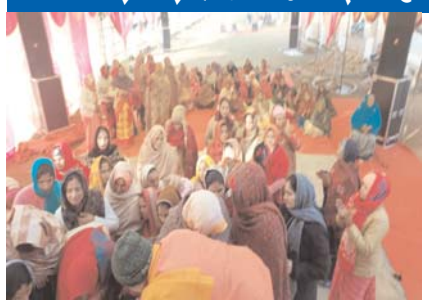

महेंद्र शर्मा उपसंपादक
पुष्पांजलि टुडे

मुरार ग्रामीण के खंड बड़े गांव हाईवे पर ॥ ल एमेरल्ड ग्रीन सोसाइटी में रामलाल प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम के तहत सुबह प्रभात फेरी दोपहर राम कथा एवं हवन एवं शाम को भव्य शोभा यात्रा का आयोजन कर कॉलोनी वासियों ने इस उत्सव को बड़े धूमधाम से मनाया इसमें विशेष रूप से श्री माधव सिंह आशीष यादव जी और उनकी टोली का बहुत बड़ा योगदान रहे सभी को बहुत-बहुत बधाइयां एवं शुभकामनाएं।श्री नर्मदेश्वर महादेव मंदिर स्थिति वीर सैनिक आवास कालोनी में श्री राम लला की प्राण प्रतिष्ठा के उपलक्ष में चल रही राम कथा का समापन,हवन एवं भंडारे का कार्यक्रम 22/1/24कोसंपन्न हुआ। सभी भक्तो द्वारा राम लला की प्राण प्रतिष्ठा से हृदय तल से खुशी मनाई महादीपावली मनाई।खुशी मे आतिशवाजी चलाई।सभी नागरिक पुरुष, महिलाएं बच्चे राम मय हो गये।राष्ट्र के राम 550वर्षों के बाद अयोध्या धाम में बिराज मान हुए है। इसके पीछे बड़ा वलिदान वसंघर्ष चला अब आके राम लला की प्राण प्रतिष्ठा अयोध्या धाम में होने से जन जन प्फुल्लित है।सभी को राम काज में सहयोगियों को बहुत बहुत बधाई शुभ कामनाए सादर साधुवाद।

भगवान श्री राम लाल के मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा के उपलक्ष में भव्य शोभा यात्रा निकाली गई

दैनिक पुष्पांजलि टुडे - रिपोर्टर खंगारराम मुलेवा

हैदराबाद स्थित बंडलागुडा, एल.बी.नगर वेल्फेयर असोसिएशन सीरवी समाज के प्लाट परअयोध्या में भगवान श्रीराम मंदिर की शुभ प्राण प्रतिष्ठा,के लिए अपने-अपने प्रतिष्ठान संपूर्ण बंद रखकर भगवान श्रीराम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा की खुशी में भगवान श्रीराम जी की भव्य सोभा यात्रा जुलूस डीजे साउंड पर नाचते गाते हुए । समाज के प्लाट में पहुँचे । और महिलाओं द्वारा राम धुन व भजन सत्संग किया गया। और भगवान श्रीराम के नाम जयकारों से माहौल भक्ति मय हो गया अध्यक्ष जगदीश प्रसाद काग, सचिव प्रकाश सेपटा, उपाध्यक्ष । वेनाराम चोयल, उपाध्यक्ष ।। लक्षमण राम परिहार, सह सचिव चुन्नीलाल पंवार, कोषाध्यक्ष धन्नाराम देवड़ा सलाकार खंगारराम सेपटा, मनोनीत सदस्य हरिलाल लचेटा,स्वरूपराम पंवार ,चेनाराम काग, एवम् समस्त कार्यकारिणी की मौजूदगी में यह कार्यक्रम हुआ। और पदाधिकारी ने बताया की भगवान श्रीराम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव हर्षोल्लास से मनाया गया । और हमें बहुत खुशी हो रही है

कांग्रेस ने असम सीएम के खिलाफ खोला मोर्चा,कार्यालय पर विरोध प्रदर्शन किया

दैनिक पुष्पांजली टुडे

भिण्ड । भिण्ड में प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी के निर्देश पर जिला कांग्रेस कार्यालय के सामने टेंट लगाकर केंद्र एवं असम के मुख्यमंत्री के खिलाफ जमकर प्रदर्शन किया और नारेबाजी भी की। दरअसल राहुल गांधी की भारत जोड़ो न्याय यात्रा का काफिला जब असम राज्य में प्रवेश किया तो आरोप है,कि वहां सीएम हेमंत बिस्वा सरमा के समर्थकों ने कांग्रेस के काफिले पर हमला कर दिया है।कार्यक्रम में पहले कांग्रेसियों ने राष्ट्र नायक नेताजी सुभाषचंद्र बोस की जयंती पर श्रद्धासुमन अर्पित किए।धरने को संबोधित करते हुए कांग्रेस जिलाध्यक्ष मानसिंह कुशवाह ने कहा कि केंद्र की भाजपा सरकार और असम सरकार को कांग्रेस नेता राहुल गांधी की भारत जोड़ो न्याय यात्रा की सफलता से डर गए है। भाजपा को यह पच नहीं रहा है।डर है कहीं दस वर्ष के काम काज का भेद न खुल जाए। इसलिए, यात्रा पर अब हमला कराया जा रहा है। यह निंदनीय घटना है। कांग्रेस की ओर से इसका पूरे देश में विरोध जताया जा रहा है।हम भाजपा से डरने वाले नही है।धरने को संबोधित करते हुए गोहद विधायक केशव देसाई ने कहा भाजपा लोकतंत्र और संविधान के लिए खतरा है। इसलिए लोकतंत्र की रक्षा करने वाली कांग्रेस पार्टी के नेताओ पर हमला किया जा रहा है। देश की जनता सब देख रही है समय सबका जवाब दिया जाएगा । कार्यक्रम को महिला अध्यक्ष रेखा भदौरिया,सेवादल जिलाध्यक्ष संदीप मिश्रा, प्रवक्ता अनिल भारद्वाज, व्यापार कांग्रेस अध्यक्ष संजय भूता युवा कांग्रेस अध्यक्ष राजकुमार देशलहरा,प्रेम सिंह संखवार,जिला संगठन मंत्री इरशाद अहमद,पिंकी जाटव,अहिवरन बघेल,महेश जाटव,रामनारायण हिंडोलिया,वीरेंद्र यादव,रीना चौहान आदि ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम का संचालन महामंत्री विनोद पंडित ने किया। कार्यक्रम में जिला उपाध्यक्ष पंकज त्रिपाठी,रानू सिंह भदौरिया,बलराम जाटव,योगेश शाक्य सहित सैकड़ों कार्यकर्ता मौजूद रहे।

रहुपति राघव राजाराम, पतित पावन सीताराम का गायन कर दिया जिला कांग्रेस ने धरना।

मुरैना! मध्य प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष माननीय जीतू पटवारी जी के निर्देशानुसार आज जिला कांग्रेस एवं ब्लॉक कांग्रेस के नेतृत्व में एम.एस रोड़ स्थित बिजली घर के सामने गांधी बाल निकेतन मैरिज होम में गांधी जी की प्रतिमा के सामने महात्मा गांधी जी के द्वारा गाए गए गीत रघुपति राघव राजाराम, पतित पावन सीताराम का गायन कर शांति पूर्ण तरीके से कांग्रेस कार्यकर्ताओं द्वारा धरना दिया। इस मौके पर जिला कांग्रेस अध्यक्ष ग्रामीण मधुराज तोमर ने अपनी बात को रखते हुए कहा कि अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के पूर्व अध्यक्ष मान. श्री राहुल गांधी जी के नेतृत्व में भारत जोड़ों न्याय यात्रा 14 जनवरी से मणिपुर से प्रारंभ हुई है जो मणिपुर, नागालैंड, अरूणाचल की सफलतापूर्वक यात्रा कर चुके है और अब असम में प्रवेश किया है। लोगों के दिलों को छूने वाली यह यात्रा सफलतापूर्वक चल रही है । हमारे देश में युवाओं, महिलाओं और हाशिये पर पड़े लोगों के लिए न्याय (न्याय) की मांग करने के उद्देश्यों को लेकर की जा रही है। अफसोस की बात है, कि भाजपा के वरिष्ठ नेताओं के इशारे पर भाजपा के सबसे भ्रष्ट असम के मुख्यमंत्री हेमंत बिस्वा जो कि असम में इस शांतिपूर्ण न्याय यात्रा को बाधित करने की पूरजोर कोशिश कर रहे है। पिछले दो दिनों में भारत जोड़ों न्याय यात्रा के काफिलों पर सुनियोजित हमले और तोड़फोड़ की घटनाएं की गई है । इन उपद्रवियों द्वारा यात्रा के पोस्टरों को हटा दिया गया तथा जानबूझकर बीजेपी की भीड़ इकठ्ठा की गई ।

और इसी क्रम में जिला कांग्रेस अध्यक्ष शहर दीपक शर्मा ने कहा कि मान. श्री राहुल गांधी जी के नेतृत्व में भारत जोड़ों न्याय यात्रा के काफिले पर भाजपा के कार्यकर्ताओं ने हमला कर दिया जिससे वे घायल हो गये। असम प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष सहित कांग्रेस पार्टी के नेताओं पर भाजपा समर्थित उपद्रवियों, गुण्डो द्वारा न्याय यात्रा पर हमला किया गया है यह उनकी हताशा के अलावा और कुछ नहीं है। असम के मुख्यमंत्री द्वारा प्रशासनिक विफलताओं और भ्रष्टाचार को छिपाने तथा भारत जोड़ों न्याय यात्रा की सफलता से घबराकर इस तरह के हमले किये जा रहे है ।

उक्त धरना मे जौरा विधायक पंकज उपाध्याय, अंबाह विधायक देवेन्द्र सखवार, मुरैना सभापति राधारमण डंडोतिया, कार्यकारी अध्यक्ष राजेन्द्र यादव, संगठन मंत्री ग्रामीण सुभाष सिंह सिकरवार, संगठन मंत्री शहर सत्यपाल सिंह कुशवाह, वीरेन्द्र हर्षाना रांशू, पूर्व प्रदेश महासचिव रामलखन डंडोतिया, पूर्व प्रदेश महासचिव जसवीर गुर्जर, किसान कांग्रेस जिलाध्यक्ष जितेन्द्र सिंह डंगस, ब्लॉक अध्यक्ष विक्रमराज मुदगल, कार्यकारी अध्यक्ष लोकेंद्र यादव, महिला कांग्रेस अध्यक्ष नजमा बेगम, ब्लॉक अध्यक्ष अब्दुल रज्जाक पटेल, प्रवक्ता हरीश पाठक, मनीष उपाध्याय, अशोक भदौरिया, पूर्व पार्षद अजीत सिकरवार, सौरभ सोलंकी, कार्यकारी अध्यक्ष गजेन्द्र सिंधी, ब्लॉक अध्यक्ष बानमोर पूरन यादव, रन सिंह सिकरवार, शशी सक्सेना, रामू तोमर पूर्व जनपद अध्यक्ष, नरोत्तम माहोर, राकेश परमार, राजकुमार पाठक, किशन पंडित, राजेश राठौर, नरेश यादव, गौरव चतुर्वेदी, हेमन्त तोमर, पवन यादव, सौरव मिश्रा, अशोक तोमर, रिंकू पचौरी, प्रदीप रजक, कार्यालय मंत्री रामू टुंडेलकर, अमनीष कटारे, रामजीलाल माहोर, पवन शुक्ला, बल्लू डंडोतिया, सुभाष माहोर, नागेन्द्र सिकरवार, आशा बेपुरिया, गंगा सिंह तोमर, मलखान गुर्जर, दीपक सोलंकी, शिवकुमार नरवरिया, सचिन डंडोतिया, गिर्राज शर्मा, ममता, गुड्डी बाई, आदि कांग्रेस कार्यकर्ता मौजूद रहे।

विकसित भारत बनाने का लक्ष्य : केंद्रीय मंत्री श्री सिंधिया

कल्याणकारी योजनाओं का लाभ पात्र व्यक्तियों तक पहुंचाना विकसित भारत संकल्प यात्रा का उद्देश्य : मंत्री राकेश शुक्ला

दैनिक पुष्पांजली टुडे

सरकार का संकल्प है कि कोई पात्र व्यक्ति योजनाओं के लाभ से वंचित न रहे - क्षेत्रीय सांसद श्रीमती राय

श्री सिंधिया लहार,अमायन एवं भिण्ड में आयोजित शिविर में शामिल हुए

भिण्ड । केंद्रीय नागरिक उड्डयन एवं इस्पात मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने भिण्ड जिले के भ्रमण के दौरान लहार, विकासखण्ड मेहगांव के अमायन एवं भिण्ड में आयोजित विकसित भारत संकल्प यात्रा शिविर में भाग लिया तथा आवास योजना, आयुष्मान भारत योजना, लाड़ली लक्ष्मी योजना, उज्जवला योजना, स्व-सहायता समूह सहित अन्य योजनाओं में पात्र हितग्राहियों को हितलाभ प्रमाण पत्रों का वितरण किया।केंद्रीय नागरिक उड्डयन एवं इस्पात मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने उपस्थित जनों को संबोधित करते हुए कहा कि विकसित भारत संकल्प यात्रा केंद्र सरकार की योजनाओं का शत प्रतिशत लाभ लोगों तक पहुंचाने का अभियान है। भारत को विकासशील से विकसित भारत बनाने का लक्ष्य है। गरीबी मुक्त देश का लक्ष्य है। प्रधानमंत्री आवास, पीएम स्वनिधि, किसान सम्मान निधि सहित ऐसी ही कई योजनाओं से हितग्राही लाभान्वित हो रहे हैं। आयुष्मान भारत योजना से 5 लाख तक का मुफ्त इलाज दिया जा रहा है, गरीबों को राशन पहुंचाया जा रहा है। किसान सम्मान निधि से सीधे किसान के खाते में 6 हजार

रुपए की राशि पहुंचाई जा रही है। उज्जवला योजना से गैस चूल्हा मिलने से महिलाओं को धुएं से मुक्ति मिली हैं। विकसित भारत अभियान के दौरान नए आवास हितग्राही, पीएम सम्मान निधि, उज्जवला योजना सहित अन्य योजनाओं में पात्र हितग्राहियों को जोड़ा गया है। नवीन एवं नवकरणीय ऊर्जा मंत्री राकेश शुक्ला ने कहा कि केन्द्र और राज्य सरकार हर गरीब वर्ग की चिंता कर रही है। विकसित भारत संकल्प यात्रा का मुख्य उद्देश्य केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा संचालित विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं को आम लोगों तक पहुंचाना और पात्र व्यक्तियों को योजनाओं का लाभ दिलाना है।उन्होंने कहा कि केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं का लाभ लोगों तक पहुंचे। इसके लिए शासकीय अधिकारी एवं कर्मचारी गांव-गांव जाकर वंचित पात्र हितग्राहियों को चिन्हित कर शासन की योजनाओं का लाभ प्रदान कर रहे हैं। क्षेत्रीय सांसद श्रीमती संध्या राय ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की मंशा है कि विकसित भारत संकल्प यात्रा के माध्यम से केन्द्र व राज्य शासन की योजनाओं का लाभ जन-जन तक पहुंचे। केन्द्र एवं राज्य सरकार का संकल्प है कि इस यात्रा के माध्यम से लोगों आयुष्मान योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना, नल- जल योजना के तहत नल कनेक्शन, किसान सम्मान निधि सहित अन्य योजनाओं से वंचित लोगों को इन सभी योजनाओं का लाभ मिले कोई पात्र व्यक्ति योजनाओं के लाभ से वंचित नहीं रहे। इस दौरान जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती कामना सिंह भदौरिया, विधायक लहार अम्बरीश शर्मा, विधायक भिण्ड नरेंद्र सिंह कुशवाह, भाजपा जिला अध्यक्ष देवेन्द्र सिंह नरवरिया,पूर्व मंत्री डबरा श्रीमती इमरती देवी,पूर्व मंत्री ओपीएस भदौरिया,पूर्व सांसद भागीरथ प्रसाद,पूर्व सांसद अशोक अर्गल, पूर्व विधायक रणवीर जाटव, कॉपरेटिव बैंक पूर्व चेयरमैन केपी सिंह,कलेक्टर संजीव श्रीवास्तव,एसपी डॉ असित यादव सहित अन्य अधिकारी, जनप्रतिनिधिगण उपस्थित रहे।

आत्मसाक्षात्कार द्वारा स्व को जानना ही सहजयोग।

जब से जीव का विकास मनुष्य के रूप में हुआ है उसके भीतर यह अदम्य इच्छा जागृत रहती है कि वह अपने अस्तित्व के सत्य को जान सके परमात्मा व प्रकृति के रहस्य को अनावृत कर सके। इसके लिए अनेक मनीषियों ने ध्यान, साधना व तप का मार्ग अपनाया व आत्मा तथा परमात्मा के संबंध को समझा। वे अन्य लोगों के मार्गदर्शक बने अर्थात् गुरु की भूमिका का निर्वहन किया।

वास्तव में मनुष्य जब भी सत्य की खोज में निकलता है तो अनेक प्रक्रियाओं में उलझे कर रह जाता है। परमात्मा से एकाकार होने के लिए इस माया रूपी संसार में साक्षी स्वरूप होकर वर्तमान में स्थित होना अर्थात निर्विचारिता को प्राप्त करना ही आत्म ज्ञान को प्राप्त करने का एकमात्र मार्ग है इसके लिए एक सदुरु की आवश्यकता होती है जो प्रत्येक भटकाव से बचाकर आपको मध्य मार्ग पर स्थित रखते हुए परम शक्ति से योग कर सके। हमारे देश में अनेकानेक सदुरुओं ने समय-समय पर इस भूमिका का संसार के उद्धार के लिए निर्वहन किया है। पर इस मार्ग से बहुत कम जनसाधारण का जुड़ाव हो सका।वर्तमान में श्री माताजी निर्मला देवी जी ने सहज योग के माध्यम से यह मार्ग बहुत ही सहज बना दिया है। वे एक सदुरु होने के साथ-साथ एक मां भी हैं इस नाते उन्होंने अपने सभी बच्चों को स्वयं ही गुरु होने की शक्ति व आशीर्वाद प्रदान किया। सहजयोग में गुरु तत्व स्वयं आपके भीतर जागृत हो जाता है जो प्रतिपल व्यक्ति को सुमार्गी होने की प्रेरणा देता है तथा आत्म साक्षात्कार, आत्मज्ञान व आत्म परीक्षण द्वारा आपका योग परमात्मा की असीम शक्ति के साथ करा देता है। श्री माताजी द्वारा संस्थापित सहजयोग पद्धति सत्य, विश्वास, प्रेम व स्वयं के अनुभव पर आधारित वैज्ञानिक पद्धति है, परमात्मा से जुड़ने की। सहज योग कोई अंधश्रद्धा नहीं है, वरन् इसमें सर्वप्रथम आपको परम चैतन्य का अनुभव प्राप्त होता है तत्पश्चात आप ध्यान व साधना की ओर अग्रसर होते हैं। क्योंकि इसे हम स्वयं अनुभव करते हैं अतः यह हमारे आत्मविश्वास को दृढ़ करता है। श्री माताजी ने सदैव ही यह उपदेशित किया है कि आत्म साक्षात्कार की प्राप्ति के पश्चात यदि नियमित ध्यान धारणा द्वारा विवेकपूर्ण तरीके से सहज योग का पालन किया जाता है तो हमारे भीतर अनेकानेक शक्तियां स्वयं ही आने लगती हैं। और इन शक्तियों का यदि विवेक पूर्ण प्रयोग किया जाए तो समाज में बदलाव लाया जा सकता है। आवश्यकता है स्वयं पर विश्वास की, कि आप उन शक्तियों के स्वामी हैअपने नज़दीकी सहजयोग ध्यान केंद्र की जानकारी टोल फ्री नंबर 1800 2700 800 से प्राप्त कर सकते हैं या वेबसाइट पर देख सकते हैं।

एसडीएम सक्ती ने पं. दीनदयाल स्टेडियम बाजार ग्राउंड में धीमे निर्माण कार्य पर ठेकेदारों को लगाई फटकार

सक्ती कलेक्टर नूपुर राशि पन्ना के निर्देशन में आज अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व) सक्ती पंकज डाहिरे ने पं. दीनदयाल स्टेडियम बाजार ग्राउंड में निर्माणाधीन कार्यों का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने धीमे निर्माणकार्य पर नाराजगी जताते हुवे ठेकेदारों को फटकार लगाई और निर्माण कार्यों में तेजी लाने के निर्देश दिए। कलेक्टर पन्ना के निर्देशन में पं. दीनदयाल स्टेडियम में जिला खनिज संस्थान न्यास निधि (डीएमएफ) अंतर्गत फुटबॉल ग्राउंड, इनडोर स्टेडियम, बास्केटबॉल, लॉनटेनिस व बेहतर पार्किंग व्यवस्था निर्माण कार्य आदि कराया जाना है। जिसके लिए एसडीएम सक्ती ने आज राजस्व अमले और मुख्य नगर पालिका अधिकारी सक्ती के साथ निर्माण कार्यों का निरीक्षण करते हुए संबंधित ठेकेदारों को समय पर गुणवत्तायुक्त निर्माण कार्य किए जाने के निर्देश दिए। इसके साथ ही अधोसंरचना मद अंतर्गत छेदी होटल सोसायटी चौक से गुरु नानक कॉम्प्लेक्स तक निर्माणाधीन 24 मीटर चौड़ी सड़क एवं अन्य कार्यों का भी निरीक्षण किया गया और निर्माण कार्यों को अति शीघ्र पूर्ण करने का निर्देश दिया गया। निरीक्षण के दौरान तहसीलदार सक्ती मनमोहन प्रताप सिंह, नायब तहसीलदार सुशीला साहू, मुख्य नगर पालिका अधिकारी संजय सिंह, उप अभियंता शैलेंद्र पटेल, मोहम्मद इब्राहिम खान, बेद जायसवाल, रोहिणी कैवर्त्य सहित संबंधित ठेकेदार उपस्थित थे।

श्रीरामः मनुष्य से देवत्व की यात्रा

आप सभी को श्रीराम मंदिर के उद्घाटन की ढ़ेर सारी शुभकामनाएं। वास्तव में श्रीराम ने अपने जीवन में मनुष्य से देवत्व तक की यात्रा को न केवल तय किया है, बल्कि चरित्र के सर्वश्रेष्ठ स्तर को हासिल करने का उदाहरण भी प्रस्तुत किया है। उन्होंने हर स्थिति और व्यक्ति के साथ संबंध निभाकर जीवन का प्रबंधन समझाया है और समाज के अंतिम तबके को अपने साथ जोड़कर समाजवाद को भी परिभाषित किया है।

चलिए चर्चा करते हैं त्रेतायुग में अयोध्या में जन्में श्रीराम के मनुष्य से देवत्व को हासिल करने की यात्रा पर। बालपन में ही अपने छोटे भाईयों के प्रति स्नेह हो या गुरू के आश्रम पहुंचकर शिक्षा ग्रहण करना, बात माता-पिता की आज्ञा पालन की हो या सखाओं से मित्रता निभाने की, उन्होंने हमेशा ही अपने कर्मों से मर्यादा को प्रस्तुत किया और देवत्व की ओर यात्रा पर बढ़ चले।

जब गुरूकुल से शिक्षा-दीक्षा पूरी कर श्रीराम अयोध्या वापस लौटे तो वहां ऋषि विश्वामित्र का आगमन हुआ। उन्होंने राजा दशरथ से कहा कि मुझे राम को अपने साथ ले जाना है इस पर राजा चिंतित हो गए और कहने लगे कि आप मेरी सेना ले जाईये, मुझे साथ ले चलिए, आप राम ही को क्यों ले जाना चाहते हैं। इस पर ऋषि विश्वामित्र ने कहा कि यौवन, धन, संपत्ति और प्रभुत्व में से एक भी चीज किसी को हासिल हो जाए तो उसमें अहंकार आ जाता है, आपके पुत्र के पास यह चारों है लेकिन फिर भी वह विनम्र है इसलिए इसे ले जा रहा हूं। ऋषि विश्वामित्र के साथ वन जाकर श्रीराम ने राक्षसी ताड़का का वध किया, वहीं शिला बन चुकीं अहिल्या देवी का उद्धार किया। जनकपुरी में वे सीता स्वयंवर में पहुंचे। यहां बड़े-बड़े राजा जिस शिव धनुष को हिला भी न सके थे उसे प्रत्यंचा चढ़ाते हुए श्रीराम ने तोड़ दिया। इससे क्रोधित भगवान परशुराम को श्रीराम ने स्वयं मीठी वाणी बोलकर शांत किया। इसके साथ ही उनका देवी सीता से विवाह हुआ।

आज छोटी-छोटी चीजों पर हम डिप्रेशन में आ जाते हैं, वहीं जरा कल्पना कीजिए जिस युवक का अगली सुबह राजतिलक होने वाला हो और उसे रात में कहा जाए कि उसे वनवास पर जाना है। इस निर्णय को श्रीराम ने कितने रचनात्मक ढंग से लिया और वनवास जाने के लिए सहज तैयार हो गए। उन्होंने जहां एक ओर अपने पिता के वचन की लाज रखी, वहीं मां कौशल्या से कहा कि पिताजी ने मुझे जंगल का राज्य सौंपा है, वहां ऋषियों के सानिध्य में मुझे बहुत सेवा करने का अवसर मिलेगा। इसी कारण वन जाने से पहले जो अयोध्या के राजकुमार थे, वन से लौटकर वह मर्यादा पुरूषोत्तम कहलाए।

वनवास के दौरान श्रीराम ने खर, दूषण और सुबाहू जैसे कई राक्षसों का अंत किया। उन्होंने किसी राजा से बात नहीं की न ही किसी राज्य का आश्रय लिया। बल्कि उन्होंने वंचितों से बात की। आदिवासियों से मिले, केवट के माध्यम से गंगा पार की, शबरी के जूठे बेर खाए और समाज के अंतिम तबके से मिले। हर व्यक्ति को समाज की मूल धारा में जोड़ने के लिए श्रीराम ने समाजवाद की स्थापना की।

श्रीराम ने शौर्यवान, शक्तिशाली और पराक्रमी होने के बावजूद कभी धैर्य का साथ नहीं छोड़ा और सत्य पर अडिग रहे। इसलिए रावण वध को हम असत्य पर सत्य की जीत के रूप में याद रखते हैं। अयोध्या लौटने पर जब श्रीराम राजा बने तो उन्होंने सदा प्रजा के हित का विचार किया। इसके साथ ही रामराज्य की स्थापना हुई। जो आज भी इतिहास की सबसे श्रेष्ठ प्रशासनिक व्यवस्था के रूप में जाना जाता है।

अंत में बस इतना बताना चाहूंगा कि श्रीराम किसी धर्म या देश के नहीं बल्कि श्रीराम तो पूरी कायनात के हैं। श्रीराम तो वह हैं जो हर भक्त के चिंतन में हैं और सृष्टि के कण-कण में हैं। राम तो करूणा में हैं, शांति में राम हैं, राम ही हैं एकता में, प्रगति में राम हैं। राम हम सब के मन में हैं। हम सबकी आस्था में हैं।

अयोध्या में राम मंदिर

वेदों एवं पुराणों के अनुसार उत्तर प्रदेश की अयोध्या नगरी का इतिहास प्राचीन है। श्रीराम के पूर्वजों के राज्य में अयोध्या राजधानी रही, श्रीराम का जन्म भी यहीं हुआ। श्रीराम ने भी अयोध्या को ही राजधानी बनाकर पूरे राज्य में शासन किया और इसका विस्तार किया। आज यहां श्रीराम के मंदिर का निर्माण पूरा हो गया है, यह सभी रामभक्तों की आस्था का केंद्र है। पूरे देश में इस उद्घाटन समारोह को लेकर उत्साह है और इसे दीपावली की तरह मनाया जा रहा है। मैं सभी रामभक्तों को इस उद्घाटन पर्व की शुभकामनाएं देता हूं।

रामायण का जटायु पक्षी गिद्ध, गरुड़ या कुछ और

अर्जेंटाविस यानी जटायु शिकारी पक्षियों की एक विलुप्त समूह का सदस्य था

प्रचलन से रामायण काल के जटायु पक्षी को गिद्धराज माना जाता है, यानी गिद्धों के राजा। हालांकि कई विद्वानों के अनुसार जटायु गिद्ध नहीं गरुड़ प्रजाती से थे। विज्ञान की खोज के अनुसार जाटायु नामक पक्षी की एक प्रजाती होती थी। इन्हें आसमान में उड़ता हुआ छोटा डायनासोर मान सकते हैं। इसे टेराटोर्न कहते थे।

पौराणिक तथ्य

भगवान गरुड़ और उनके भाई अरुण दोनों ही प्रजापति कश्यप की पत्नी विनता के पुत्र थे। इन दोनों को देव पक्षी माना जाता था। गरूड़जी विष्णु की शरण में चले गए और अरुणजी सूर्य के सारथी हुए। सम्पाती और जटायु इन्हीं अरुण के पुत्र थे। चूंकि अरुण एक गरूड़ प्रजाती के पक्षी थे तो सम्पाती और जटायु को भी गरूड़ ही माना जाना चाहिए। रामायण अनुसार जटायु गृध्रराज थे और वे ऋषि ताक्षर्य कश्यप और विनीता के पुत्र थे। गृध्रराज एक गिद्ध जैसे आकार का पर्वत था। दोनों को कई जगहों पर गिद्धराज तो कुछ जगहों पर गरूड़ बंधु कहा गया है।

पुराणों के अनुसार सम्पाती बड़ा था और जटायु छोटा। ये दोनों विंध्याचल पर्वत की तलहटी में रहने वाले निशाकर ऋषि की सेवा करते थे और संपूर्ण दंडकारण्य क्षेत्र विचरण करते रहते थे। एक ऐसा समय था जबकि महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ में गिद्ध और गरूढ़ पक्षियों की संख्या अधिक थी लेकिन अब नहीं रही।

टेराटोर्न

नेशनल जियोग्राफिक की रिपोर्ट के अनुसार करीब 60 लाख साल पहले अर्जेंटीना के आसामान में टेराटोर्न नामक एक विशालकाय शिकारी पक्षी हुआ करता था। इसे ही जटायु माना गया है। कहते हैं कि इसका वजन 70 किलोग्राम था और इसके पंखों का फैलाव 7 मीटर था। यह Cessna 152 लाइट एयरक्राफ्ट के बराबर था।

रिपोर्ट के मुताबिक अर्जेंटाविस यानी जटायु शिकारी पक्षियों की एक विलुप्त समूह का सदस्य था जिसे टेराटोर्न यानी राक्षस पक्षी कहा जा सकता है। शोधानुसार इन पक्षियों का संबंध आज के गिद्धों और सारस के साथ ही तुर्की के गिद्धों और कंडोर्स से माना जाता है।

भगवान राम का जन्म लाखों वर्ष पहले हुआ था या 5114 ईसा पूर्व?

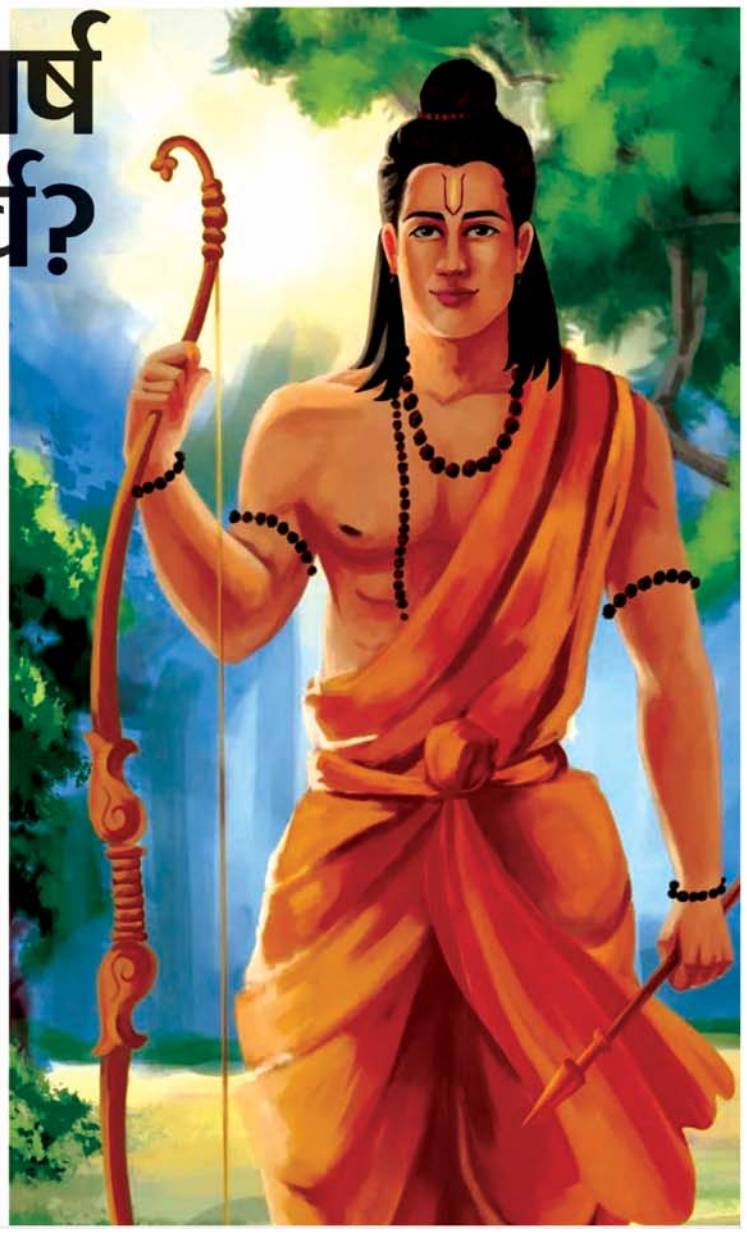

युग की धारणा हमें पुराण और ज्योतिष में तीन तरह से मिलती है। पहली वह जिसमें एक युग लाखों वर्ष का होता है और दूसरी वह जिसमें एक युग 5 वर्ष का होता है और तीसरी वह जिसमें एक युग 1250 वर्ष का है। हम तीनों के मान से श्रीराम के जन्म को समझने के बाद आधुनिक युग में हुए शोध को समझते हैं।

पहली लाखों वर्ष के एक युग की धारणा-

पुराणों के अनुसार प्रभु श्रीराम का जन्म त्रेतायुग और द्वापर युग के संधिकाल में हुआ था। सतयुग लगभग 17 लाख 28 हजार वर्ष, त्रेतायुग 12 लाख 96 हजार वर्ष, द्वापर युग 8 लाख 64 हजार वर्ष और कलियुग 4 लाख 32 हजार वर्ष का बताया गया है। कलियुग का प्रारंभ 3102 ईसा पूर्व से हुआ था। इसका मतलब 3102+2019= 5121 वर्ष कलियुग के बित चुके हैं।

उपरोक्त मान से अनुमानित रूप से भगवान श्रीराम का जन्म द्वापर के 864000 + कलियुग के 5121 वर्ष = 869121 वर्ष अर्थात 8 लाख 69 हजार 121 वर्ष हो गए हैं प्रभु श्रीराम को हुए। कहते हैं कि वे 11 हजार वर्षों तक जिंदा वर्तमान रहे। परंपरागत मान्यता अनुसार द्वापर युग के 8,64,000 वर्ष + राम की वर्तमानता के 11,000 वर्ष + द्वापर युग के अंत से अब तक बीते 5,121 वर्ष = कुल 8,80,111 वर्ष। अतएव परंपरागत रूप से राम का जन्म आज से लगभग 8,80,111 वर्ष पहले माना जाता है।

दूसरी 5 वर्ष का एक युग की धारणा-

भारतीय ज्योतिषियों ने समय की धारणा को सिद्ध धरती के सूर्य की परिक्रमा के आधार पर नहीं प्रतिपादित किया है। उन्होंने संपूर्ण तारामंडल में धरती के परिभ्रमण के पूर्ण कर लेने तक की गणना करके वर्ष के आगे के समय को भी प्रतिपादित किया है। वर्ष को 'संवत्सर' कहा गया है। 5 वर्ष का 1 युग होता है। संवत्सर, परिवत्सर, इद्वत्सर, अनुवत्सर और युगवत्सर ये युगात्मक 5 वर्ष कहे जाते हैं।

बृहस्पति की गति के अनुसार प्रभव आदि 60 वर्षों में 12 युग होते हैं तथा प्रत्येक युग में 5-5 वत्सर होते हैं। 12 युगों के नाम हैं- प्रजापति, धाता, वृष, व्यय, खर, दुर्मुख, प्लव, पराभव, रोधकृत, अनल, दुर्मति और क्षय। प्रत्येक युग के जो 5 वत्सर हैं, उनमें से प्रथम का नाम संवत्सर है। दूसरा परिवत्सर, तीसरा इद्वत्सर, चौथा अनुवत्सर और 5वां युगवत्सर है। इस मान से देखें तो कलिकाल के 5121 में ही कई युग बित गए हैं।

1250 वर्ष का एक युग-

एक पौराणिक मान्यता के अनुसार प्रत्येक युग का समय 1250 वर्ष का माना गया है। इस मान से चारों युग की एक चक्र 5 हजार वर्षों में पूर्ण हो जाता है। यदि इस मान से देखें तो द्वापर और कलियुग के 2500 वर्ष बीत चुके हैं। मतलब यह कि 2500 वर्ष पूर्व श्रीराम हुए थे क्या। यदि यह मान लेते हैं कि यह चार युगों का तीसरा चक्र चल रहा है तो निश्चित ही फिर श्रीराम का जन्म 5000 ईसा वर्ष पूर्व हुआ होगा।

हम यह धारणा क्यों नहीं मानते?

क्योंकि पहली बात तो यह कि युग का मान स्पष्ट नहीं है। दूसरी बात यह कि यदि आप भगवान श्रीराम की वंशावली के मान से गणना करते हैं तो यह लाखों नहीं हजारों वर्ष की बैठती है। जैसे श्रीराम के बाद उनके पुत्र लव और कुश हुए फिर उनकी पीढ़ियों में आगे चलकर महाभारत काल में शल्य हुए। एक शोधानुसार कुश की 50वीं पीढ़ी में शल्य हुए, जो महाभारत युद्ध में कौरवों की ओर से लड़े थे। इसके अलावा शल्य के बाद बहत्क्षय, ऊरुक्षय, वत्सद्रोह, प्रतिव्योम, दिवाकर, सहदेव, ध्रुवाश्व, भानुरथ, प्रतीताश्व, सुप्रतीप, मरुदेव, सुनक्षत्र, किन्नराश्रव, अन्तरिक्ष, सुषेण, सुमित्र, बृहद्रज, धर्म, कृतज्जय, व्रात, रणज्जय, संजय, शाक्य, शुद्धोधन, सिद्धार्थ, राहुल, प्रसेनजित, क्षुद्रक, कुलक, सुरथ, सुमित्र हुए। वर्तमान में जो सिसोदिया, कुशवाह (कछवाह), मौर्य, शाक्य, बैछला (बैसला) और गैहलोत (गुहिल) आदि जो राजपूत वंश हैं वे सभी भगवान प्रभु श्रीराम के वंशज हैं। जयपूर राजघराने की महारानी पद्मिनी और उनके परिवार के लोग की राम के पुत्र कुश के वंशज हैं। महारानी पद्मिनी ने एक अंग्रेजी चैनल को दिए में कहा था कि उनके पति भवानी सिंह कुश के 309वें वंशज थे। अब यदि तीन पीढ़ियों का काल लगभग 100 वर्ष में पूर्ण होता है तो इस मान से श्रीराम को हुए कितने हजार वर्ष हुए हैं आप इस 309 पीढ़ी के मान से अनुमान लगा सकते हैं।

आधुनिक शोध की धारणा-

उपरोक्त धारणा से भिन्न आधुनिक शोध पर आधारित धारणा ज्यादा सही लगती है। इस शोध का आधार रामायण में बताई गई खगोलीय स्थिति और देशभर में बिखरे सबूत हैं। उन सबूतों का कार्बन डेटिंग के आधार पर जांच कर उसका मिलान रामायण में बताए गए घटनाक्रम से किया गया है।

इस शोधानुसार 5114 ईसा पूर्व 10 जनवरी को दिन के 12.05 पर भगवान राम का जन्म हुआ था जबकि सैकड़ों वर्षों से चैत्र मास (मार्च) की नवमी को रामनवमी के रूप में मनाया जाता रहा है। एक अन्य शोध के अनुसार राम की जन्म दिनांक वाल्मीकि द्वारा बताए गए ग्रह-नक्षत्रों के आधार पर प्लैनेटेरियम सॉफ्टवेयर अनुसार 4 दिसंबर 7323 ईसा पूर्व अर्थात आज से 9339 वर्ष पूर्व हुआ था। राम के जन्म पर कई शोध हुए हैं लेकिन सबसे सटीक शोध प्रोफेसर तोबयस का रहा।

वाल्मीकि के अनुसार श्रीराम का जन्म चैत्र शुक्ल नवमी तिथि एवं पुनर्वसु नक्षत्र में जब पांच ग्रह अपने उच्च स्थान में थे तब हुआ था। इस प्रकार सूर्य मेष में 10 डिग्री, मंगल मकर में 28 डिग्री, ब्रहस्पति कर्क में 5 डिग्री पर, शुक्र मीन में 27 डिग्री पर एवं शनि तुला राशि में 20 डिग्री पर था।(बाल कांड 18/श्लोक 8, 9)।

शोधकर्ता डॉ. वर्तक पीवी वर्तक के अनुसार ऐसी स्थिति 7323 ईसा पूर्व दिसंबर में ही निर्मित हुई थी, लेकिन प्रोफेसर तोबयस के अनुसार जन्म के ग्रहों के विन्यास के आधार पर 10 जनवरी 5114 ईसा पूर्व हुआ था। उनके अनुसार ऐसी आका?शीय स्थिति तब भी बनी थी। तब 12 बजकर 25 मिनट पर आकाश में ऐसा ही दृष्य था जो कि वाल्मीकि रामायण में वर्णित है।

ज्यातादर शोधकर्ता प्रोफेसर तोबयस के शोध से सहमत हैं। इसका मतलब यह कि राम का जन्म 10 जनवरी को 12 बजकर 25 मिनट पर 5114 ईसा पूर्व हुआ था।

कांती नगर में महाआरती हुई, कारसेवक उदय अग्रवाल - पूरन भदौरिया का सम्मान हुआ

ग्वालियर। अयोध्या में भगवान श्रीराम की प्राण प्रतिष्ठा के मौके पर आयोजित देश प्रदेश के अनेक आयोजनों की तर्ज पर कांती नगर, गायत्री नगर, रेलवे कालोनी में महाआरती का आयोजन किया गया। इस मौके पर सैकड़ों घरों से दीपक लेकर आये श्रद्धालु लोगों ने भगवान श्रीराम की आरती की और राम ध्वजा लहराई। इस अवसर पर अयोध्या में कारसेवा के लिये जाने वाले भाजपा व बजरंग दल के नेता उदय अग्रवाल व पूरन सिंह भदौरिया का सम्मान भी किया गया। कांती नगर गायत्री नगर विकास समिति की ओर से आयोजित इस भव्य आयोजन में भारी संख्या में लोगों ने उपस्थिति दर्ज कराई। इससे पूर्व पूरे क्षेत्र में शोभायात्रा निकाली गई। यात्रा का स्थानीय लोगों ने पुष्पवर्षा कर स्वागत किया। इस अवसर पर मुख्य रूप से बजरंग दल के पूर्व संयोजक पूरन सिंह भदौरिया, भाजपा नेता उदय अग्रवाल, सुरेन्द्र प्रधान, राजू सेंगर, विनय अग्रवाल, पार्षद अंजना हरीबाबू शिवहरे, नवीन शर्मा, सुनील मराठा, अजय मिश्रा, अजय शर्मा, बंटी शर्मा, रवि मिश्रा, मनोज अग्रवाल, प्रदीप सिरोही, बाबी खरे, अशोक अग्रवाल आदि उपस्थित थे। बाद में आयोजन में शिरकत करने वालों को प्रसाद वितरण भी किया गया। इस मौके पर देर रात तक भजन भी आयोजित हुये।

स्काउट गाइड परिवार मुरैना ने सुंदरकांड का आयोजन किया

मुरैना। स्काउट गाइड परिवार मुरैना द्वारा डॉक्टर विवेक राठी अध्यक्ष जिला संघ मुरैना के निर्देशन में पुलिस लाइन सिटी कोतवाली मुरैना हनुमान मंदिर पर सुंदरकांड का आयोजन किया गया। सुंदरकांड में मुरैना नगर के एक सैकड़ा से अधिक स्काउट, गाइड, रोवर, रेंजर, स्काउट शिक्षक, गाइड शिक्षिका एवं जिला संघ तथा चंबल संभाग मुरैना के अधिकारी एवं पदाधिकारी गण उपस्थित थे।समारोह में श्रीराम जी की अयोध्या में प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम के उपलक्ष में शानदार कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में जिला संघ मुरैना के अध्यक्ष डॉक्टर विवेक राठी, डॉक्टर रितु राठी समाजसेवी मुरैना, सुखदेव सिंह चौहान सहायक राज्य संगठन आयुक्त स्काउट चंबल संभाग मुरैना, ओपी शर्मा लीडर ट्रेनर स्काउट जिला संघ मुरैना, जेपी कौशिक जिला हेड क्वार्टर कमिश्नर मुरैना, अमृतलाल यादव वरिष्ठ उपाध्यक्ष जिला संघ मुरैना, मुरारी लाल मावई एएलटी कब जिला संघ मुरैना, सीताराम गुर्जर जिला कोषाध्यक्ष जिला संघ मुरैना, शेखर सिंह यादव जिला सचिव मुरैना, वीर सिंह यादव डीओसी स्काउट जिला भिंड, रविंद्र सिंह गुर्जर वरिष्ठ स्काउट शिक्षक मुरैना आदि अधिकारी एवं पदाधिकारी सुंदरकांड कार्यक्रम में उपस्थित थे।स्काउट गाइड परिवार मुरैना द्वारा शानदार कार्यक्रम के आयोजन पर डॉक्टर दीपक पांडे संयुक्त संचालक लोक शिक्षण चंबल संभाग मुरैना, ग्वालियर, अशोक यादव जिला मुख्य आयुक्त मुरैना, एके पाठक जिला शिक्षा अधिकारी एवं जिला कमिश्नर स्काउट जिला मुरैना, सुरेंद्र सिंह यादव वरिष्ठ उपाध्यक्ष संभागीय स्काउट प्रशिक्षण केंद्र चंबल संभाग मुरैना, गिर्राज सिंह यादव जिला हेड क्वार्टर कमिश्नर मुरैना, सुधीर सक्सेना सहायक संचालक शिक्षा एवं सहायक जिला कमिश्नर मुरैना आदि ने बहुत-बहुत बधाई दी है।

कांग्रेस ने जयंती पर नेताजी को याद किया

ग्वालियर । नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती पर आज शहर कांग्रेस ने उन्हें याद कर नमन किया। कांग्रेस ने उनकी प्रतिमा पर पुष्पांजलि सभा आयोजित की। इस मौके पर शहर जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष डॉ. देवेन्द्र शर्मा, विधायक डॉ. सतीश सिकरवार, कार्यवाहक अध्यक्ष महाराज सिंह पटेल, अमर सिंह माहौर, वीर सिंह तोमर, संगठन मंत्री सुरेन्द्र यादव, अवधेश कौरव, सरमन सिंह राय, जेएच जाफरी, मेहबूब खां चेनवाले, सेवादल अध्यक्ष हरेन्द्र सिंह गुर्जर, श्रीमती वीणा भारद्वाज, सतीश मिश्रा, ब्लॉक अध्यक्ष कैलाश चावला, पार्षद अंकित कटठल, सुरेन्द्र साहू, प्रेमा सिंह, राकेश गुप्ता, महेन्द्र सिंह, राजेश भदोरिया, राकेश बाथम, राकेश सिंह परिहार, डॉ. सुहेल कुरैशी, हसन मोहम्मद कुरैशी, कन्हैयालाल चांदवानी, मोनू सोलंकी, बुंदू खान, हेतराम सिलोटिया आदि उपस्थित थे।

संभागीय प्रवक्ता सुबोध दुबे कांग्रेस की प्राथमिक सदस्यता से निलंबित

ग्वालियर। कांग्रेस के संभागीय प्रवक्ता सुबोध दुबे को पार्टी ने प्राथमिक सदस्यता से निलंबित कर दिया है। खबर है कि पार्टी के राष्ट्रीय एवं शीर्ष नेतृत्व के खिलाफ सुबोध दुबे द्वारा अनर्गल और अमर्यादित टिप्पणी की गई थी। यहां बता दें कि सुबोध दुबे विधानसभा चुनाव के दौरान भाजपा से कांग्रेस में आये थे। सुबोध दुबे की यह टिप्पणी शहर जिला कांग्रेस अनुशासन समिति के समक्ष आज सामने आई थी। बैठक में चर्चा कर कार्यवाही करते हुए अपनी रिपोर्ट शहर जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष डॉ. देवेन्द्र शर्मा को सौंपी। शहर जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष डॉ. देवेन्द्र शर्मा ने जिला अनुशासन समिति से प्राप्त रिपोर्ट पर कहा कि सुबोध दुबे पार्टी के एक बहुत ही जिम्मेदार पद पर आसीन है, उनके द्वारा पार्टी नेतृत्व के निर्णय के खिलाफ समाचार पत्रों में अनर्गल बयानबाजी करना बहुत ही गैरजिम्मेदाराना कृत्य है, जिसके चलते सुबोध दुबे को तत्काल पार्टी की प्राथमिक सदस्यता से निलंबित किया गया है और इस बयान पर शीघ्र ही पार्टी के समक्ष अपना रूख स्पष्ट करने को कहा गया हैं।

ग्वालियर में गणतंत्र दिवस पर मंत्री नारायण सिंह करेंगे ध्वजारोहण

ग्वालियर । गौरवशाली गणतंत्र दिवस ग्वालियर जिले में भी 26 जनवरी को हर्षोल्लास, धूमधाम एवं गरिमा के साथ मनाया जायेगा। समारोह की तैयारियाँ अंतिम चरण में है। जिले का मुख्य समारोह 26 जनवरी को प्रातः 9 बजे प्रदेश के सामाजिक न्याय व दिव्यांगजन कल्याण एवं उद्यानिकी व खाद्य प्रसंस्करण मंत्री नारायण सिंह कुशवाह के मुख्य आतिथ्य में होगा। मंत्री कुशवाह इस अवसर पर ध्वजारोहण कर संयुक्त परेड की सलामी लेंगे। रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम, आकर्षक झाँकियाँ व प्रदर्शनी समारोह का मुख्य आकर्षण होंगीं। संयुक्त परेड एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की फायनल रिहर्सल 24 जनवरी को प्रातः 9 बजे एसएएफ मैदान पर होगी। इस अवसर पर कलेक्टर अक्षय कुमार सिंह सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहेंगे। गणतंत्र दिवस के मुख्य समारोह के बाद मुख्य अतिथि मंत्री नारायण सिंह कुशवाह टकसाल स्कूल पहुँचकर बच्चों के साथ मध्यान्ह भोजन कार्यक्रम के तहत सुरूचि भोज में शामिल होंगे।

न्याय को जरूरतमंदों तक पहुँचाने का सशक्त माध्यम है समाधान आपके द्वारः कलेक्टर

ग्वालियर। उच्च न्यायालय खण्डपीठ ग्वालियर की पहल पर शुरू हुआ ÷समाधान आपके द्वार÷ कार्यक्रम न्याय को जरूरतमंदों के दरवाजे तक न्याय पहुँचाने का सशक्त माध्यम बन गया है। इसका लाभ उठाकर हम लोगों के बीच पनप रहे छोटे-छोटे विवादों को सुलझाकर बड़े-बड़े संकट टाल सकते हैं। यह बात कलेक्टर अक्षय कुमार सिंह ने 24 जनवरी को आयोजित होने जा रहे पंचम चरण के समाधान आपके द्वार कार्यक्रम की तैयारियों की समीक्षा के दौरान विभिन्न विभागों के जिला स्तरीय अधिकारी एवं सभी एसडीएम को दिएकलेक्टर सिंह ने कहा कि समाधान आपके द्वार कार्यक्रम के तहत आपसी सुलह-समझौते के आधार पर विवादों का

निपटारा किया जाता है, जिससे दोनों पक्ष संतुष्ट होते हैं। सभी अधिकारी समर्पण भाव से इस अभियान में सहभागी बनकर लोगों की आपसी समस्याओं का निराकरण कराएँ। उन्होंने कहा यदि हम समाज का तनाव दूर करेंगे तो अपने घर का तनाव भी निश्चित रूप से दूर होगा। साथ ही अदालतों व राजस्व न्यायालयों इत्यादि में चलने वाले मामलों पर होने वाला आम लोगों का बड़ा खर्चा भी हम बचा पायेंगे बैठक में जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री विवेक कुमार, अपर कलेक्टर श्रीमती अंजू अरूण कुमार, टीएन सिंह, विभिन्न विभागों के जिला स्तरीय अधिकारी एवं जिले के सभी एसडीएम मौजूद थे। साथ ही जिले की सभी जनपद पंचायतों की सीईओ भी वर्चुअल रूप से इस बैठक से जुड़े।

लाल टिपारा गौ-शाला सहित जिले की आठ गौ-शालाओं को मिली लगभग 2.93 करोड़ की अनुदान राशि

ग्वालियर । आदर्श गौशाला लाल टिपारा सहित जिले में संचालित आठ गौशालाओं को मध्यप्रदेश गौ संवर्धन बोर्ड द्वारा लगभग 2 करोड़ 92 लाख 73 हजार रूपए की अनुदान राशि उपलब्ध कराई गई है। कलेक्टर अक्षय कुमार सिंह की अध्यक्षता में गठित जिला गौपालन एवं पशुधन संवर्धन समिति द्वारा यह धनराशि संबंधित गौशालाओं को गौवंश के भरण-पोषण अर्थात भूसा, चारा व दाना इत्यादि के लिए वितरित कर दी गई है। उप संचालक पशुपालन एवं सचिव जिला गौपालन एवं पशुधन संवर्धन समिति अशोक सिंह तोमर ने बताया कि आदर्श गौशाला लाल टिपारा को 2 करो? 53 लाख 45 हजार से अधिक अनुदान राशि उपलब्ध कराई गई है। इसी तरह सुरभि गौशाला केन्द्रीय जेल को लगभग 9 लाख 14 हजार, केदारधाम गौशाला एवं जैव कृषि अनुसंधान केन्द्र को लगभग 6 लाख 4 हजार, पीपुल्स फॉर एनीमल रायरू को लगभग 4 लाख 18 हजार, गोविंद गौशाला कुलैथ को लगभग 3 लाख 21 हजार, देवनारायण धाम गौसेवा एवं पर्यावरण समिति सिरसा को लगभग 3 लाख 10 हजार, नगर पंचायत पिछोर की गौशाला को लगभग 7 लाख 44 हजार एवं माँ पर्वती गौशाला नगर पंचायत भितरवार को 6 लाख 16 हजार से अधिक अनुदान राशि उपलब्ध कराई गई है। उप संचालक पशुपालन तोमर ने बताया कि इस अनुदान राशि में से 75 प्रतिशत राशि सीधे संबंधित गौशालाओं को भूसा व चारा की व्यवस्था और 25 प्रतिशत राशि दुग्ध संघ को इन गौशालाओं को दाना उपलब्ध कराने के लिये दी गई है। यह अनुदान राशि 155 दिनों की व्यवस्था के लिए उपलब्ध कराई गई है।

केन्द्रीय मंत्री सिंधिया 24 जनवरी को ग्वालियर-चंबल संभाग के प्रवास पर रहेंगे

ग्वालियर। केन्द्रीय नागरिक उड्डयन एवं इस्पात मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया 24 जनवरी को ग्वालियर-चंबल संभाग के प्रवास पर रहेंगे। सिंधिया इस दिन अपरान्ह लगभग 3.20 बजे हजीरा पहुँचकर विकसित भारत संकल्प यात्रा के तहत आयोजित शिविर में भाग लेंगे। साथ ही जनसभा को संबोधित करेंगे। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार केन्द्रीय मंत्री सिंधिया 24 जनवरी को प्रातः 9 बजे ग्वालियर से सबलगढ़ के लिये रवाना होंगे और वहाँ पहुँचकर विकसित भारत संकल्प यात्रा और जनसभा में शामिल होंगे। इसके बाद दोपहर 1.20 बजे सुमावली पहुँचकर जनसभा और विकसित भारत संकल्प यात्रा में सम्मिलित होंगे। इस कार्यक्रम के बाद केन्द्रीय मंत्री सिंधिया ग्वालियर आयेंगे और हजीरा पर विकसित भारत संकल्प यात्रा के तहत आयोजित शिविर में शामिल होंगे और जनसभा को संबोधित करेंगे। केन्द्रीय मंत्री सिंधिया जनसभा के बाद अपरान्ह 4.45 बजे ग्वालियर एयरपोर्ट का भ्रमण करने पहुँचेंगे और सायंकाल 6 बजे विमान द्वारा नईदिल्ली के लिये प्रस्थान करेंगे।

अगर हमें संस्कृति बचाना है तो संस्कृत पढ़ना होगा: सांसद शेजवलकर

ग्वालियर। भवभूति संस्कृत के महान कवि और नाटककार के साथ ही उदभट विद्वान थे। उनके नाटकों को महाकवि कालिदास के नाटकों के समकक्ष माना जाता है। संस्कृत एक ऐसी भाषा है जो सुनने में मीठी लगती है। हमारी संस्कृति पुरानी संस्कृति है। इसकी विधाओं से परिचित होना है तो संस्कृत पढ़ना होगा।यह बात मंगलवार को जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर के गालव सभागार में चल रहे पांच दिवसीय अखिल भारतीय महाकवि भवभूति समारोह के चतुर्थ दिवस पर सांसद विवेक नारायण शेजवलकर ने बतौर मुख्य अतिथि कही।कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे जेयू के कुलाधिसचिव प्रो.डीएन गोस्वामी ने कहा कि जितने भी हमारे ग्रंथ है उनके अनुवाद को हम पढ़ते हैं। यदि हमें संस्कृत का ज्ञान होगा तो हम उसको मूल रूप में पढ़ सकते हैं इसके लिए संस्कृत अनिवार्य है। उन्होंने कहा कि देश की संस्कृति की रक्षा करना है तो भाषा को संरक्षित करना होगा। विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित अरूण सिंह चौहान ने कहा कि जो पौधे लगाए गए थे वो अब वृक्ष का रूप ले रहे हैं।छोटा छोटा प्रयास ही व्यक्ति को एक बड़े लक्ष्य प्राप्ति की ओर ले जाता है। सारस्वत अतिथि प्रो.विजयकुमार सीजी ने कहा कि कालिदास ने जो रामकथा को छोड़ा भवभूति ने उसी कथा को पूरा किया। डॉ.डीएस चंदेल ने कहा कि भवभूति द्वारा लिखे नाटक अपने रहस्य और सजीवता के चित्रण के लिए जाने जाते है । विद्वानों का मानना है कि भवभूति के लिए नाटक कालिदास के नाटकों के समकक्ष है।महाकवि भवभूति शोध एवं शिक्षा समिति के अध्यक्ष डॉ.बालकृष्ण शर्मा ने शोध संगोष्ठी के बारे में बताया।कालिदास संस्कृत अकादमी उज्जैन के निदेशक डॉ.गोविंद गंधे के स्वागत भाषण के साथ कार्यक्रम की शुरुआत हुई।कार्यक्रम में अतिथियों को शॉल श्रीफल भेंट कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के दौरान अतिथियों द्वारा चिंतनसंचय नामक पुस्तक का विमोचन किया गया।इसी क्रम में डॉ.डीएस चंदेल को सारस्वत सम्मान से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में 20 से अधिक शोध-पत्रों का वाचन किया गया।कार्यक्रम का संचालन डॉ.विकास शुक्ला एवं आभार प्रो.जेएन गौतम ने व्यक्त किया।इस मौके पर प्रो.एसके द्विवेदी, डॉ.अशोक आनंद, डॉ.नीतेश शर्मा, डॉ.कृष्णा जैन,डॉ.श्यामसुंदर पाराशर, गिर्राज गुप्ता,डॉ.राजू राठौर, प्रेमशंकर अवस्थी,डॉ.राखि वशिष्ठ,डॉ.विकास शुक्ला,टोटन मोईती,शकील कुरैशी, संजय जादौन सहित छात्र एवं छात्राएं उपस्थित रहे। समारोह में 24 जनवरी को समापन सत्र में महापौर शोभा सिकरवार द्वारा विभिन्न क्षेत्रों से पधारे संस्कृत के विद्वतजनों को सम्मानित किया जाएगा।शुभारंभ सत्र के बाद हुआ संस्कृत में नाटक का मंचन- शुभारंभ सत्र के बाद संस्कृत नाटक कलाकारों ने महावीर चरित नाटक की प्रस्तुति दी,जिसे महाकवि भवभूति ने लिखा है। निर्देशक डॉ.हिमांशु द्विवेदी हैं।नाटक की पटकथा रामायण पर आधारित है। नाटक का आरंभ विश्वामित्र के यज्ञ महोत्सव से होता है।यहां जनक के छोटे भाई कुशध्वज उर्मिला और सीता के साथ आते हैं, तभी राम लक्ष्मण और विश्वामित्र से उनकी भेंट होती है। यहीं पर राम और सीता के बीच आकर्षण और प्रेम का भाव पैदा होता है। तदुपरांत सर्वमाय नाम का राक्षस महोत्सव में आता है, जिसे मल्लवान ने भेजा है। वह रावण का पत्र राजा और विश्वामित्र को पड़कर सुनाता है, जिसमें रावण सीता से विवाह संबंधी प्रस्ताव रखता है। इन्हीं प्रसंगों के बीच राम का अहिल्या का तारण करना, मारीच, ताड़का और सुबाहु का वध करना, वृतांत भी होते हैं। यह सब देख विश्वामित्र राम को दिव्यास्त्र प्रदान करते हैं। विश्वामित्र की आज्ञा से शिव का धनुष मंगवाया जाता है और राम उसको तोड़ते हैं।राम का सीता से और उर्मिला का लक्ष्मण से विवाह होता है। तभी विश्वामित्र भी यह प्रस्ताव रखते हैं कि श्रुतकीर्ति और मांडवी का विवाह भी भरत और शत्रुघ्न से कराया जाना चाहिए, ऐसा होता भी है। यह सब देख कर सर्वमाय नाम का राक्षस क्रोधित होता है और कहता है यह सब गलत हो रहा है अन्याय हो रहा है। मैं इसकी सूचना माल्यवान को देता हूं। नाटक की कहानी आगे बढ़ती है और माल्यवान और सुपर्णखा षड़यंत्र करते हैं। वे परशुराम को भड़काने का निश्चय करते हैं। जिससे परशुराम राम को भस्म कर दे मार दें, परंतु नाटकीय घटनाक्रम में राम अपनी सरलता सौमिता मधुरता से परशुराम का दिल जीत लेते हैं। परशुराम प्रसन्न होकर अपना धनुष और दिव्यास्त्र राम को प्रदान करते हैं।

बजरंग भक्त मंडल ने मनाया श्री राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव

पाठ,501 दीपकों को प्रज्वलित कर दीपोत्सव एवं 1100 लड्डुओं का वितरण, फूलबंगला एवं भंडारा श्री नरसिंह मंदिर, ढोली बुआ का पुल, बजरिया लश्कर ग्वालियर पर किया गया।कार्यक्रम की सूचना देते हुए मंडल के अध्यक्ष आशीष मंगल ने बताया कि 500 वर्षों के लंबे इंतजार के बाद हम सबके आराध्य प्रभु श्री राम के पुनः अयोध्या में आगमन पर इस उत्सव को बहुत धूम धाम से मनाया गया।मंडल ने प्राण प्रतिष्ठा से पूर्व रविवार को 500 किलो हरे चारे की गौभोग सेवा की। मंडल की ये गौसेवा प्रति सप्ताह निरंतर लगभग 5 वर्षों से की जा रही है। कार्यक्रम में मंडल अध्यक्ष आशीष मंगल,सचिव राकेश मंगल,कार्यक्रम संयोजक एवं उपाध्यक्ष अमन गर्ग,अभिमन्यु सिंह चौहान, विशाल अग्रवाल, नमन अवस्थी, पुनेश पाल,रामकिशोर मंगल,चमन गर्ग आदि सभी सदस्य उपस्थित थे

स्वामी, प्रकाशन, मुद्रक एवं संपादक भरत सिंह चौहान द्वारा वॉइस ऑफ मध्यांचल मीडिया नेटवर्क प्राइवेट लिमिटेड 101 वैष्णोपुरम एबी रोड बिरलानगर ग्वालियर म.प्र. 474004 से मुद्रीत करा कर दीपू इलेक्ट्रॉनिक हनुमान मंदिर के पास भिण्ड रोड गोले का मंदिर जिला ग्वालियर मध्यप्रदेश 474005 से प्रकाशित। भरत सिंह चौहान पी. आर. बी. एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार। E-mail : Pushpanjalitoday@gmail.com 0751-4050784, Mob.:8269307478